



विक्रम संवत् २०८३ • आश्विन (क्वॉर)/कार्तिक (०८) • ०१ अक्टूबर २०२६ • मूल्य: २३ रु.

चरैवेति



**बार-बार जनादेश
उपलब्धियों का
परिचायक**





■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गणेश चतुर्थी पर गणपति पूजन किया।



■ भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने जन्माष्टमी पर इस्कॉन मंदिर में पूजा-अर्चना की।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन के दौरान रूस के राष्ट्रपति श्री व्लादिमीर पुतिन के साथ बैठक की।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने पुरस्कार पाने वाले शिक्षकों से बातचीत की।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी किर्गिस्तान के बिश्केक में 26वें SCO शिखर सम्मेलन में शामिल हुए।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ब्रिक्स बिजनेस फोरम 2026 में ब्रिक्स नेताओं के साथ।



■ भारत में रूसी संघ के राजदूत श्री डेनिस अलीपोव ने भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी से मुलाकात की।



■ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी से मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सौजन्य भेंट की।

अनुक्रमणिका

» संपादकीय • संजय गोविन्द खोचे

04

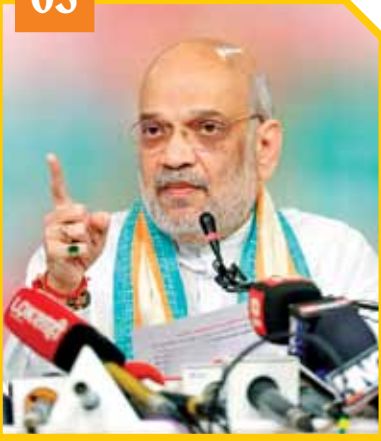
■ मोदी जी अपराजित योद्धा

» कवर स्टोरी •

05

■ बार-बार जनादेश उपलब्धियों का परिचायक - अमित शाह

05



■ सेवा के 25 साल	07
» प्रधानमंत्री ने बढ़ायी भारत की प्रतिष्ठा - डॉ. मोहन यादव	
» जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाए - हेमंत खण्डेलवाल	
» समग्र विकास से 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की सिद्धि-अखिलेश जैन	
» विकसित भारत@2047 के अग्रदूत मोदी जी-योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया	
■ कोर युग की वैदक	12
» संगठन को मजबूत बनाना है- हेमंत खण्डेलवाल	
■ युवा संवाद कार्यक्रम	13
» युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण - निरतिन नवीन	
■ सेवा संकल्प अभियान	15
» राम घाट पर "आशीर्वाद का दीया" प्रज्वलित	
» ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलेगी - हेमंत खण्डेलवाल	
■ आलेख	17
» परमार्थ को समर्पित 25 वर्ष	
» संकल्प से सिद्धि की यात्रा	
■ सेवा संकल्प अभियान	19
» "सेवा संकल्प अभियान" सफलतापूर्वक जारी है- हेमंत खण्डेलवाल	
» ऐसा कार्य करें कि कार्यकर्ता याद करें - बिल्व कुमार देव	
» योजनाएं और उपलब्धियाँ जनता तक पहुंचाए - श्रीमती रेखा वर्मा	
» कार्यकर्ता ही भाजपा की असली ताकत - चंद्रशेखर	
■ जल, जन और सेवा संकल्प यात्रा	21
» रामराज्य की संकल्पना होगी साकार - डॉ. मोहन यादव	
» दुनिया का नेतृत्व करेगा भारत - हेमंत खण्डेलवाल	
» भारत की प्रतिष्ठा नई ऊंचाइयों पर - लाल सिंह आर्य	
» मोदी जी ने योजनाओं से बढ़ता जीवन - विष्णुदत्त शर्मा	
» सेवा यात्रा से सेवा और राष्ट्र निर्माण का संदेश	
■ मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा, पीएम ई-वस सेवा	23
» 15 हजार बसों का होगा विस्तार - डॉ. मोहन यादव	
» मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा होगी लाभप्रद - निरतिन गडकरी	
» परिवहन सेवा की शुरूआत ऐतिहासिक - हेमंत खण्डेलवाल	
■ कविता	25
» जीवन बीत चला	
■ सिंहर 2028	26
» विकास हेतु मुख्यमंत्री ने पेश की मिसाल	
» मुख्यमंत्री ने की विकास की पहल - हेमंत खण्डेलवाल	
■ प्रसंग में स्वागती-नारायण मुद्दि का लोकार्पण	27
» भारत व प्रसंग संकेतों की नव ऊर्जा	
■ पं. दीनदयाल उपाध्याय जयंती	28
» स्वदेशी का बीज आत्मनिर्भर भारत का वृक्ष बनेगा - डॉ. मोहन यादव	
» पं. दीनदयाल जी महान राष्ट्रनायक - हेमंत खण्डेलवाल	
■ स्वामित्व योजना	29
» निःशुल्क पंजीकरण प्रक्रिया-निरतिन नवीन	
» 50 लाख से अधिक संपत्तियों की होगी निःशुल्क रजिस्ट्री - डॉ. मोहन यादव	
■ पेश काफ़िल	30
» विपक्ष की हताशा उजागर - डॉ. मोहन यादव	
» सवैधानिक संस्थाओं का सम्मान आवश्यक - हेमंत खण्डेलवाल	
■ न्यूनतम समर्थन मूल्य वृद्धि	32
» उत्पादन लागत पर डेढ़ गुना एमएसपी	
■ 20वां सेजम्बर मेला	33
» विकसित भारत में युवाओं की बड़ी भूमिका - नरेन्द्र मोदी	
■ मन की बात	35
» स्वच्छता - बापू के प्रति सुंदर श्रद्धांजलि	
» जनप्रयासों को मिला राष्ट्रीय मंच - डॉ. मोहन यादव	
» युवा पीढ़ी में जागरूकता बढ़े - हेमंत खण्डेलवाल	
■ जयंती	40
» त्याग एवं समर्पण की प्रतिभूर्ति राजमाता विजया राजे सिंधिया	
■ विचार प्रवाह	41
» संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है	

■ मुख्य व्रत-त्यौहार

3. महालक्ष्मी, जिऊतिया व्रत 6. इंदिरा एकादशी व्रत 8. प्रदोष व्रत, शिव चतुर्दशी व्रत 10. स्ना. दा. श्रा. पितृमोक्ष अमावस 11. शारदीय नवरात्रारंभ, बैठकी 12. चन्द्रदर्शन 14. विनायकी चतुर्थी व्रत 15. उपांग ललिता व्रत 17. सरस्वती आवन्ह 18. सरस्वती, महाष्टमी निशा पूजा 19. दुर्गाष्टमी, दुर्गा नवमी व्रत, हवन, जवारि विर्सजन 20. महानवमी, विजयादशमी 21. विजयादशमी 22. पापांकुशा एकादशी व्रत 23. प्रदोष व्रत 25. शरद पूर्णिमा, कोजागरी व्रत 26. शरदोत्सव, स्ना. दा. पूर्णिमा 29. करवा चौथ, गणेश चतुर्थी व्रत 31. स्कन्द षष्ठी व्रत

■ मुख्य जयंती-दिवस

1. रायबहादुर डॉ. हीरालाल जयंती 2. म. गाँधी, लालबहादुर शास्त्री जयंती, अहिंसा दिवस 5. विश्व आवास दिवस 9. म. प्राणनाथ प्रगटन महोत्सव 10. रा. डाक,अं. मानसिक स्वास्थ्य दिवस 11. नानाजी देशमुख जयंती 21. राष्ट्रीय स्वयंसेवक स्थापना दिवस, पुलिस स्मृति दिवस 25. म. दमघोष, कृपालु महाराज जयंती 26. करमपरब, म. अजमीद, गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती, टेकचंद महाराज समाधि दिवस, संत सिंगाजी मेला (निमाड़)



वर्ष-58, अंक : 08, भोपाल, अक्टूबर 2026



हमारे प्रेरणास्रोत

पं. दीनदयाल उपाध्याय

ध्येय बोध

“धर्म जीवन के सभी पहलुओं से संबंधित एक बहुत व्यापक अवधारणा है जो समाज को संबल और स्थिरता प्रदान करती है।”

- पं. दीनदयाल उपाध्याय

सम्पादक

मुद्रक एवं प्रकाशक
संजय गोविंद खोचे*

सहायक सम्पादक

पं. सलिल मालवीय

व्यवस्थापक

योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतरिया

पं. दीनदयाल विचार प्रकाशन म.प्र. के लिये
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय गोविंद खोचे द्वारा
पं. दीनदयाल परिसर, ई-2, अरेरा कालोनी,
भोपाल-462016 से प्रकाशित

एवं एम. पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेस-II, गौतमबुद्ध नगर,
नोएडा - 201 305 से मुद्रित.

संपादकीय पता

पं. दीनदयाल परिसर,
ई-2, अरेरा कालोनी, भोपाल- 462016
e-mail:charevetibpl@gmail.com
web site:www.charaiveti.org

मूल्य - तेईस रुपये

*समाचार चयन के लिए पी.आर.वी.एक्ट के तहत जिम्मेदार



मोदी जी अपराजित योद्धा

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का शासन प्रमुख की भूमिका में 25 वर्षों का कार्यकाल पूरा हो रहा है। गुजरात के मुख्यमंत्री से देश के प्रधानमंत्री तक का सफर कई नये मापदंडों को बना गया। यूँ तो विश्लेषकों के पास विश्लेषण करने के लिए एक लम्बे सफर का लेखा-जोखा सामने है, पर आलोचकों के पास स्वार्थ की पूर्ति में बाधा के दर्द के अलावा और कुछ भी नहीं है।

शासनकाल का विश्लेषण अवश्य होना चाहिए, लोकतंत्र में मतदाता ही सर्वोपरि है, मतदाता के पास उसके निर्णय की समीक्षा करने के लिए पर्याप्त जानकारी उपलब्ध होना आवश्यक है। जब विश्लेषण होगा तभी तो पक्ष-विपक्ष अपने तर्क रख पायेंगे और मतदाता को विश्लेषण करने में सुविधा होगी।

समस्या है कि विश्लेषण प्रारम्भ कहाँ से किया जावे? 25 वर्षों में मोदी जी ने हर समाज, हर वर्ग, हर क्षेत्र में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है फिर महत्वपूर्ण समस्या यह है कि आलोचकों और समर्थकों दोनों के पास 70 वर्षों के शासन की उपलब्धियाँ व 25 वर्षों के शासन की उपलब्धियों का तुलनात्मक विश्लेषण उपलब्ध है, यह तुलनात्मक विश्लेषण ही वह दस्तावेज है जो यह सिद्ध करता है कि मोदी जी के 25 वर्षों के शासनकाल में भारत ने क्या पाया।

25 वर्षों से अपराजित योद्धा- अपने आप में सबसे बड़ा सबूत है जो यह सिद्ध करता है कि मोदी जी के कार्यकाल की उपलब्धियों से जनता न केवल संतुष्ट है बल्कि जनता में मोदी जी के लिए अगाध श्रद्धा, प्रेम व विश्वास है।

मोदी जी 25 वर्षों के शासनकाल में जनता का सरकार पर खोया विश्वास फिर से जगाने में सफल सिद्ध हो गये हैं। शासन केवल कुछ लोगों के उपभोग, शोषण व दोहन का माध्यम नहीं बल्कि सही अर्थों में जनता की सेवा का माध्यम बन चुका है।

भारत को विश्व की बारहवीं अर्थव्यवस्था से तीसरी अर्थव्यवस्था बनाना कोई जादुई खेल नहीं, कठोर तपस्या, मेहनत, दूरदर्शिता, ईमानदारी, संविधान की भावना के सम्मान के साथ, सबका साथ-सबका विकास-सबका विश्वास -सबका प्रयास के साथ भी पूरा किया जा सकता है- मोदी जी ने 25 वर्षों में सिद्ध कर

के दिखा दिया।

भारत के हर घर में बिजली पहुँचाई जा सकती है, हर घर पेयजल उपलब्ध करवाया जा सकता है, हर घर में शौचालय बनवाया जा सकता है, भारत का आखरी गाँव को पहला गाँव भी माना जा सकता है और विकास को पहले गाँव से भी प्रारम्भ किया जा सकता है। आयात पर निर्भर देश को निर्यातक देश में भी बदला जा सकता है। भारत को विकसित भारत@2047 का लक्ष्य निर्धारित करके भविष्य के भारत की आवश्यकता अनुरूप ढाला जा सकता है। कोरोना जैसी भीषण महामारी का न केवल सामने से मुकाबला किया जा सकता है बल्कि सम्पूर्ण विश्व के लिए आशा की किरण भी बन कर भारत सामने आ सकता है। वैकल्पिक ऊर्जा के स्रोतों को भी भारत खोज सकता है। वैश्विक अस्थिरता में भी भारत मजबूत बन कर बाहर आ सकता है- जैसी तमाम, अनगिनत, अपठित एवं अकल्पनीय समस्याएँ भी मोदी जी के गंभीर नेतृत्व को किंचित भी विचलित नहीं कर पाती हैं।

ऐसा नेतृत्व जिसने प्रधानमंत्री पद की गरिमा को न केवल गौरव प्रदान किया बल्कि भविष्य के प्रधानमंत्रियों के लिए एक नया आयाम स्थापित करने में सफलता पाई है।

निश्चित ही मोदी जी के नेतृत्व में भारत की शिखर की यात्रा प्रारम्भ हो चुकी है। अब 140 करोड़ भारतीयों का कर्तव्य है मोदी जी की अपेक्षा अनुरूप देश की प्रगति में अपना योगदान प्रदान करें तथा मोदी जी भारत का स्वर्णिम काल वापस लौटाने में सफल हों, भारत का भविष्य सुनहरा हो तथा पूर्वजों से प्राप्त भारत को विकसित भारत बना कर आने वाली पीढ़ियों को सौंप कर और बेहतर भारत बनाने की प्रेरणा प्रदान करें।

भारतीय जनता पार्टी व एनडीए के सहयोगी दलों ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस को सेवा दिवस के रूप में मनाते हुए 'सेवा संकल्प अभियान' की शुरुआत की है। यह अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रसेवा, जनकल्याण और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के संकल्प से प्रेरित है। उनके सार्वजनिक जीवन की इस लंबी यात्रा ने सेवा और समर्पण

को जनभागीदारी से जोड़ने का कार्य किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर समाज में आए बदलाव, लोगों के जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन और देश के प्रति लोगों के बढ़े हुए आत्मविश्वास को देखते हुए हर वर्ग और हर परिवार के भारतवासी ने मिलकर 'आशीर्वाद का दीया' जलाया। यह दीप केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति देशवासियों के स्नेह, शुभकामनाओं और आशीर्वाद की अभिव्यक्ति है।

भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव ने बड़े प्रयासों से कई आयामों पर काम करते हुए 55 जिलों के 41,568 गांवों में करीब 68,47,000 भूखंडों का सर्वे किया है। निःशुल्क रजिस्ट्री के माध्यम से 50 लाख लोगों को उनका अधिकार देने की शुरुआत की, जो प्रशंसनीय और अभिनंदनीय है।

मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा शुरू की गई। इस सेवा से शहरी-ग्रामीण क्षेत्रों में बस कनेक्टिविटी को मजबूत किया जाएगा।

लोकतंत्र में जनता सबसे बड़ी निर्णायक शक्ति है। राजनीतिक दलों के आरोप-प्रत्यारोप के बीच जनता सभी घटनाक्रमों को नजदीक से देख रही है। विपक्ष की भूमिका सरकार से सवाल पूछने की है, लेकिन साथ ही लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा और संवैधानिक व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने की जिम्मेदारी भी विपक्ष की है। भाजपा, जनसंघ से लेकर आज तक देश और जनहित में सदैव लड़ती रही। आपातकाल के खिलाफ भी भाजपा खड़ी रही। कांग्रेस सत्ता से बाहर रहने का कारण बौखलाई हुई है, इसलिए वे लगातार निंदनीय कृत्य कर रही है। जनता उनके झूठ को बहुत करीब से देख रही है, अब उनका झूठ फिर से बेनकाब हुआ है। लेकिन जिस तरह नेता प्रतिपक्ष संवैधानिक संस्थाओं पर हमेशा प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं वह लगातार लोकतंत्र को कमजोर कर रहे हैं। ■

संजय गोविन्द खोचे

(संजय गोविन्द खोचे)

सम्पादक

बार-बार जनादेश उपलब्धियों का परिचायक - अमित शाह

- 17 सितंबर को मोदी जी का जन्मदिन है, 7 अक्टूबर 2026 को मोदी जी के मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री के रूप में कार्यकाल के 25 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं।
- अभियान का मंत्र है 'जनसेवा ही प्रभुसेवा' और लक्ष्य है जनभागीदारी से 2047 में विकसित भारत का निर्माण, हमें सेवा को संस्कार में और संगठन को जनकल्याण का माध्यम बनाना है।
- मोदी जी ने देश को पॉलिटी पैरालिसिस, गठबंधन की मजबूरियों और कमजोर निर्णय क्षमता से जूझती सरकारों से मुक्ति दिलाई।
- आज NDA का कुनबा 22 राज्यों में सत्ता में है और कई सरकारों को लगातार तीन बार जनादेश मिला है।
- लोकतंत्र में परफॉर्मेंस और डिलीवरी पर मिला जनादेश ही सबसे बड़ा प्रमाणपत्र होता है, और जनता ने राज्य से केंद्र तक 25 वर्षों तक मोदी जी को यह जनादेश दिया है।



प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से स्वयं को देश की जनता के सामने 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया। मोदी जी ने संविधान से प्राप्त शक्तियों का उपयोग गरीबों का जीवन स्तर उठाने, भारत को प्रमुख अर्थव्यवस्था बनाने, देश को सुरक्षित करने, आंतरिक सुरक्षा से जुड़े दशकों पुराने मुद्दों का समाधान करने और 140 करोड़ देशवासियों में 2047 तक विकसित भारत की रचना का दृढ़ संकल्प पैदा करने के लिए किया है।

भारतीय जनता पार्टी, NDA के सहयोगी दल, अनेक स्वयंसेवी संगठन और देश की जनता मिलकर 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक देशभर में सेवा संकल्प अभियान चलाएंगे।

17 सितंबर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का जन्मदिन है और इस वर्ष यह अवसर विशेष है क्योंकि मोदी जी मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के रूप में जनसेवा के 25 वर्ष पूरे कर रहे हैं।

देश में बहुत कम ऐसे नेता हुए हैं जिन्होंने राज्य के मुख्यमंत्री और देश के प्रधानमंत्री के रूप में लगातार 25 वर्षों तक जनसेवा की हो। लगातार चुनाव जीतकर अपने नेतृत्व में जनता के विश्वास को बार-बार स्थापित करना और 25 वर्षों तक राज्य एवं राष्ट्र के कल्याण के यज्ञ

को अर्हनिश जारी रखना बहुत बड़ी उपलब्धि है। इसी अवसर पर भाजपा और NDA के सभी घटक दलों ने एक महीने तक राष्ट्रव्यापी सेवा संकल्प अभियान चलाने का निर्णय लिया है। यह अभियान राज्य से लेकर जिले, लोकसभा और विधानसभा क्षेत्र तथा बूथ स्तर तक चलेगा।

प्रधानमंत्री बनने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी जी ने लाल किले की प्राचीर से स्वयं को देश की जनता के सामने 'प्रधान सेवक' के रूप में प्रस्तुत किया। मोदी जी ने संविधान से प्राप्त शक्तियों का उपयोग गरीबों का जीवन स्तर उठाने, भारत को प्रमुख अर्थव्यवस्था बनाने, देश को सुरक्षित करने, आंतरिक सुरक्षा से जुड़े दशकों पुराने मुद्दों का समाधान करने और 140 करोड़ देशवासियों में 2047 तक विकसित भारत की रचना का दृढ़

संकल्प पैदा करने के लिए किया है। आजादी के बाद बहुत कम नेताओं ने इस प्रकार देश का नेतृत्व किया है।

प्रधानमंत्री मोदी जी ने सेवा के अपने संस्कार और शासन दर्शन को गुरु नानक देव जी के सेवा के संदेश और समर्थ रामदास स्वामी के विचारों के माध्यम से देश के सामने रखा है। इसी संस्कार के साथ भाजपा और उसके सहयोगी दल सेवा संकल्प अभियान चलाएंगे।

अभियान का मंत्र 'जन सेवा ही प्रभु सेवा' और लक्ष्य जनभागीदारी से 2047 में विकसित भारत की रचना करना है। इसके माध्यम से मोदी जी की 25 वर्षों की यात्रा, उसके उद्देश्यों, सिद्धियों और भविष्य के संकल्पों को देश की जनता तक पहुंचाया जाएगा।

अभियान का उद्देश्य सेवा को संस्कार में परिवर्तित करना और संगठन को जनभागीदारी एवं जनकल्याण का माध्यम बनाना है। अभियान के अंतर्गत 12 प्रमुख प्रकार के कार्यक्रम देशभर में बूथ से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक आयोजित किए जाएंगे। अभियान में सेवा दिवस के अंतर्गत रक्तदान और जनता द्वारा मोदी जी पर 25 वर्षों तक जताए गए भरोसे के प्रति आभार व्यक्त करने जैसे कार्यक्रम होंगे। बच्चों, किशोरों और युवाओं के लिए 'मेरे सपनों का भारत' राष्ट्रव्यापी चित्रकला और भाषण प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी। 'नमो सेवा की अनकही कहानियाँ' स्थानीय भाषाओं में संगीतमय नाट्य प्रस्तुतियों के माध्यम से गांव-गांव तक पहुंचाई जाएंगी।

अभियान के अंतर्गत आंगनवाड़ी सम्मान, मातृ संवाद और सरकारी योजनाओं के लाभार्थियों के अनुभवों को जनता से साझा करने के कार्यक्रम भी होंगे। वडनगर से वाराणसी और वाराणसी से वडनगर तक सेवा यात्रा निकाली जाएगी। सेवा सेतु अभियान के माध्यम से ब्लॉक और तहसील स्तर पर केंद्र और राज्य सरकारों की योजनाओं की शत-प्रतिशत संतुष्टि का प्रयास होगा, ताकि आधार, राशन कार्ड और अन्य सरकारी योजनाओं से वंचित पात्र लोगों तक उनका लाभ पहुंच सके।

'सेवा के रंग, राष्ट्र के संग', 'सेवा फर्स्ट इनोवेशन चैलेंज' और 'सुशासन सेवा संवाद' जैसे कार्यक्रम भी आयोजित होंगे। पंचायत से संसद तक चुने हुए प्रतिनिधियों के देश के चार हिस्सों में महाकुंभ आयोजित किए जाएंगे।

इन 25 वर्षों में गुजरात और देश में अनेक युगांतकारी परिवर्तन आए हैं। 2014 से पहले देश की राजनीति भ्रष्टाचार, जातिवाद और परिवारवाद जैसी समस्याओं से पीड़ित थी, जबकि अब देश की राजनीति परफॉर्मेंस की दिशा में आगे बढ़ी है।

देश ने पहली बार मजबूत विदेश नीति का परिचय देखा है। भारत की रक्षा नीति हो या विदेश नीति, उसका आधार 'भारत प्रथम' है और भारत का हित सर्वोपरि है। भारत की अर्थव्यवस्था Fragile Five से निकलकर दुनिया की शीर्ष पांच अर्थव्यवस्थाओं में पहुंची है और पहली तिमाही में 7.8 प्रतिशत GDP वृद्धि के साथ भारत बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में सबसे तेजी से आगे बढ़ रहा है।

आतंकवादी हमलों में भारत के जवानों और नागरिकों के हताहत होने पर करारा जवाब देने की मजबूत नीति से भारत ने पूरी दुनिया को परिचित कराया है। धारा 370, नक्सलवाद और

नॉर्थ ईस्ट करीब पांच दशकों से देश की आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बने हुए थे और पिछले 12 वर्षों में देश इन समस्याओं से मुक्ति की दिशा में निर्णायक रूप से आगे बढ़ा है।

आज देश के 140 करोड़ नागरिक, विशेषकर युवा, इस आत्मविश्वास और संकल्प के साथ आगे बढ़ रहे हैं कि 2047 में भारत विश्व में हर क्षेत्र में नंबर वन और एक विकसित राष्ट्र बनेगा। 25 करोड़ लोगों को बहुआयामी गरीबी से बाहर निकाला गया है। करोड़ों लोगों को बैंक खाते, मुफ्त उपचार, नल से जल, PM-KISAN, शौचालय, उज्ज्वला गैस कनेक्शन, आवास और बिजली जैसी सुविधाएं मिली हैं।

GST ने एक देश, एक टैक्स के सपने को साकार किया और JAM Trinity—जनधन, आधार और मोबाइल—ने डिजिटल शासन की मजबूत नींव रखी। बैंकिंग सुधारों से भारत NPA संकट से बाहर आया और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक मुनाफे की स्थिति में पहुंचे हैं। PLI और Make in India ने भारत को वैश्विक निर्माण और निर्यात के विश्वसनीय केंद्र के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

सड़क, रेलवे, हवाई अड्डे, मेट्रो, बंदरगाह, जलमार्ग और डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के निर्माण की गति तेजी से बढ़ी है। Dedicated Freight Corridor, वंदे भारत ट्रेन, एक्सप्रेसवे और मेट्रो नेटवर्क ने भारत के इंफ्रास्ट्रक्चर को नए स्केल पर पहुंचाया है। हवाई अड्डों की संख्या करीब 75 से बढ़कर लगभग 150 हुई है और Digital India तथा Startup India ने युवाओं के लिए नए अवसर खोले हैं।

धारा 370 और 35A को हटाना कभी असंभव माना जाता था, लेकिन बिना रक्त की एक बूंद गिरे और बिना एक भी गोली चले धारा 370 अब अतीत बन चुकी है और कश्मीर पूरी तरह भारत के साथ जुड़ा है। तीन तलाक की समाप्ति। भाजपा-NDA शासित 21 राज्यों में 2029 से पहले Uniform Civil Code (UCC) लागू किया जाएगा।

भारतीय न्याय संहिता ने देश के Criminal Justice System को भारतीय आधार देने का काम किया है और ऐसी व्यवस्था खड़ी की जा रही है जिसमें तीन वर्षों में न्याय मिल सके। पांच दशक पुराने नक्सलवाद को समाप्त करने की दिशा में निर्णायक सफलता मिली है और उत्तर-पूर्व में 14 से अधिक शांति समझौतों तथा 9,000 से अधिक लोगों के आत्मसमर्पण के माध्यम से क्षेत्र को विकास के रास्ते पर आगे

बढ़ाया गया है। सर्जिकल स्ट्राइक, एयर स्ट्राइक और ऑपरेशन सिंदूर ने आतंकवाद के प्रति Zero Tolerance की नीति स्थापित की है। नारी शक्ति वंदन अधिनियम के माध्यम से संसद और विधानमंडलों में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण तथा सेना, पुलिस, विज्ञान, स्टार्टअप, ड्रोन और खेल सहित विभिन्न क्षेत्रों में महिलाओं के लिए अवसर बढ़े हैं।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर, काशी विश्वनाथ धाम, महाकाल लोक और केदारनाथ के पुनर्विकास जैसे आस्था के केंद्रों से जुड़े कार्यों को सफलतापूर्वक जमीन पर उतारा गया है। नए संसद भवन में सेंगोल की स्थापना ने भारतीय लोकतांत्रिक चेतना के भारतीयकरण का काम किया है। चंद्रयान-3 और आदित्य-L 1 जैसी उपलब्धियाँ अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत की बढ़ती क्षमता की परिचायक हैं।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने देश को Policy Paralysis, गठबंधन की मजबूरियों और कमजोर निर्णय क्षमता से जूझती सरकारों से मुक्ति दिलाई है। प्रधानमंत्री मोदी जी स्वयं राज्यों के साथ बैठक कर वर्षों से लंबित परियोजनाओं की समीक्षा करते हैं और 40-40 वर्षों से अटकी परियोजनाओं को पूरा कर जमीन पर उतारने का काम किया गया है।

पिछले 12 वर्षों में दुनिया में भारत की स्वीकार्यता और प्रतिष्ठा बहुत बढ़ी है। आज विश्व की किसी भी बड़ी समस्या पर भारत के प्रधानमंत्री का मत मायने रखता है और विदेश में भारतीय पासपोर्ट लेकर जाने वाले नागरिक को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। प्रधानमंत्री मोदी जी ने भारत के पासपोर्ट की वैल्यू बढ़ाने का काम किया है।

68 प्रतिशत approval rating के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी विश्व के सबसे लोकप्रिय नेताओं में अग्रणी हैं और दुनिया के 36 देशों ने उन्हें अपने सर्वोच्च सम्मानों से सम्मानित किया है। यह विदेशों में भारत की बढ़ती प्रतिष्ठा का परिचायक है।

लोकतंत्र में परफॉर्मेंस, आउटकम और डिलीवरी का जनता का सर्టిफिकेट जनतांत्रिक जनादेश होता है और पिछले 25 वर्षों में देश की जनता ने श्री नरेन्द्र मोदी जी को राज्य और केंद्र में बार-बार जनादेश दिया है। मोदी जी छह दशक बाद लगातार तीन बार चुनकर आने वाले प्रधानमंत्री बने हैं और यह उनके 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन की उपलब्धियों का परिचायक है। ■



प्रधानमंत्री ने बढ़ायी भारत की प्रतिष्ठा

- डॉ. मोहन यादव

राजनीति के मैदान में ऐसे अनेक नेता और जननेता हुए हैं, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। इनमें कुछ अपनी प्रशासनिक क्षमता के लिए जाने गए, तो कुछ ने अपने राजनीतिक कौशल से अलग पहचान बनाई। लेकिन ऐसे नेता विरले ही होते हैं, जो संगठन से निकलकर मुख्यमंत्री के रूप में अपनी राजनीतिक और प्रशासनिक कार्यकुशलता की मिसाल कायम करें और आगे चलकर प्रधानमंत्री के रूप में न केवल देश की राजनीति और शासन-व्यवस्था को नई दिशा दें, बल्कि वैश्विक मंच पर भारत की प्रतिष्ठा और प्रभाव को भी नई ऊंचाइयों तक पहुंचाये।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का सार्वजनिक जीवन ऐसी ही असाधारण यात्रा का उदाहरण है। गुजरात के मुख्यमंत्री के रूप में लगभग 13 वर्षों तक उन्होंने शासन की एक ऐसी शैली विकसित की, जिसमें विकास, सुशासन और जनभागीदारी को केंद्र में रखा गया। इसके बाद वर्ष 2014 में देश के प्रधानमंत्री का दायित्व संभालने के बाद उन्होंने भारत को आत्मनिर्भर, सुरक्षित, समृद्ध और विश्व में प्रभावशाली राष्ट्र बनाने की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उनकी कार्यशैली की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे परिस्थितियों को केवल देखते नहीं, बल्कि उनमें परिवर्तन लाने का प्रयास करते हैं। दुनिया की राजनीति में कहीं मौन रहना है, कहीं अपनी बात स्पष्ट रूप से रखनी है और कहीं दृढ़ता के साथ भारत के हितों की रक्षा करनी है। इसका संतुलन प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने अपनी विदेश नीति में लगातार प्रदर्शित किया है। भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और राष्ट्रीय हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए उन्होंने विश्व के विभिन्न शक्ति-केंद्रों के साथ भारत के संबंधों को मजबूत किया है।

आज भारत विश्व राजनीति में एक प्रभावशाली शक्ति के रूप में अपनी भूमिका निभा रहा है। अमेरिका और रूस जैसे देशों के साथ संबंधों में संतुलन बनाए रखना हो, पश्चिम एशिया में भारत के हितों की रक्षा करनी



हो या रूस-यूक्रेन संघर्ष जैसे जटिल अंतरराष्ट्रीय विषयों पर शांति और संवाद का पक्ष रखना हो, प्रधानमंत्री जी ने भारतीय दृष्टिकोण को मजबूती से दुनिया के सामने रखा है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह भी रही है कि संकट के समय भारत ने केवल अपने नागरिकों

की ही चिंता नहीं की, बल्कि मानवता के प्रति अपने दायित्व को भी निभाया। कोरोना महामारी के कठिन दौर में भारत ने जिस प्रकार अपने नागरिकों की सुरक्षा और जरूरतों का ध्यान रखा, वह अभूतपूर्व था। इसके साथ ही भारत ने अनेक देशों को दवाइयाँ, वैक्सीन और अन्य आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई। श्रीलंका, नेपाल, मालदीव और अफगानिस्तान जैसे पड़ोसी देशों से लेकर तुर्किए तक, जब भी आवश्यकता पड़ी, भारत ने सहायता का हाथ बढ़ाया।

युद्धग्रस्त क्षेत्रों से भारतीय नागरिकों की सुरक्षित वापसी के लिए भी प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में अनेक अभियान चलाए गए। यूक्रेन में फंसे भारतीय विद्यार्थियों की सुरक्षित वापसी हो या संकटग्रस्त परिस्थितियों में अन्य भारतीय नागरिकों को स्वदेश लाना इन प्रयासों ने यह संदेश दिया कि भारत अपने प्रत्येक नागरिक की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है। भारत की मानवीय संवेदनशीलता का परिचय उस समय भी मिला, जब कठिन अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के बावजूद पड़ोसी देश पाकिस्तान के विद्यार्थियों को भी सुरक्षित उनके देश वापस पहुंचाने के प्रयास किए गए। यह भारतीय संस्कृति की उस भावना का परिचायक है, जिसमें मानवता को सर्वोपरि माना गया है।

राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में भी प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने दृढ़ इच्छाशक्ति का परिचय दिया है। उरी हमले के बाद सर्जिकल स्ट्राइक और पुलवामा आतंकी हमले के बाद बालाकोट एयर स्ट्राइक ने यह स्पष्ट संदेश दिया कि भारत आतंकवाद को सहन करने वाला देश नहीं है। ऑपरेशन सिंदूर ने भी आतंकवाद के विरुद्ध भारत के संकल्प को दुनिया के सामने दृढ़ता से रखा। भारत ने यह स्पष्ट किया कि आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई उसके लिए केवल सुरक्षा का विषय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सम्मान और नागरिकों की सुरक्षा का प्रश्न भी है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में आतंकवाद को लेकर भारत की नीति में जो दृढ़ता आई है, उसने अंतरराष्ट्रीय समुदाय का भी ध्यान आकर्षित किया है। पाकिस्तान

प्रयोजित आतंकवाद के मुद्दे को वैश्विक मंचों पर प्रभावी ढंग से उठाने और आतंकवाद के खिलाफ व्यापक अंतरराष्ट्रीय समर्थन जुटाने में भारत को महत्वपूर्ण सफलता मिली है।

हाल ही में दिल्ली में प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में दिल्ली में आयोजित ब्रिक्स (BRICS) सम्मेलन के माध्यम से भारत ने वैश्विक मंच पर स्वयं को एक संतुलित, व्यवहारिक और नीतिगत रूप से स्वायत्त राष्ट्र के रूप में मजबूती से स्थापित किया है। भारत की साख एक ऐसे देश के रूप में बनी है जो वैश्विक दक्षिण (Global South) की आकांक्षाओं का प्रतिनिधित्व करता है और पश्चिमी देशों तथा पूर्वी शक्तियों के बीच संवाद का संतुलन बनाए रखने में सक्षम है। भारत ने यह स्पष्ट संदेश दिया है कि ब्रिक्स किसी पश्चिम-विरोधी गुट के रूप में नहीं, बल्कि एक समावेशी और सुधारात्मक बहुपक्षीय मंच के रूप में कार्य करता है। इसके अतिरिक्त, भारत के डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर, आर्थिक विकास और आतंकवाद के प्रति कड़े रुख ने वैश्विक स्तर पर देश की विश्वसनीयता को और अधिक बढ़ाया है। इस पूरे परिदृश्य में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की भूमिका अत्यंत निर्णायक और प्रभावी रही है। सम्मेलनों के दौरान विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों के साथ की गई उनकी द्विपक्षीय बैठकों ने न केवल जटिल क्षेत्रीय मुद्दों को सुलझाने में मदद की, बल्कि भारत के आर्थिक और व्यापारिक हितों को भी नई दिशा दी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की राजनीति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष गरीब और वंचित वर्गों के जीवन में बदलाव लाने का प्रयास है। जनकल्याण की योजनाओं में जाति, क्षेत्र या धर्म के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं किया गया। प्रधानमंत्री आवास योजना, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, किसान सम्मान निधि, फसल बीमा, उज्ज्वला योजना और आयुष्मान भारत जैसी योजनाओं का लाभ देश के करोड़ों परिवारों तक पहुँचा है। गरीबों को सम्मानजनक जीवन उपलब्ध कराने के लिए केवल आर्थिक सहायता ही नहीं, बल्कि उनके जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने पर भी विशेष ध्यान दिया गया। पक्का घर, शौचालय, बिजली, गैस कनेक्शन, बैंक खाता, स्वास्थ्य सुरक्षा और खाद्यान्न की उपलब्धता जैसे विषयों को जनकल्याण की मुख्यधारा में लाया गया।

आयुष्मान भारत योजना ने गरीब और असहाय परिवारों के लिए गंभीर बीमारियों के उपचार को आर्थिक रूप से अधिक सुलभ बनाया। इसी प्रकार प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना के माध्यम से करोड़ों जरूरतमंद परिवारों को खाद्यान्न उपलब्ध कराया गया। प्रधानमंत्री जी के लिए 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' केवल नारा नहीं, बल्कि शासन का मूल मंत्र रहा है।

प्रधानमंत्री के रूप में दायित्व संभालते ही श्री मोदी जी ने स्वच्छता को राष्ट्रीय अभियान का रूप दिया। उन्होंने स्वयं हाथ में झाड़ू लेकर स्वच्छता का संदेश दिया और देशवासियों से स्वच्छ भारत के निर्माण में भागीदारी का आह्वान किया। इस अभियान ने देश की सोच में परिवर्तन लाने का काम किया। गांवों से लेकर शहरों तक स्वच्छता जनआंदोलन बनी। मध्यप्रदेश ने भी इस अभियान में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। इंदौर का लगातार स्वच्छ शहरों में अग्रणी रहना इस जनभागीदारी का प्रेरक उदाहरण है।

प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने भारत की अर्थव्यवस्था को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प लिया। आज भारत दुनिया की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में अपनी मजबूत स्थिति बना चुका है और तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। मेक इन इंडिया, आत्मनिर्भर भारत, डिजिटल इंडिया और स्टार्टअप इंडिया जैसे अभियानों ने उत्पादन, तकनीक और नवाचार के क्षेत्र में नई संभावनाएँ पैदा की हैं। रक्षा उत्पादन और निर्यात में भारत की बढ़ती क्षमता इसका प्रमाण है। भारत ने अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में भी ऐतिहासिक उपलब्धियाँ हासिल की हैं। चंद्रयान-3 की सफलता और चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के निकट सफल सॉफ्ट लैंडिंग ने पूरी दुनिया का ध्यान भारत की वैज्ञानिक क्षमता की ओर आकर्षित किया।

प्रधानमंत्री जी का मानना है कि भारत की सबसे बड़ी शक्ति उसकी युवा आबादी है। युवाओं को कौशल, रोजगार, स्वरोजगार, स्टार्टअप और तकनीकी नवाचार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए अनेक योजनाएँ संचालित की गई हैं। मुद्रा योजना ने छोटे उद्यमियों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराकर लाखों युवाओं को अपने पैरों पर खड़े होने का अवसर दिया। कौशल विकास और

स्टार्टअप संस्कृति ने युवाओं में नौकरी खोजने के साथ-साथ रोजगार देने की भावना को भी मजबूत किया है।

महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए भी प्रधानमंत्री जी ने अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए। उज्ज्वला योजना ने करोड़ों महिलाओं को रसोई के धुएँ से राहत दिलाई। प्रधानमंत्री आवास योजना ने महिलाओं को परिवार की संपत्ति में अधिक सम्मानजनक भागीदारी का अवसर दिया। महिला आरक्षण कानून ने राजनीति में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने की दिशा में ऐतिहासिक कदम रखा है। 'लखपति दीदी' अभियान के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास किया जा रहा है। यह केवल महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का कार्यक्रम नहीं, बल्कि ग्रामीण भारत के सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन की दिशा में एक बड़ा कदम है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने विकास के साथ-साथ भारत की सांस्कृतिक विरासत के प्रति समाज में आत्मविश्वास जगाने का कार्य किया है। 'विरासत के साथ विकास' की भावना के अनुरूप उन्होंने आधुनिक भारत को उसकी प्राचीन सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ने का प्रयास किया है। योग, जो भारत की हजारों वर्ष पुरानी जीवन पद्धति है, उसे वैश्विक स्तर पर प्रतिष्ठा दिलाने में प्रधानमंत्री जी की भूमिका उल्लेखनीय रही है। उनके प्रयासों से संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में मान्यता दी। आज दुनिया के अनेक देशों में करोड़ों लोग योग को अपने स्वस्थ जीवन का हिस्सा बना रहे हैं।

यशस्वी मोदी जी के प्रयासों से अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण-प्रतिष्ठा ने करोड़ों भारतीयों की आस्था और सांस्कृतिक चेतना को नई ऊर्जा दी। इसी प्रकार जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 के प्रावधानों को समाप्त करने का निर्णय राष्ट्रीय एकता और अखंडता की दृष्टि से ऐतिहासिक माना गया।

'मन की बात' के माध्यम से प्रधानमंत्री जी ने देश के सामान्य नागरिकों से सीधे संवाद की एक अनूठी परंपरा विकसित की। देश के दूरदराज के गांवों, छोटे शहरों और सामान्य परिवारों से जुड़े अनेक लोगों के कार्यों को राष्ट्रीय मंच मिला। यह संवाद प्रधानमंत्री जी के उस दृष्टिकोण को दर्शाता है, जिसमें भारत का विकास केवल सरकार के प्रयासों से नहीं,



बल्कि प्रत्येक नागरिक की भागीदारी से संभव माना गया है।

यशस्वी नरेंद्र मोदी जी के सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष केवल सत्ता में रहने की अवधि नहीं, बल्कि सेवा, संघर्ष, परिश्रम और राष्ट्र निर्माण की निरंतर यात्रा हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के माध्यम से समाज और राष्ट्र सेवा का संकल्प लेकर शुरू हुई यह यात्रा गुजरात के मुख्यमंत्री से होते हुए देश के प्रधानमंत्री तक पहुँची। उनके लिए राष्ट्र प्रथम है और यही भावना उनके प्रत्येक निर्णय में दिखाई देती है। उन्होंने भारत को आत्मविश्वासी, आत्मनिर्भर, सुरक्षित और समृद्ध राष्ट्र बनाने का लक्ष्य सामने रखा है। उनके जन्मदिवस पर हम सभी का यह संकल्प होना चाहिए कि हम राष्ट्र हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देंगे और विकसित भारत के निर्माण में अपनी भूमिका निभाएँगे।

कहा गया है.....

“परिश्रम में जो तपा है,
उसने ही तो इतिहास रचा है।
जिसने फौलादी चट्टानों को तोड़ा है,
उसने ही समय को मोड़ा है।
समय को मोड़ देने का भी यही समय है,
सही समय है।”

यह उद्घोष आज भारत के उस नेतृत्व के प्रति हमारे विश्वास को व्यक्त करता है, जिसने सेवा को साधना और राष्ट्र निर्माण को अपना ध्येय बनाया है। आइए, प्रधानमंत्री जी की 25 वर्षों की सेवा यात्रा के अवसर पर हम भी राष्ट्र निर्माण के इस महायज्ञ में अपनी आहुति देने का संकल्प लें। देश के लिए नई उम्मीदों का दीप जलाएँ, अपने सामर्थ्य के अनुसार योगदान दें और उस भारत के निर्माण में सहभागी बनें, जिसका सपना हमारे स्वतंत्रता सेनानियों और

राष्ट्रनायकों ने देखा था।

प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन 17 सितंबर को घरों और प्रतिष्ठानों में आशीर्वाद का एक दीप उनकी दीर्घायु, स्वस्थ एवं यशस्वी जीवन की कामना तथा उस विश्वास का प्रतीक है कि भारत की विकास यात्रा निरंतर आगे बढ़ती रहे, देश आत्मनिर्भर एवं शक्तिशाली बने और वर्ष 2047 तक विकसित भारत का संकल्प साकार हो। ‘सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास’ की भावना के साथ विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण की यात्रा निरंतर आगे बढ़े, यही प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस पर हमारी सबसे बड़ी शुभकामना है।

“जिसने जीवन संवारा,
उसको नमन हमारा।”

(लेखक मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री हैं)

जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाएं - हेमंत खण्डेलवाल

- कार्यकर्ताओं की मेहनत और समर्पण से ‘सेवा संकल्प अभियान’ को मिल रही सफलता।
- भाजपा का बूथ स्तर का कार्यकर्ता ही संगठन की सबसे बड़ी ताकत।
- बूथ स्तर के कार्यकर्ताओं की मेहनत से ‘सेवा संकल्प अभियान’ सफल हो रहा।

‘सेवा संकल्प अभियान’ के प्रदेश भर में अभी तक आयोजित कार्यक्रमों की सफलता का श्रेय भाजपा संगठन के प्रत्येक कार्यकर्ता को जाता है। भाजपा कार्यकर्ता आधारित संगठन और भाजपा में सभी कार्य सामूहिक जिम्मेदारी के साथ किए जाते हैं। सेवा संकल्प अभियान की प्रदेश टोली, जिला टोली से लेकर बूथ स्तर की टोली से जुड़े कार्यकर्ताओं के साथ सभी कार्यकर्ताओं की मेहनत से पूरे प्रदेश में



सेवा संकल्प अभियान सफल हो रहा है। बूथ स्तर का कार्यकर्ता जिस सक्रियता और समर्पण के साथ संगठन के कार्यक्रमों को सफल बनाने में जुटा है, वह सराहनीय है। यही कार्यकर्ता संगठन की वास्तविक ताकत हैं और इन्हीं के माध्यम से संगठन की गतिविधियाँ समाज के प्रत्येक वर्ग और परिवार तक पहुँचती हैं। सेवा

संकल्प अभियान का उद्देश्य जन-जन तक सरकार के कार्यों को पहुँचाने के साथ सेवा कार्य करना है। पार्टी कार्यकर्ता अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र व मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार द्वारा जनकल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों से आम नागरिकों के जीवन में किस प्रकार बदलाव आया है, वह जनता तक पहुँचाएँ। सरकार के कार्यों और योजनाओं की जानकारी जब बूथ स्तर के कार्यकर्ता घर-घर तक पहुँचाएँगे, तो सेवा संकल्प अभियान का संदेश व्यापक रूप से समाज तक पहुँचेगा। इससे संगठन और जनता के बीच संपर्क और अधिक मजबूत होगा। केवल कार्यक्रम आयोजित करना ही उद्देश्य नहीं है, बल्कि कार्यक्रम के माध्यम से समाज में सेवा की भावना को मजबूत करना और सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी पात्र परिवारों तक पहुँचाना भी हमारी जिम्मेदारी है। ■

समग्र विकास से 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की सिद्धि



अखिलेश जैन, सीए

मोदी जी के 25 वर्षों के शासनकाल की भारत की यात्रा वास्तव में भारत के समग्र विकास के द्वारा 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था बनाने के लिए किये गये समस्त प्रयासों की यात्रा है।

जितना यह सही है सूर्य पूर्व में ही उगता है उतना ही यह सही है कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत निराशा, भाई भतीजावाद, जातिवाद, परिवारवाद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद, कालेधन, जमाखोरी, आयात पर निर्भरता, तुष्टीकरण, संस्कृति का अपमान, गुलामी के प्रतीक चिन्हों जैसी बेड़ियों को तोड़कर सुन्दर, सुखद, भविष्य के निर्माण के लिए रात-दिन एक करके, बिना रुके-बिना थके, बिना दौंये-बिना बाँये देखे कठिन से कठिन अग्नि परीक्षा को पार करके देश के भविष्य निर्माण में जुटा हुआ है।

आज भारत का एक ही लक्ष्य, एक ही ध्येय, एक ही सपना, एक ही नारा, एक ही वचन, एक ही दशरथ नन्दन प्रभु श्री रामचन्द्र जी के श्री चरणों में प्रार्थना है- “विकसित भारत@2047”।

“विकसित भारत@2047” के लक्ष्य की गहराई को जानने वाले ही, लक्ष्य की गंभीरता को जान सकते हैं।

“विकसित भारत@2047” का नारा लगाना जितना आसान है, लक्ष्य उतना ही गंभीर है, या आप मान सकते हैं “विकसित भारत@2047” के लक्ष्य के सिद्धि के लिए उससे भी बड़ा तप करना पड़ेगा जितना तप महाराज भगीरथ ने गंगा को पृथ्वी पर उतारने के लिए किया था। महाराज भगीरथ के कठोर तप से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने गंगा को पृथ्वी पर उतरने का वरदान दिया था, महाराज भगीरथ का तप तो केवल एक सिद्धि गंगा को पृथ्वी पर उतारने के लिए था,



पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत का तप तो “विकसित भारत@2047” के लिए है, इस सिद्धि को पाने के पहले तमाम सिद्धियां पार करना पड़ेगी, उन सभी बाधाओं को पार पाना पड़ेगा जो मुख्य सिद्धि के मार्ग में बाधा हैं, बाधाओं को दूर करने की गति को बरकरार रखते हुए बाधाओं को दूर करने की गति को भी गति देना पड़ेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत इस दिशा में आगे बढ़ चुका है, धीरे-धीरे नहीं, अब तेजी से कदम आगे बढ़ रहे हैं, 12 वीं अर्थ व्यवस्था से भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था की तरफ कदम बढ़ा रहा है।

घरों से बाहर निकल कर महिलाएं नीति निर्णय में भागीदार बन रही हैं, देश की अर्थव्यवस्था की मजबूती व अर्थव्यवस्था के स्थायित्व में महिलाओं का योगदान लाने में भारत सफल होता प्रतीत हो रहा है, 2014 से उच्च स्तर से भ्रष्टाचार की खबरों को मसाला न मिल पाने के कारण सामान्य जनों में उत्साह का संचार करने में सरकार को बहुत बड़ी सफलता मिली है, इस उत्साह का सकारात्मक परिणाम देश की बढ़ती अर्थव्यवस्था के रूप में देखा जा सकता है, सेना में सरकार के प्रति बढ़ता विश्वास ही वह कारण है जिसके चलते आज देश की सीमाएँ चहुँ ओर से सुरक्षित हैं, परिन्दा भी पर नहीं मार पाता क्योंकि सरकार व सेना की सभी कार्यवाहियों का लेखा जोखा अन्धा भी तुरन्त पढ़ लेता है। सरकार के आतंकवाद विरोधी निर्णयों का भय देश में स्थिरता, शांति व प्रगति लाने में बेहद सहायक सिद्ध हुआ है।

आत्मनिर्भर भारत, मेक इन इंडिया, वैकल्पिक ऊर्जा संसाधनों की खोज व विकास, देश भर में आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का विकास होना, सनातन संस्कृति की रक्षा व संरक्षण, शिक्षण, प्रशिक्षण व रोजगार की संभावनाएं, करों का सरलीकरण, हर व्यक्ति का बैंक में खाता होना, गरीब से गरीब व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए चिकित्सा सुविधा, आवास, पेयजल, स्वच्छता, स्वच्छ ईंधन, शौचालय, दिल्ली से चलने वाली राशि बिना किसी कट के सीधे हितग्राहियों के खाते में बराबर व तुरन्त पहुंचना, 40 देशों के साथ मुक्त व्यापार समझौतों ने देश की आर्थिक प्रगति में जो योगदान दिया है उसी का परिणाम है विदेशी निवेश भारत के दरवाजे पर लाईन लगा कर खड़ा है, जीडीपी नए शिखर पर है, जीएसटी व आयकर हर बार आगे बढ़ रहा है, 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आ पाए हैं, इसी तरह अगर सफलता की गति बरकरार रहती है, तो वह दिन दूर नहीं जब 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था व “विकसित भारत@2047” की सिद्धि पाने में भारत सफलता पाएगा। ■

(लेखक भाजपा मप्र के कोषाध्यक्ष हैं)

विकसित भारत@2047 के अग्रदूत मोदी जी



योगेन्द्र नरेन्द्र नाथ बरतारिया

6 अक्टूबर 2026, विक्रम
संवत् 2083,

आश्विन कृष्ण पक्ष की ग्यारस, मंगलवार, सर्व पितरों की कृपा से भारत की राजनीति के इतिहास में एक नया अध्याय जुड़ने जा रहा है। लगातार 25 वर्षों से निर्बाध शासन प्रमुख की भूमिका, भारत जैसे विविधताओं से भरे देश में, लोकतांत्रिक देश में, क्या यह सच है? शायद बड़े-बड़े नेताओं के लिए असंभव है? पर मोदी जी के लिए यह सब कुछ सम्भव है। समय बीतता गया, समय के साथ-साथ मोदी जी की स्वीकार्यता संगठन से प्रदेश शासन प्रमुख, प्रदेश शासन प्रमुख से राष्ट्र नायक, राष्ट्र नायक से विश्व के सर्वोच्च नेता तक का सफर अपने आप में अनूठा है। शायद विद्वान कवियों की कल्पनाओं से भी परे है। ऐसे मोदी जी का 25 वर्षों का सफर तमाम अवरोधों को पार करते हुए आज उस स्तर पर आ पहुंचा है, जहाँ से विश्व के लोकतांत्रिक देशों के नेताओं की कल्पना तरंगों के पहुंचने की कल्पना तरंग शक्ति साहस भी नहीं जुटा पाती हैं।

शासन प्रमुख की भूमिका तो कई जानदार, वजनदार, शानदार, परम योग्य नेताओं को प्राप्त हो चुकी है। पर मोदी जी जैसा तप, ईमानदारी, जिम्मेदारी, दूरदर्शिता, राष्ट्र प्रेम, सभी नागरिक अपने हैं, जैसे नेतृत्व के ठोस गुण मोदी जी को सबसे अलग कर के रख देते हैं। वास्तव में मोदी जी के समानांतर कोई है ही नहीं? इस कारण मोदी जी का रथ प्रतिरोध विहीन है, मोदी जी के रथ को रोकना या प्रतिरोध उत्पन्न करना तभी सम्भव हो सकता है जब मोदी जी के नेतृत्व से कोई बड़ा नेतृत्वकारी आए। वास्तव में मोदी जी के रथ का सारथी तप, ईमानदारी, जिम्मेदारी, दूरदर्शिता, राष्ट्र प्रेम, सभी नागरिक अपने हैं जैसे अद्वितीय गुण हैं, जिनका तोड़



सम्भव ही नहीं है।

कांग्रेस को प्रदेशों व देश का नेतृत्व करने के कई अवसर मिले थे। पर कांग्रेस नेतृत्व समय का सदुपयोग नहीं कर पाया। सोच का दायरा बहुत सीमित या बहुत छोटे लाभ के निहित स्वार्थों की सिद्धि में पूरा समय निकाल दिया। अब मतदाताओं के पास 70 वर्षों के शासन व 25 वर्षों के शासन की तुलना का अवसर आ गया है, और यह तुलना कांग्रेस के लिए वाटर लू ही सिद्ध होती है, गलती कांग्रेस नेतृत्व से कहां और क्या हो गई? कांग्रेस ने शासन की नीतियों को बहुत ही संकीर्ण विचारों के साथ चलाने का प्रयास किया, जिसके कारण देश सोने की चिड़िया से विश्व की 14 वीं अर्थव्यवस्था बन गया। युवा रोजगार की तलाश में असहाय हो गया, महिलाओं के पास चार दीवारी में कैद के अलावा और कोई विकल्प ही नहीं था। किसान आत्महत्या करने, कर्जों के बोझ से दबने के लिए मजबूर था, मजदूर के पास पलायन करने के अलावा कोई विकल्प भी नहीं था, मजदूर करता भी तो क्या करता, निवेशक लाल फीताशाही, भ्रष्टाचार व बुनियादी इंफ्रास्ट्रक्चर के अभाव में भारत की ओर मुड़ने का विचार भी नहीं लाता था, अमीरों के पास

बच्चों को विदेश भेजने का विकल्प मौजूद थे, पर मध्यम वर्ग व गरीबों के पास बच्चों के भविष्य निर्माण के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, खेलकूद जैसी बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्ष ही एक मात्र रास्ता था, व्यापार-व्यवसाय को करों के मकड़जाल में फंसा कर वसूली का केंद्र बना रखा था। विपक्ष बोले तो आपातकाल का विकल्प सरकार के पास निर्विघ्न उपलब्ध था, सरकार के लिए बहुत उपयोगी था।

संविधान की भावना तो दूर की कौड़ी, जब चाहो जैसा अच्छा लगे वैसा संविधान में संशोधन कर लो, विपक्षी सरकारों के लिए धारा 356 बहुत ही कारगर हथियार हमेशा तैयार रहता था। अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक जैसे शब्दों का प्रयोग समाज को विभाजित कर अंग्रेजों की फूट डालो और राज करो की नीति जैसा ही था और उसके बाद विपक्ष पर धुवीकरण का आरोप मढ़ दो, इस प्रकार कांग्रेस ने अपनी सोच का दायरा बहुत छोटे स्तर पर बनाए रखा और बहुत दुख की बात है आज भी विरासत में मिले सिद्धांत ही कांग्रेस के मार्गदर्शक सिद्धांत हैं।

मोदी जी ने इसके बिल्कुल ही विपरीत दिशा में जाकर अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक के भेदभाव की जगह सबका साथ- सबका



विकास- सबका प्रयास- सबका विश्वास जैसा प्रेरक मन्त्र देकर पूर्व से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक भारत को एक कर दिया, भारत 140 करोड़ भारतीयों का देश बना दिया। महिलाओं को मुख्य धारा में लाने, निर्णय लेने का अधिकार प्रदान किया। महिला आरक्षण की व्यवस्था की।

ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से विश्व को महिलाओं के सम्मान का पाठ पढ़ाया। सेना में महिलाओं को प्रतिनिधित्व मिला। गरीबों को शौचालय, आवास, बिजली, पेयजल, स्वच्छ ईंधन, मुफ्त इलाज, बैंक खाता, बैंकों से बिना गारंटी के लोन, जीवन बीमा, स्वामित्व योजना, टीकाकरण, सस्ती औषधि, सीधे खाते में राशि अंतरण, पेंशन जैसी तमाम गरीब कल्याणकारी योजनाओं में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखी। गरीबों में खोया विश्वास जगाया। उसी का परिणाम है कि आज 25 करोड़ से अधिक भारतीय गरीबी रेखा से बाहर आ चुके हैं। नियो मिडिल क्लास का एक नया वर्ग विकसित हो चुका है।

युवाओं की दशा और दिशा को सुधारने के लिए मोदी जी ने स्वयं युवाओं का हाथ थाम लिया है। युवाओं को बेहतर भविष्य प्रदान करने के लिए स्किल इंडिया जैसी योजनाएं

चलाई। ग्रामीण स्तर तक प्रशिक्षण प्रदान करने का प्रयास किया। शिक्षण संस्थाओं का आभाव खत्म करने का प्रयास किया। इंटरनेट की व्यवस्था जमाई। श्रम योगी मानधन योजना ले कर आए। स्टार्ट अप इंडिया का नया इतिहास रच दिया। निवेश को प्रोत्साहन देकर युवाओं के रोजगार की व्यवस्था की। मेक इन इंडिया के माध्यम से रोजगार प्रदान करने का प्रयास किया। आयात पर निर्भरता कम करके निर्यात को प्रोत्साहन वास्तव में युवाओं को अवसर प्रदान करना था। युवाओं में जोश भरने में मोदी जी ने चमत्कारिक कार्य किया। इन्हीं प्रयासों के परिणामस्वरूप आज भारत का युवा देश की प्रगति में योगदान देने की स्थिति में आया।

छोटे किसानों की दशा सुधार के प्रयासों से तो ऐसा प्रतीत होता है कि मोदी जी स्वयं छोटे किसानों के घर जाकर बैठ गये हैं। और उनके दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में स्वयं सहायता कर रहे हैं। चाहे बात न्यूनतम समर्थन मूल्य की हो। सभी फसलों को न्यूनतम समर्थन मूल्य के दायरे में लाना हो। किसान सम्मान योजना हो। यूरिया की उपलब्धता व मूल्य। डीएपी खाद की उपलब्धता व मूल्य। खेत को पानी, खेत को बिजली। पशुधन विकास। किसान क्रेडिट कार्ड। किस किस स्तर पर मोदी जी खुद किसानों के

घर पहुँच गए कि आज भारत अनाज के मामले में आत्मनिर्भर ही नहीं बल्कि निर्यातक देश बन चुका है। समाज का कोई भी वर्ग, 140 करोड़ भारतीयों में से कोई भी भारतीय, मोदी जी से अछूता नहीं है। इन्हीं प्रयासों का परिणाम है कि सकारात्मक परिणाम प्राप्त होना चालू हो गए हैं। देश रक्षा क्षेत्र में दिन प्रतिदिन मजबूती पा रहा है। बैंकिंग सेक्टर मजबूत स्थिति में है। जीडीपी विश्व में सर्वोच्च स्तर पर है। प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों का मकड़जाल समाप्त हो चुका है। यातायात का आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर तेजी से विकसित हो रहा है। ऊर्जा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता भारत की प्राथमिकता बन चुकी है। वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का तेजी से विकास हो रहा है। विश्व का बाजार भारतीयों के लिए नव अवसर प्रदान कर रहा है।

आत्मनिर्भर भारत बनाने के प्रयासों का सकारात्मक असर अर्थव्यवस्था पर पड़ा है। 12 वीं अर्थव्यवस्था से भारत तीसरी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। अगली सीढ़ियां 5 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था की ओर जा रही हैं। फिर विकसित भारत@2047 की सिद्धि। वास्तव में मोदी जी ही विकसित भारत@2047 के अग्रदूत हैं। ■

(लेखक चरैवेति पत्रिका के कार्यकारी सम्पादक हैं)

कोर ग्रुप की बैठक

संगठन को मजबूत बनाना है- हेमंत खण्डेलवाल

पार्टी के प्रदेश प्रभारी, प्रदेश सह प्रभारी एवं प्रदेश संगठन महामंत्री ने संगठनात्मक गतिविधियों को और गति देने का कार्य प्रारंभ किया है। कोर ग्रुप की बैठक में संगठन और सरकार से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मध्यप्रदेश सरकार द्वारा किए जा रहे जनकल्याण एवं विकास कार्यों की विस्तार से जानकारी दी। संगठन के आगामी कार्यक्रमों, पार्टी के समक्ष आने वाली चुनौतियों तथा संगठन को और अधिक मजबूत बनाने के विषय पर भी विस्तृत चर्चा हुई।

कोर ग्रुप के सदस्यों ने अपने विचार एवं महत्वपूर्ण सुझाव दिए। आने वाले



संगठन की मजबूती और जनसेवा के कार्यों को और प्रभावी बनाने कोर ग्रुप में हुआ मंथन।

संगठन के जरिए जनसेवा के कार्यों को और व्यापक बनाना है।

समय में किन विषयों को लेकर पार्टी को जनता के बीच जाना है और संगठन की गतिविधियों को किस प्रकार और अधिक प्रभावी बनाना है, इस पर भी विचार-विमर्श किया गया।

भाजपा का मूल उद्देश्य संगठन की शक्ति के माध्यम से जनसेवा को और व्यापक बनाना है। सरकार और संगठन मिलकर जनता की सेवा के कार्यों को और आगे बढ़ाएं तथा संगठन को जमीनी स्तर तक मजबूत बनाने के लिए क्या बेहतर किया जा सकता है, इस पर बैठक में गंभीरता से मंथन हुआ। जिन विषयों और सुझावों पर चर्चा की गई है, उन विषयों की प्रगति की समीक्षा आगामी महीनों में होने वाली कोर ग्रुप की बैठक में की जाएगी। ■



युवाओं की भूमिका महत्वपूर्ण - नितिन नवीन



देश के भविष्य का निर्माण करने वाली सबसे शक्तिशाली ताकत युवा हैं। युवाओं में अपार ऊर्जा, प्रतिभा और विचार-क्षमता है तथा यदि इस शक्ति को सही दिशा दी जाए, तो युवा देश को नई ऊंचाइयों तक ले जा सकते हैं।

देश प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को साकार करने के लिए चल पड़ा है। आजादी के बाद देश को अक्सर क्षेत्रीय या व्यक्तिगत नजरिए से देखा गया, लेकिन अब 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मंत्र के साथ 140 करोड़ देशवासियों को एकजुट होकर आगे बढ़ना है। भारत आज दुनिया में सबसे अधिक युवा आबादी वाला देश है, इसलिए युवाओं का दायित्व सबसे बड़ा है। आज की पीढ़ी को जीवन में 'शॉर्टकट' से बचने की आवश्यकता है। आज का युवा भले ही 'रिल्स' देखता है, लेकिन उसे पसंद वही आता है जो 'रियल' यानी यथार्थ होता है। बनावटी चीजों की पहुंच सीमित होती है, इसलिए जीवन में लक्ष्य

तय करके और एक संकल्प के साथ सही रोडमैप बनाकर आगे बढ़ना चाहिए। छात्र चाहे डॉक्टर बनें, इंजीनियर बनें या उद्यमी, उनका अंतिम लक्ष्य केवल स्वयं या परिवार का विकास नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण होना चाहिए। हमारा मानना है कि कोई भी काम छोटा नहीं होता। बड़े मन से किया गया छोटा काम भी बड़ा हो जाता है और छोटे मन से किया गया बड़ा काम भी छोटा रह जाता है।

युवाओं में राष्ट्रप्रेम और समर्पण की भावना को गहराई तक उतारने के लिए 'बॉर्डर दर्शन' कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए। जब युवा सीमा पर जाकर खुले आसमान के नीचे देश की रक्षा कर रहे सैनिकों को देखते हैं, तो उनके भीतर भी देश के प्रति असीम समर्पण का भाव जागृत होता है, जो उन्हें जीवन में कभी भटकने नहीं देता। लीडरशिप केवल राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि हर क्षेत्र में इसकी आवश्यकता होती है। जिस तरह क्रिकेट में एक बल्लेबाज को अच्छी बैटिंग करने के लिए पहले 'पिच पर जमना' पड़ता है, उसी तरह युवाओं को अपने क्षेत्र की जड़ों तक जाना चाहिए। लीडरशिप के तीन मुख्य स्तंभ

हैं, अध्ययन, अनुभव और धैर्य। इन्हें जीवन में उतारने से किसी भी क्षेत्र में नेतृत्व क्षमता का विकास होता है। उसी प्रकार 100 मीटर की दौड़ में इंसान की गति की परख होती है, लेकिन लंबी दौड़ में 'स्टैमिना' यानी धैर्य और सहनशक्ति का परीक्षण होता है। जीवन एक लंबी दौड़ है। यदि युवा अपनी सहनशक्ति और निरंतरता बनाए रखेंगे, तो वे लंबी दूरी तय करके अपनी मंजिल तक अवश्य पहुंचेंगे।

हमारे देश का युवा अपनी जड़ों और संस्कृति से जुड़ा रहता है और हमारे युवाओं को ऐसे ही रहना है। सभी युवा प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा वैश्विक स्तर पर स्थापित किए गए 'योग' और 'मेडिटेशन' को अपनी दिनचर्या में शामिल करना चाहिए ताकि युवा एकाग्रता और समर्पण के साथ काम कर सकें।

पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 'नदियों को जोड़ने' का विजन दिया था, जिसे अब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी आगे बढ़ा रहे हैं। कोसी क्षेत्र में 20 हजार करोड़ रुपये की योजना से नेपाल की तराई में नदियों को जोड़ने का काम शुरू हो चुका है, जिससे बिहार में बाढ़ की विभीषिका से निजात मिलेगी। हिमालयी क्षेत्रों में ग्लोबल वार्मिंग के कारण कई आपदाएं उत्पन्न होती हैं। इससे बचने के लिए युवाओं को 'एक पेड़ मां के नाम' अभियान से जुड़कर पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहिए।

पिछले 10-12 वर्षों में देश में बड़े बदलाव हुए हैं। 10 साल पहले देश में मात्र 60 हजार मेडिकल सीटें थीं, जो आज 1.5 लाख से अधिक हो गई हैं। देश में विश्वविद्यालयों की संख्या 400 से बढ़कर 1100 के पार जा चुकी है। कभी हर तकनीक के लिए आयात पर निर्भर रहने वाला भारत आज दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मोबाइल निर्माता देश है। रक्षा क्षेत्र में भारत आज ब्रह्मोस और 'मेक इन इंडिया' के तहत 38 हजार करोड़ रुपये से अधिक के रक्षा उपकरणों का निर्यात कर रहा है। कोरोना काल में भारत ने विदेशी टीकों का इंतजार करने के बजाय अपने वैज्ञानिकों पर भरोसा किया और स्वदेशी वैक्सीन बनाकर दुनिया को भी दी। मोदी सरकार ने केवल इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं बदला, बल्कि देश की सोच बदली है। कल तक जिन सीमावर्ती गांवों को भारत का 'अंतिम गांव' मानकर उनके विकास की उपेक्षा की जाती थी, आज उन्हें भारत का 'प्रथम गांव' मानकर



उनकी सुरक्षा और प्रगति सुनिश्चित की जा रही है। एक समय जिन सैनिकों को अपमान का घूंट पीना पड़ता था, आज सर्जिकल स्ट्राइक और 'ऑपरेशन सिंदूर' के जरिए उनका शौर्य पूरी दुनिया देख रही है। 'वोकल फॉर लोकल' और 'वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट' जैसी योजनाओं ने स्थानीय अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया है।

आज का भारतीय युवा अब नौकरी मांगने वाला नहीं, बल्कि नौकरी देने वाला बन गया है। देश में 2 लाख से अधिक स्टार्टअप्स और वैश्विक स्तर पर नेतृत्व कर रहे यूनिकॉर्न्स इस बात का प्रमाण हैं। भाजपा सरकार अंत्योदय के तहत आखिरी व्यक्ति तक लाभ और विकास पहुंचाने का कार्य कर रही है। आज 80 करोड़ लोगों को मुफ्त राशन, 12 करोड़ माताओं-बहनों को सम्मानजनक जीवन देने के लिए शौचालय और 3 करोड़ 'लखपति दीदी' को स्वावलंबी बनाने का अभूतपूर्व कार्य हो रहा है। सभी छात्र-छात्राएँ भारत के स्पेस, इनोवेशन और विकास की ऐतिहासिक यात्रा से स्वयं को जोड़ें और अपनी ऊर्जा से देश को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं।

युवाओं का जोश, समर्पण और निरंतरता सफलता की कुंजी है। जीवन में शॉर्टकट से बचते हुए असफलताओं से निराश हुए बिना प्रयास करना चाहिए। युवाओं को राजनीति में आना चाहिए, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी राजनीति में आने के लिए युवाओं को प्रेरित करते हैं। 2047 तक विकसित भारत के निर्माण के लिए राष्ट्र प्रथम की भावना, सामूहिक संकल्प और देशहित में योगदान का संदेश दिया है।

युवाओं को किसी भी कार्य को कभी छोटा नहीं समझना चाहिए। पूरे समर्पण के साथ काम करने पर ही सफलता प्राप्त होती है। आज युवाओं के समक्ष तीन मुख्य विषय हैं, हम भविष्य का भारत कैसा चाहते हैं, भविष्य का प्रदेश कैसा चाहते हैं और एक नागरिक के रूप में हम खुद को कहां देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति के लिए पहले देश, फिर राज्य या पार्टी और अंत में स्वयं होना चाहिए। भाजपा का हर कार्यकर्ता इसी भावना के साथ कार्य करता है। कोई भी व्यक्ति इंजीनियर, डॉक्टर या व्यवसायी बनकर सफल तो हो सकता है, लेकिन सच्ची संतुष्टि केवल व्यावसायिक सफलता से नहीं, बल्कि एक अच्छे इंसान और नागरिक बनने पर समाज द्वारा दिए गए सम्मान से मिलती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 'परीक्षा पे चर्चा' में भी इस विषय पर बात की जाती है। सफलता मिलने पर लोग खुश होते हैं, लेकिन

थोड़ी सी असफलता मिलने पर युवा जल्दी हताश हो जाते हैं। यह जीवन बहुत अमूल्य है। माता-पिता ने बहुत परिश्रम और ईश्वर के आशीर्वाद से जन्म दिया है, ताकि वे देश और अपने परिवार के लिए कुछ बड़ा कर सकें। छोटी सी निराशा के कारण जीवन को दांव पर लगाने या गलत दिशा में ले जाने के विचारों से बचना चाहिए। जन्म को सार्थक बनाने के लिए देश, माता-पिता और गुरुजनों का सम्मान करते हुए अपने दायित्वों का सफलतापूर्वक निर्वहन करना चाहिए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी युवाओं को सकारात्मक सोच के साथ राजनीति में आने के लिए प्रेरित करते हैं, क्योंकि राजनीति से ही देश को दिशा मिलती है और एक सच्चा नेतृत्व लोगों को एक सूत्र में बांधकर आगे बढ़ाता है। 2012-13 के समय युवाओं में नाउम्मीदी थी, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने आकर युवाओं को खुद पर और देश पर विश्वास करना सिखाया। कभी दुनिया की पांच सबसे कमजोर अर्थव्यवस्थाओं (फ्रैंजाइल-5) में गिना जाने वाला भारत, आज देशवासियों की सहभागिता और सकारात्मक सोच के कारण दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बन गया है। 1880 के दशक में 'ग्रेट अमेरिकन ड्रीम' देखा जाता था और चीन में विकास की बात शुरू हुई थी। जब किसी देश के नागरिक एक सामूहिक सपने के साथ जुड़ते हैं, तो राष्ट्र महान बनता है। इसी तरह, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2047 के 'विकसित भारत' का जो सपना दिया है, यदि भारत के 140 करोड़ नागरिक एक-एक कदम साथ मिलकर चलें, तो वह लक्ष्य भी अवश्य पूरा होगा। स्वामी विवेकानंद जी ने कहा कि 'उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए'। आज हमारा लक्ष्य 'राष्ट्र प्रथम' के संकल्प के साथ 'विकसित भारत' का निर्माण करना है।

**अतीत एक खजाना है,
इसे सहेजकर रखें,
वर्तमान एक संघर्ष है,
इसे जारी रखें और
भविष्य एक सपना है,
इसकी प्रतीक्षा करें।**

भारत का इतिहास, माता-पिता और गुरुजनों का आशीर्वाद हमारा खजाना है, जो हमें ताकत देता है। यदि वर्तमान में संघर्ष है, तो इसका अर्थ है कि हम सही दिशा में हैं। धैर्य, एकाग्रता और समर्पण के साथ काम करने से भविष्य की हर बाधा को पार कर सुनहरे सपने को साकार

किया जा सकता है।

'वन्दे मातरम्' गीत ने देश को आजादी दिलाई। उसी तरह आज का युवा ही अब 2047 के 'विकसित भारत' के सपने को भी साकार करेगा।

खेल, कला, साहित्य और संस्कृति की परंपरा को शिक्षा नीति के तहत स्कूलों में विषय और अंक व्यवस्था से जोड़ा जाना चाहिए। युवाओं को सोशल मीडिया की नकारात्मकता से बचाकर खेल, संस्कृति और गतिविधियों से जोड़ने पर जोर देना चाहिए। रोजगार बढ़ाने के लिए निवेश का वातावरण बन रहा है।

आज की नई पीढ़ी को सही दिशा में व्यस्त रखने की सख्त आवश्यकता है। आज के समय में खेल और संस्कृति जैसी चीजें हाशिए पर चली गई हैं। एक समय था, जब बच्चे शाम के तीन-चार बजते ही गली-मोहल्लों या मैदानों की ओर भागते थे, लेकिन टीवी से होते हुए अब उनका पूरा समय मोबाइल फोन पर बीतने लगा है। मैदानों में समय न बिताने के कारण ही हमने अपनी वह वास्तविक ताकत और 'बाय बॉर्न गिफ्ट' खो दी है, जो भारतीय संस्कृति और खेलों की पहचान हुआ करती थी।

भले ही हर व्यक्ति बड़ा खिलाड़ी या कलाकार न बन पाए, लेकिन जीवन में इन गतिविधियों के होने से युवाओं में सकारात्मकता और प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास होता है। इसलिए एक्स्ट्रा करिकुलर एक्टिविटीज युवाओं के जीवन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सोशल मीडिया पर आज भी 'वही रील चलती है, जो रियल होती है।' आज की पीढ़ी 'ऑर्गेनिक' है और वास्तविकता के बहुत करीब है। वे फैब्रिकेटेड चीजों पर भरोसा नहीं करते और न ही अपनी पारिवारिक या वास्तविक स्थिति को लेकर शर्मिंदा होते हैं, जबकि पहले के समय में लोगों के भीतर एक हिचक हुआ करती थी। यही वास्तविकता उन्हें बचाएगी। सोशल मीडिया पर परोसी जा रही नकारात्मकता से बचने का उपाय यह है कि मोबाइल का एल्गोरिदम पूरी तरह हमारी लाइक्स पर काम करता है। हम जो देखना चाहते हैं, विदेशी इन्फ्लुएंसर्स और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हमें वही दिखाते हैं। इसलिए, यदि समाज की इस गंदगी और नकारात्मकता से बचना है, तो हमें स्वयं अपनी पसंद को सकारात्मक चीजों, जैसे खेल आदि, पर केंद्रित करना होगा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्टार्टअप योजना की शुरुआत की थी और आज देश में 2.5 लाख से अधिक स्टार्टअप्स तथा 125 से 130 से अधिक यूनिकॉर्न्स काम कर रहे हैं। ■



राम घाट पर "आशीर्वाद का दीया" प्रज्वलित

आधुनिक भारत के निर्माता प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिन पर हम सभी उन्हें हार्दिक बधाई देते हैं और उनके दीर्घायु एवं यशस्वी जीवन की कामना करते हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस को सेवा दिवस के रूप में मनाते हुए 'सेवा संकल्प अभियान' की शुरुआत की गई है। यह अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के 25 वर्षों के सार्वजनिक जीवन में राष्ट्रसेवा, जनकल्याण और समाज के अंतिम पायदान पर खड़े व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के संकल्प से प्रेरित है। उनके सार्वजनिक जीवन की इस लंबी यात्रा

ने सेवा और समर्पण को जनभागीदारी से जोड़ने का कार्य किया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर समाज में आए बदलाव, लोगों के जीवन में आए सकारात्मक परिवर्तन और देश के प्रति लोगों के बढ़े हुए आत्मविश्वास को देखते हुए हर वर्ग और हर परिवार के भारतवासी मिलकर 'आशीर्वाद का दीया' जला रहे हैं। यह दीप केवल एक प्रतीक नहीं, बल्कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रति देशवासियों के स्नेह, शुभकामनाओं और आशीर्वाद की अभिव्यक्ति है। देशभर के लोग, साधु-संत प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी एवं दीर्घायु जीवन की

कामना कर रहे हैं।

कई विपक्षी साथी पूछते हैं कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्म दिन को आप 'सेवा दिवस' क्यों कहते हैं? मेरे विपक्ष के मित्रों, आपने केवल राजनीति की, हमने समाज को जोड़ने का काम किया, हमने समाज को आगे बढ़ाने का काम किया है। सेवा के शब्द का मतलब वे समझ ही नहीं सकते। जब इस देश के 80 करोड़ परिवारों तक घर-घर अनाज पहुंचता है, जब कोरोना जैसी आपदा के समय पूरे देश को एक सूत्र में बांधकर चलाने वाला व्यक्तित्व एक आवाज पर पूरे देश को एकजुट होने के लिए तैयार कर देता है, जब मुफ्त वैक्सीन के माध्यम से 200 करोड़ से अधिक डोज देने का काम होता है, जब 12 करोड़ परिवारों तक शौचालय की सुविधा पहुंचाई जाती है, जब गरीबों के खाते खुलवाए जाते हैं, गरीबों को बैंक के दरवाजे तक पहुंचने का मौका मिलता है और उन्हें स्वाभिमान के साथ जीने का अवसर दिया जाता है, तो ऐसे नेतृत्वकर्ता के जन्मदिन को हम सेवा दिवस के रूप में क्यों न मनाएं? जिस सेवा के भाव और जिस सेवा के कार्यक्रम को लेकर पिछले 25 वर्षों में प्रधानमंत्री जी ने तपस्या और समर्पण के जिस भाव से इस देश के लोगों की सेवा की



है, वह अभिनंदनीय है। मध्य प्रदेश की जनता की तरफ से प्रधानमंत्री जी के यशस्वी जीवन की कामना करते हैं और उनके दीर्घायु होने की कामना करते हैं। प्रधानमंत्री जी, आप इसी प्रकार देश का नेतृत्व करते रहिए। पूरे 140 करोड़ देशवासी आपको आज आशीर्वाद देते हैं और आपके लिए आशीर्वाद का दिया जला रहे हैं।

पहले हमारे राष्ट्रध्यक्ष देश और दुनिया में जाते थे, तो पहली पंक्ति में बैठने के लिए भी जगह की तलाश करनी पड़ती थी। आज विश्व के अंदर 35-36 से अधिक देश भारत के प्रधानमंत्री को सर्वोच्च सम्मान से सम्मानित करते हैं। यह 140 करोड़ देशवासियों का सम्मान होता है। यह सम्मान हमारे उस काम का होता है, जो नरेन्द्र मोदी जी ने इस देश के लिए किया है। यह सम्मान उस गरीब का होता है, जिसको आगे बढ़ाने का काम उन्होंने किया है। 25 करोड़ परिवारों को गरीबी रेखा से बाहर लाने का काम किसी ने किया, तो हमारे नेता प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने किया। इसीलिए आज विश्व में उनका डंका बज रहा है। जब प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन को हम मना रहे हैं, तो तीन ऐसे मंत्र और सूत्र हैं, जो प्रधानमंत्री जी के जीवन से सीधे दिखाई देते हैं। पहला है अंत्योदय का भाव। पहले लोग योजनाओं का नाम लिखते थे तो देखते थे कि किसको देना है,



किस समाज को देना है। उनके चरमे से गरीब जनता नहीं दिखती थी, उन्हें अपना वोट बैंक दिखता था। लेकिन माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में हर योजना में पहला नाम गरीब का होता है और पहला पता गांव का होता है, जिस गांव से भारत की जनता जानी जाती है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी 'प्रधान सेवक' हैं। पहले कांग्रेस की सरकारों में दिल्ली से 1 रुपया चलता था तो गरीब के खाते में केवल 15 पैसा ही पहुंचता था लेकिन हमारे प्रधान सेवक ने यह सुनिश्चित किया कि अगर दिल्ली से 1 रुपया चलेगा, तो गरीब के खाते में पूरा का पूरा 1 रुपया पहुंचेगा। यही हमारे प्रधान सेवक की प्राथमिकता है। 'राष्ट्र प्रथम' के नारे से राष्ट्र को एक सूत्र में बांधकर चलने वाले व्यक्तित्व हैं हमारे प्रधानमंत्री जी। प्रधानमंत्री जी ने अपने नेतृत्व में इस देश की विरासत और संस्कृति को आगे बढ़ाने का काम किया है। अयोध्या की पवित्र भूमि पर भव्य श्री राम मंदिर का निर्माण हो या महाकाल की

धरती के पुनरुत्थान का काम, इसके लिए हम सभी उनका अभिवादन करते हैं।

हाल ही में ब्रिक्स का एक बड़ा सम्मेलन हुआ। दिल्ली के अंदर पूरे विश्व की निगाहें दिल्ली पर केंद्रित थीं और दिख रहा था कि किस प्रकार से दुनिया के शक्तिशाली मुल्क भारत के साथ कदम से कदम मिलाकर चलने को तैयार हैं। लेकिन हमारे विपक्ष के साथियों को उसमें भी मेनू दिख रहा था, उनको दिख रहा था कि खाने की रेसिपी क्या बनी है। अरे, आपको यह नहीं दिखा कि विश्व के शक्तिशाली देश एक साथ मिलकर वृक्षारोपण करते हैं और 'एक पेड़ मां के नाम' लगाकर इस विश्व को संदेश देने का काम करते हैं? प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन पर पूरा देश उन्हें आशीर्वाद देना चाहता है। विपक्ष के कुछ लोग पूछते हैं कि इतना बड़ा आयोजन क्यों हो रहा है? लोग 'आशीर्वाद का दिया' क्यों जला रहे हैं? मैं उन्हें विनम्रतापूर्वक जवाब देते हुए कहना चाहता हूँ कि देश में 4 करोड़ गरीब परिवारों के पक्केमकान बनते हैं और यदि उस गरीब परिवार का हर सदस्य अपने परिवार के साथ मिलकर अपने उस नेता और नेतृत्वकर्ता के लिए दिया जलाते हैं, आशीर्वाद देते हैं तो आपको आपत्ति क्यों होती है? यह बदलाव नरेन्द्र मोदी जी के यशस्वी नेतृत्व में आया है। ■

ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलेगी - हेमंत खण्डेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शुरू की गई स्वामित्व योजना को प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जमीन पर उतार रहे हैं। बड़े सौभाग्य का दिन है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस के अवसर पर भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने स्वामित्व योजना का शुभारंभ किया। स्वामित्व योजना ग्रामीण भारत की तस्वीर बदलने का कार्य कर रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के रूप में देश को एक ऐसा प्रधान सेवक मिला है, जिन्होंने गांव, गरीब, किसान, महिला युवा सहित सभी वर्गों की चिंता की है।

प्रधानमंत्री जी ने पीएम आवास योजना के जरिए करोड़ों लोगों को पक्के मकान दिए। उज्जवला योजना के जरिए करोड़ों माताओं-बहनों को गैस के निःशुल्क कनेक्शन दिए। जीरो बैलेंस पर करोड़ों लोगों के बैंक में खाते खुलवाए। ग्रामीण भारत के मर्म को समझकर स्वामित्व योजना लागू करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का हृदय से आभार प्रकट करता हूँ।

ग्रामीण भारत के लोग सैकड़ों साल से अपनी प्रापर्टी पर रहते तो हैं, लेकिन उनके पास उस जमीन का कोई वैध दस्तावेज नहीं होता। ऐसे में वह न तो उस प्रापर्टी पर कोई ऋण ले सकते थे और न ही उसका किसी दूसरे

प्रयोजन में उपयोग कर सकते थे। स्वामित्व योजना के जरिए मध्यप्रदेश सरकार प्रदेश के 50 लाख लोगों को निःशुल्क रजिस्ट्री कराकर उनके घर के दस्तावेज उन्हें देने जा रही है। इस योजना से 50 लाख परिवारों के बच्चों का भी भविष्य सुरक्षित होगा। लोकमाता देवी अहिल्या बाई होल्कर की नगरी इंदौर से स्वामित्व योजना लागू हो गई है। लोकमाता देवी अहिल्या बाई होल्कर ने हमें सिखाया कि शासन की सर्वोच्च प्राथमिकता लोक कल्याण है। स्वामित्व योजना को लागू करके मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश सरकार लोक कल्याण के भाव को साकार कर रही है। ■

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के शासन प्रमुख के रूप में 25 वर्ष पूर्ण होने पर विश्लेषण परमार्थ को समर्पित 25 वर्ष

निःसंदेह मोदी जी महानायक हैं, मोदी जी महापुरुष हैं, मोदी जी जन-जन के अंतरात्मा की आवाज हैं, मोदी जी जन-जन का विश्वास हैं, मोदी जी जन-जन में भविष्य की आशा-विश्वास का मजबूत आधार हैं, मोदी जी की कार्यशैली, विचार, देश के प्रति समर्पण अदभुत है, चमत्कारिक नेतृत्व के धनी मोदी जी के 25 वर्षों की राष्ट्रसेवा की, परमार्थ यात्रा अगले पड़ाव की ओर बढ़ रही है। मोदी जी की कार्यशैली अदभुत है, गुजरात में बड़ौदा नगर निगम में भाजपा का झंडा लहराया, अहमदाबाद में भाजपा का झंडा ऐसा लहराया की लहराता ही जा रहा है, लाल किले पर झंडा लहराया तो ऊंचे से ऊंचा होकर पूरी शान से और ऊंचा लहरा रहा है। लाल चौक भी तिरंगा मय है।

जनता की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं, सुखशांति, दर्द, चिंता का पूरी तरह एहसास, सरकार के कर्तव्यों के प्रति सजग, सचेत, चिंतित जो व्यक्ति है, अहंकार से रहित, स्वयं को प्रधान सेवक मानकर जनता के प्रति समर्पण भाव से सदैव प्रयासरत जो व्यक्तित्व, कार्य शैली है उसका नाम नरेंद्र मोदी है, जिसके हृदय में गरीब से गरीब व्यक्ति का उत्थान, बुजुर्गों की चिंता, माता- बहनों-बेटियों के सम्मान के साथ-साथ भारत निर्माण में भूमिका, युवाओं को उन्नत भविष्य, किसानों का उत्थान, कृषि को लाभ का व्यवसाय बनाने का विचार, जो कभी भारत का अंतिम गांव हुआ करता था, उसे भारत का प्रथम गांव मानकर विकास द्वार खोलना, जिस अरुणाचल प्रदेश में भारत के प्रधानमंत्री का कभी हेलीकॉप्टर भी नहीं उतर सकता था उस अरुणाचल प्रदेश में ब्रह्मोस मिसाइल तैनात करना, नक्सलवाद के जहर से भारत को मुक्त करना, नक्सलवाद से प्रभावित इलाकों को विकास की मुख्य धारा में शामिल करना, लाल चौक पर शान से लहराता तिरंगा, भारत की सेना को कभी दिल्ली के रुख का इंतजार करना पड़ता था, उस सेना का खोया सम्मान, शौर्य वापस करना, सेना की लंबित मांगों को पूरा करना, वन रैंक-वन पेंशन लागू करना, सेना का आधुनिकीकरण, वह भी इस स्तर पर आधुनिकीकरण कि विश्व की सर्वश्रेष्ठ सेना का



सम्मान मिले, आधुनिकीकरण भी स्वदेशी स्तर पर जो आवश्यकता के वक्त पर धोखा ना मिले, ऊर्जा आवश्यकताओं जैसी भीषण समस्या को भांपकर वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का निर्माण, नभ-जल-थल से भ्रष्टाचार का उन्मूलन, गरीब से गरीब के लिए बैंक के दरवाजे खोलना, कोई भी भारतीय इलाज के अभाव में ना रहे, कोई भी भारतीय भूख ना सोए, गरीब से गरीब के लिए स्वच्छ ईंधन, आज भारत का कोई भी गांव ऐसा नहीं बचा जहां बिजली ना पहुंची हो, आधुनिक से आधुनिक इंफ्रास्ट्रक्चर का निर्माण, दुतगामी परिवहन व्यवस्था, किसानों, युवाओं, महिलाओं, मजदूरों, व्यापारियों, ग्रामीणों, शहरियों किसी के भी बारे में देख लीजिए, ऐसा लगता है, मोदी जी के पास इतना विश्लेषण उपलब्ध है, कि वो जितना प्रयास कर रहे हैं, लाभार्थियों की भी कल्पना से परे है, सभी संभव प्रयासों को मूर्त रूप देने के कारण आज भारत विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था की और अग्रसर है, भारत आज सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था यूं ही नहीं है, मोदी जी की नीतियों की सफलता के कारण आज भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है, 25 करोड़ लोग गरीबी रेखा से बाहर आए, इसका अर्थ

है- मोदी जी के प्रयासों से 25 करोड़ गरीबी रेखा के नीचे के लोगों की अर्थव्यवस्था में बहुत बड़ा परिवर्तन आया है अर्थात 25 करोड़ गरीब परिवारों को शासन से मिलने वाली सहायता राशि ठीक से खातों में पूरी-पूरी पहुंच रही है, गरीबों के लिए रोजगार के रास्ते खुले हैं, गरीबों के व्यापार- व्यवसाय को सहयोग पहुंचाने में सरकार को सफलता मिली है, बीमारी में लुट जाने वाले गरीबों के स्वास्थ्य प्रबंधन में सरकार सफल रही है, गरीबों को आवास, बिजली, पानी, स्वच्छ ईंधन के कार्यक्रमों ने गरीबों के जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला है, 60 करोड़ और जो लोग गरीबी रेखा के ऊपर आने की तैयारी में हैं- इसका अर्थ है सरकार के कार्यक्रम हर भारतीय के जीवन स्तर में सुधार लाने में सफलता पा रहे हैं, नभ-जल-थल में सरकार के प्रयासों की सफलता ही वह कारण है जिसके कारण वैश्विक आपदाओं और वैश्विक अनिश्चितताओं के बाद भी भारत प्रगति के पथ पर अग्रसर है, मोदी जी के 25 वर्षों के शासन का अगर एक लाइन में विश्लेषण किया जाए तो यह कहा जा सकता है मोदी जी का ध्येय परमार्थ के लिए सतत प्रयास है और इन्हीं प्रयासों का परिणाम है हर दिल में मोदी जी हैं। ■

मोदी जी के शासन प्रमुख के रूप में 25 वर्षों पर विशेष आलेख संकल्प से सिद्धि की यात्रा

15 अगस्त 1947

से प्रारम्भ होकर 15 अगस्त 2026 तक के स्वतंत्र भारत की यात्रा पूर्ण हो चुकी है। इस यात्रा में कई पड़ाव आए, विभिन्न राजनीतिक दलों के विभिन्न नेताओं ने देश का नेतृत्व किया और अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार, राजनैतिक बाध्यताओं के अनुसार देश की विकास यात्रा में योगदान दिया। इस यात्रा का भारत की राजनीति में अति महत्वपूर्ण, विशिष्ट एवं सकारात्मक पड़ाव श्री नरेंद्र मोदी जी के मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री बनने के बाद आया, आज सारा संसार एक मत से मानने लग गया है कि भारत की दशा व दिशा मोदी जी के कारण नित्य नए स्तर को छू रही है। मोदी जी की मेहनत, लगन, देश प्रेम व दूरदर्शिता का ही परिणाम है कि आज भारत विश्व से मांगने वाला देश नहीं बल्कि विश्व की सहायता करने वाला देश बन चुका है। विदेशी निर्भरता लगातार कम होती जा रही है। देश आत्मनिर्भर भारत की दिशा में तेजी से अग्रसर है। आयात को निर्यात में भी बदला जा सकता है, देश ने अनुभव किया। कई बार प्रश्न आते हैं, मोदी जी के नेतृत्व में ही भारत क्यों आगे बढ़ रहा है? इतनी तेजी से तथा इतने बड़े स्केल पर परिवर्तन कैसे संभव हो पाया? भारत तो मोदी जी के मुख्यमंत्री एवं प्रधानमंत्री बनने से पहले भी भारत ही था। मोदी जी ने ऐसा क्या कर दिया कि हर क्षेत्र में भारत नए-नए कीर्तिमान स्थापित कर अपने ही बनाए कीर्तिमान तोड़ भी रहा है। वैश्विक अनिश्चितताओं व वैश्विक समस्याओं के बाद भी मोदी जी देश की जनता को संकटों से बचाकर इस तरह ले जाते हैं जैसे संकट भारत के धरातल को छूने के लिए नहीं आया था। विश्व में राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई है। युद्ध के कारण कोहराम मचा हुआ है पर भीषण वैश्विक संकटों के बावजूद भारत का विदेशी मुद्रा भंडार नित्य नई ऊंचाइयों को छू रहा है। प्रत्यक्ष कर संग्रह की सीमा अपने आप हर महीने बढ़ रही है। जीडीपी 7.8 प्रतिशत को छू रही है। मोदी जी का गणित आमजन की समझ से परे है और शायद कोई कितना भी विश्लेषण कर ले हर विश्लेषण आधा-अधूरा ही



रहेगा, क्योंकि मोदी जी के गणित का विश्लेषण करने के लिए नरेंद्र मोदी ही बनना पड़ेगा, 140 करोड़ देशवासियों को एक ही दृष्टि से एक ही समान मानकर, अपना परिवार मानकर, परिजन के रूप में ध्यान में रखकर, पूरी संवेदनशीलता एवं दूरदृष्टि के साथ निर्णय लेना होगा, देश का प्रत्येक नागरिक एक समान, कोई अपना नहीं-कोई पराया नहीं, कोई निकट नहीं-कोई दूर नहीं, पंक्ति के अंतिम व्यक्ति की चिंता सबसे पहले, माता, बहनों, बेटियों के लिए मोदी जी दूसरे देश से दो-दो हाथ करने में भी तनिक भी हिचक

या देरी नहीं करते, माताओं-बहनों-बेटियों के आशीर्वाद-राखी-शुभकामनाओं की लाज पूरे समर्पण भाव से चुकाकर ही चैन लेते हैं और दुस्साहस करने वालों का इतना बेहतरीन इलाज हो जाता है कि पीढ़ियां भी आंख उठाकर देखने का साहस न बटोर पाती हैं। कुल मिलाकर सभी विश्लेषकों का विश्लेषण यह तो सिद्ध करता है कि मोदी जी की 140 करोड़ लोगों के प्रति संवेदनशीलता, देशभक्ति व दूरदृष्टि मोदी जी को चैन से नहीं बैठने देती है, समाज का प्रत्येक वर्ग चाहे कोई कितना भी कमजोर क्यों ना हो, राजनीतिक रूप से लाभप्रद भी ना हो, पर मोदी जी के सामने वह भारतवासी है और मोदी जी प्रथम सेवक के रूप में खड़े हैं।

इस प्रकार देखा जाए तो मोदी जी ने प्रधान सेवक को प्रथम सेवक बनाकर प्रत्येक भारतवासी के मन में सरकार के प्रति भाव ही बदल दिया है। सरकारों के प्रति नकारात्मक छवि को सकारात्मक बनाने में विशेष सफलता पाई है। जिसके चलते आज देशवासियों में उत्साह भरा हुआ है। युवा, किसान, महिला, मजदूर, बुजुर्ग, बच्चे, गरीब हर कोई-हर कदम पर मोदी जी का साथ पाते हैं, इसलिए मोदी जी जन-जन का सहारा बनकर जन-जन का विश्वास जीतने में सफल रहे हैं।

आज देश 12वीं अर्थव्यवस्था से तीसरी अर्थव्यवस्था बनने जा रहा है। विकसित भारत @2047 का संकल्प सिद्धि का इंतजार कर रहा है। सभी संभावनाओं का आधार, तना व फूल पत्ती, शाखाएं व फल, फलों से लदे विशाल वृक्ष का कारण-भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी रूपी सूरज हैं जो स्वयं अपने आप को तपाते हैं, पर दूसरों के जीवन में आशा-विश्वास व जीवन का संचार करने में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ते हैं, मोदी जी भारतवासियों के लिए नागरिक देवो भव का मंत्र लेकर चलते हैं।

ऐसे मोदी जी की शासन प्रमुख के रूप में यात्रा न केवल अनुकरणीय है, पथ-प्रदर्शक है, रोचक है, अविस्मरणीय है बल्कि यह यात्रा सिद्ध करती है राजनीति में काम करने का उद्देश्य गरीब कल्याण व मातृ भूमि के लिए अपना जीवन अर्पित करने का लक्ष्य ही होता है। ■



“सेवा संकल्प अभियान” सफलतापूर्वक जारी -हेमंत खण्डेलवाल

- बूथ से प्रदेश स्तर तक सतत संवाद और समन्वय संगठन की मजबूती का मूल आधार।
- संगठन और कार्यकर्ताओं की सक्रियता से ‘मन की बात’ में लोगों की सहभागिता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
- “सेवा संकल्प अभियान” में बेहतर कार्य हुआ, आगे के कार्यक्रम और प्रभावी तरीके से संपन्न कराए।
- नियमित बैठक, प्रवास और प्रशिक्षण से संगठन होगा मजबूत।



संगठन को और अधिक सक्रिय एवं मजबूत बनाने के लिए जिला, मंडल और बूथ स्तर तक नियमित बैठक, प्रवास और कार्यकर्ताओं से सीधा संवाद सुनिश्चित किया गया है। जिलों और संभागों की बैठकों का कार्यक्रम तय किया गया है। प्रदेश के पदाधिकारी जिलों में पहुंचकर संगठनात्मक गतिविधियों की समीक्षा कर रहे हैं और कार्यकर्ताओं से संवाद स्थापित कर रहे हैं। संगठन की सक्रियता का असर बूथ स्तर पर भी दिखाई दे रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी जी के ‘मन की बात’ कार्यक्रम में बूथ स्तर की सहभागिता में पिछले कुछ महीनों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। सेवा संकल्प अभियान के अंतर्गत मध्यप्रदेश में बेहतर कार्य हो रहे है। आगामी कार्यक्रमों को भी बेहतर करने के लिए कार्यकर्ता जुटे हुए हैं।

मंडल अध्यक्ष, शक्ति केंद्रों और बूथ की टोली के साथ नियमित बैठकें तथा शक्ति केंद्र प्रभारी और बूथ टोली के बीच बेहतर समन्वय सुनिश्चित करें। इसी व्यवस्था के माध्यम से संगठन की गतिविधियों को नीचे तक और अधिक प्रभावी बनाया जा सकेगा।

जिला प्रभारियों को जिला कोर कमेटी के साथ नियमित बैठक करने के निर्देश दिए गए हैं

और इन बैठकों में आने वाले विषयों, सुझावों और संगठनात्मक आवश्यकताओं को जिला नियमित प्रभारी के माध्यम से संभाग प्रभारी तक पहुंचाया जाएगा, ताकि आवश्यक कार्रवाई समय पर सुनिश्चित हो सके।

संगठन में संवाद की यह सतत प्रक्रिया प्रदेश से लेकर बूथ तक कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय को मजबूत करने का माध्यम है। साथ ही, प्रशिक्षण गतिविधियों को भी लगातार विस्तार दिया जा रहा है। नियमित बैठक, प्रवास, प्रशिक्षण और बूथ स्तर तक सतत संपर्क के माध्यम से संगठन को और अधिक सक्रिय बनाते हुए जमीनी स्तर तक मजबूत किया जाएगा। ■

ऐसा कार्य करें कि कार्यकर्ता याद करें -बिप्लब कुमार देब

संगठन में दायित्व मिलना या दायित्व से हटना स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन किसी भी परिस्थिति में कार्यकर्ता की नाराजगी संगठन से नहीं जुड़नी चाहिए। संगठन में काम करने वाले प्रत्येक पदाधिकारी की जिम्मेदारी है कि वह अपने क्षेत्र में कार्यकर्ताओं से संवाद बनाए रखें और संगठनात्मक कारणों से किसी भी

कार्यकर्ता में असंतोष न रहे। जिस पदाधिकारी को जो दायित्व मिला है, वह अपने दायित्व को पूरी जिम्मेदारी से निर्वहन करें। संगठन में मंडल, जिला, संभाग, शक्ति केंद्र, बूथ और पन्ना प्रमुख तक दायित्वों की स्पष्ट व्यवस्था है। प्रत्येक स्तर का पदाधिकारी अपने दायित्व का प्रभावी निर्वहन करें, यही संगठन की मजबूती का आधार है। पद स्थायी नहीं होता, लेकिन

कार्यकर्ता के बीच किया गया काम और बनाया गया विश्वास याद रहता है। इसलिए पदाधिकारी अपने कार्यकाल में ऐसा काम करें कि पद समाप्त होने के बाद भी कार्यकर्ता उन्हें सम्मान और विश्वास के साथ याद करें।

भाजपा के लिए राजनीति सत्ता का नहीं, बल्कि सेवा का माध्यम है। संगठन और सरकार बेहतर तालमेल के साथ काम करने



का सकारात्मक लाभ मध्यप्रदेश की जनता को मिलता है। भाजपा में लोकतांत्रिक संवाद और सामूहिक निर्णय की परंपरा है। सभी नेता और कार्यकर्ता मिलकर संगठन को मजबूत करने के लिए काम कर रहे हैं और आगे भी इस कार्य को निरंतर बनाए रखेंगे। शालीनता, अनुशासन और संवाद भाजपा की कार्य संस्कृति की पहचान है। नेतृत्व के बीच समन्वय और संवाद को और मजबूत किया जाएगा। संगठन के प्रत्येक कार्यकर्ता और पदाधिकारी का आचरण पार्टी की

मर्यादा और परंपराओं के अनुरूप होना चाहिए। कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी को यह बताना चाहिए कि कांग्रेस के लंबे शासनकाल में आदिवासी क्षेत्रों के विकास और वहां की समस्याओं के समाधान के लिए क्या ठोस कदम उठाए थे। राहुल गांधी कांग्रेस के शासनकाल का हिसाब जनता को दें। भाजपा दिखावे की राजनीति नहीं, बल्कि निरंतर जनसेवा में विश्वास करती है। भाजपा का कार्यकर्ता केवल चुनाव के समय नहीं, बल्कि हर समय

जनता के बीच रहता है। मध्यप्रदेश में संगठन की मजबूत परंपरा और अनुभवी कार्यकर्ताओं की बड़ी टीम है। ऐसे में सरकार और संगठन दोनों की जिम्मेदारी संभाल रहे पदाधिकारियों के सामने कार्यकर्ताओं से निरंतर संवाद बनाए रखने की विशेष जिम्मेदारी है। मध्यप्रदेश के कार्यकर्ता संगठन की अपेक्षाओं पर खरे उतरेंगे और पद से अधिक संगठन तथा व्यक्तिगत हित से ऊपर कार्यकर्ता के सम्मान और विश्वास को प्राथमिकता देंगे। ■

योजनाएँ और उपलब्धियाँ जनता तक पहुंचाएँ - श्रीमती रेखा वर्मा

मध्यप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी का संगठन मजबूत और सक्रिय है। बैठक में संगठन को लेकर जो मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, उस पर पूरी गंभीरता और प्राथमिकता के साथ फोकस करते हुए आगे बढ़ेंगे। बूथ स्तर तक संगठन को और अधिक मजबूत करने के साथ ही कार्यकर्ताओं के बीच बेहतर समन्वय और संवाद स्थापित किया जाएगा। सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं उपलब्धियों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य भी निरंतर जारी रहेगा। पंचायत से लेकर विधानसभा

और लोकसभा चुनाव तक संगठन पूरी तैयारी और एकजुटता के साथ मैदान में उतरेगा तथा कार्यकर्ताओं की मेहनत और सामूहिक प्रयासों के आधार पर आगामी पंचायत, विधानसभा और लोकसभा चुनावों में सफलता हासिल करेगा। संगठन को लेकर मिले मार्गदर्शन को पूरी गंभीरता के साथ लेकर हमें संगठन की प्राथमिकताओं और निर्देशों को कार्यकर्ताओं तक प्रभावी ढंग से पहुंचाना होगा। प्रदेश से लेकर बूथ स्तर तक संगठनात्मक गतिविधियों को और सक्रिय करना होगा, ताकि कार्यकर्ताओं के साथ निरंतर संवाद और समन्वय को

प्राथमिकता दी जा सके।

संगठन के प्रत्येक दायित्व का पूरी निष्ठा और जिम्मेदारी के साथ निर्वहन करना हमारी प्राथमिकता में शामिल होना चाहिए। इसके लिए कार्यकर्ताओं की सहभागिता बढ़ाने के लिए नियमित बैठक और प्रवास करने के साथ-साथ बूथ स्तर तक संगठन की गतिविधियों को मजबूत करने पर विशेष ध्यान देना होगा। संगठन की कार्यपद्धति के अनुरूप सभी कार्यों को गति देकर सामूहिक प्रयासों से संगठन को और अधिक मजबूत एवं सक्रिय किया जाना हम सभी का नैतिक कर्तव्य है। ■

कार्यकर्ता ही भाजपा की असली ताकत - चंद्रशेखर

भाजपा आज जिस मुकाम पर पहुंची है, उसके पीछे वर्षों का संघर्ष, त्याग और लाखों कार्यकर्ताओं की मेहनत का परिणाम है। अनेक कार्यकर्ताओं ने संगठन को मजबूत करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया है। इसलिए हमारी जिम्मेदारी है कि संगठन की इस विरासत को आगे बढ़ाते हुए जनसेवा को अपना मूल आधार बनाकर जनता के विश्वास को हमेशा कायम रखना है। संगठन की मजबूती, कार्यकर्ताओं की एकजुटता और निरंतर

जनसेवा के माध्यम से हम आने वाले समय में पार्टी को और अधिक मजबूत बनाएंगे। मध्यप्रदेश भाजपा के संगठनात्मक कार्यों और कार्यपद्धति को देश में एक ऑर्दश के तौर पर देखा जाता है। हमारी सबसे बड़ी ताकत हमारे कार्यकर्ता हैं, इसलिए हमें संगठन में सभी को साथ लेकर चलना है और आपसी समन्वय के साथ आगे बढ़ना है। देश की जनता का जो जनविश्वास भारतीय जनता पार्टी के प्रति बना है, उसे और मजबूत करना हम सभी की जिम्मेदारी है। वर्ष 2014 में प्रधानमंत्री

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनने के बाद देश में विकास, सुशासन और जनकल्याण के क्षेत्र में व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है। कार्यकर्ताओं को जनता के बीच जाकर उनकी समस्याओं को समझना होगा और सरकार की योजनाओं से उन्हें जोड़ने का प्रयास करना होगा। प्रदेश में सेवा संकल्प अभियान भी बेहतर तरीके से चल रहा है और आगामी कार्यक्रम भी पूरी गति, समन्वय और सफलता के साथ संचालित हो यह सुनिश्चित करना है। ■



रामराज्य की संकल्पना होगी साकार - डॉ. मोहन यादव

- प्रधानमंत्री जी ने सार्वजनिक जीवन के 25 वर्षों में सेवा भाव को भी किया चरितार्थ।
- प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में बदल रही देश की तस्वीर।
- सेवा और समर्पण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है नया भारत।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश को भव्य और दिव्य श्रीराम मंदिर की सौगात दी। इसके साथ ही राम राज्य की संकल्पना को साकार करते हुए हर गरीब को घर, पर्याप्त भोजन और बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा सुविधा उपलब्ध हो रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार रामराज्य की संकल्पना को साकार करते हुए हर वर्ग के कल्याण का कार्य

कर रही है।

वड़नगर से वाराणसी और वाराणसी से वड़नगर तक 35 हजार किलोमीटर से अधिक दूरी की बाइक सेवा यात्रा निकाली जा रही है। लगभग 17 हजार किलोमीटर यात्रा अर्थात आधी से अधिक दूरी मध्यप्रदेश की धरती पर तय होगी। प्रदेश का युवा जिम्मेदार और जागरूक बनें उनके आधार पर ही भविष्य का मध्यप्रदेश और देश समृद्ध बनेगा। मध्यप्रदेश में बेरोजगारी दर देश में सबसे कम है। ■

दुनिया का नेतृत्व करेगा भारत - हेमंत खण्डेलवाल

- मोदी जी ने पक्की छत, बिजली, गैस, पानी और इलाज की सुविधाएं देकर सेवा का नया अध्याय लिखा।
- जल, जन और सेवा संकल्प यात्रा संवाद और पर्यावरण संरक्षण का संदेश दे रही।



जल, जन और सेवा संकल्प यात्रा के माध्यम से युवाओं को देश के विभिन्न क्षेत्रों, भाषाओं, संस्कृतियों और सभ्यताओं को देखने-समझने का अवसर मिल रहा है। जब युवा एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जाते हैं तो उन्हें भारत की विविधता दिखाई देती है। अलग-अलग क्षेत्रों की अपनी भाषा, संस्कृति और परंपराएं हैं, लेकिन भारत माता के प्रति समर्पण की भावना पूरे देश को एक सूत्र में बांधती है। सभ्यताएं और भौगोलिक परिस्थितियां भले बदलती रहें, लेकिन भारत माता की आवाज और देश की एकता सदैव मजबूत रहनी चाहिए। देश विकसित भारत-2047 के संकल्प को पूरा करने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। आने वाले समय में देश के युवा भारत का नेतृत्व करेंगे और भारत दुनिया का नेतृत्व करेगा। इसी संकल्प और

भावना को जन-जन तक पहुंचाने के लिए युवा साथी इस यात्रा पर निकले हैं और एक-एक स्थान पर पहुंचकर सेवा कार्य कर रहे हैं। यात्रा में शामिल युवा साथी मध्यप्रदेश में जहां भी जाएं, यहां उन्हें जो अच्छा लगे उसे साझा करें और यदि किसी प्रकार की समस्या या कठिनाई सामने आए तो हमें भी बताएं, ताकि मिलकर उसका समाधान किया जा सके। युवा एक-एक गांव तक पहुंच रहे हैं, यह सराहनीय है।

युवा यात्रा के बड़े मिशन पर निकले हैं। सेवा यात्री प्रतिदिन 150 से 200 किलोमीटर मोटर साइकिल से यात्रा करने के साथ विभिन्न सेवा कार्यों में सहभागिता कर साहस, सेवा और समर्पण का परिचय दे रहे हैं। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र

मोदी जी की प्रेरणा से यात्रा में शामिल सभी यात्री एक बड़े मिशन पर निकले हैं। यह यात्रा अलग-अलग क्षेत्रों, संस्कृतियों और वहां के लोगों से रूबरू होने का अवसर प्रदान कर रही है, जो सभी के लिए एक नया अनुभव है। यात्रा के दौरान विभिन्न क्षेत्रों के लोगों से संवाद हो रहा है और उनकी जीवनशैली, संस्कृति तथा स्थानीय विशेषताओं को करीब से समझने का अवसर मिल रहा है। सेवा केवल समाज के प्रति दायित्व तक सीमित नहीं है, बल्कि प्रकृति और पर्यावरण की रक्षा भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। जल, जन और सेवा संकल्प यात्रा वड़नगर से वाराणसी तक विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों से होकर गुजर रही है। ■



भारत की प्रतिष्ठा नई ऊंचाइयों पर - लाल सिंह आर्य

- प्रधानमंत्री जी के सेवा एवं तपस्या से भारत नव उत्कर्ष की ओर तेजी से आगे बढ़ रहा है।
- प्रधानमंत्री जी ने देश के सर्वांगीण विकास के साथ वैश्विक पटल पर भारत की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयाँ दीं।
- प्रधानमंत्री जी ने कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सेवा संकल्प के कार्यों को बढ़ाया।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विकसित और समृद्ध भारत, आत्मनिर्भर एवं जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से सेवा संकल्प के कार्यों को बढ़ा रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में विकसित और समृद्ध भारत के लिए जनकल्याणी योजनाएं हर समाज को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ आत्मनिर्भर बनाने का कार्य कर रही हैं। प्रधानमंत्री जी का सेवा, समर्पण, त्याग एवं तपस्या तथा भारत को नव-उत्कर्ष

पर ले जाने का संकल्प हम सभी के लिए परम प्रेरणास्रोत है। गरीबों, महिलाओं एवं युवाओं के सशक्तिकरण से लेकर देश के सर्वांगीण विकास व वैश्विक पटल पर भारत की प्रतिष्ठा को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए उनका संपूर्ण जीवन राष्ट्र को समर्पित है। प्रधानमंत्री जी ने वाराणसी से वड़नगर सेवा यात्रा के यात्रियों तथा विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों से सीधे बातचीत कर उनके अनुभव जाने और उनका उत्साहवर्धन किया। ■

मोदी जी ने योजनाओं से बदला जीवन - विष्णुदत्त शर्मा

- सेवा, स्वच्छता और जल संरक्षण के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही युवा शक्ति
- गरीब कल्याण की योजनाओं से बदले जीवन का अनुभव जान रहे सेवा यात्री
- जनसेवा और गरीब कल्याण की भावना को मजबूत कर रही सेवा यात्रा।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के सेवा और समर्पण के 25 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में भारतीय जनता पार्टी द्वारा

‘सेवा संकल्प अभियान’ के अंतर्गत सेवा यात्रा प्रारंभ की गई है। यह यात्रा सेवा, स्वच्छता, जल संरक्षण और जनसेवा के संकल्प के साथ आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री जी ने 7 अक्टूबर 2001 को गुजरात के मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। आगामी 7 अक्टूबर को उनके सार्वजनिक जीवन में मुख्यमंत्री पद से लेकर जनसेवा और राष्ट्रसेवा के 25 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इसी भाव को लेकर देश के युवाओं ने सेवा के संकल्प के साथ यह यात्रा प्रारंभ की है। यह यात्रा देश के युवाओं की सेवा भावना, उत्साह और संकल्प का परिचय दे रही है। प्रधानमंत्री जी ने देश के युवाओं में सेवा की भावना और आत्मविश्वास जगाने का कार्य किया है। सेवा यात्रियों द्वारा यात्रा के

दौरान पौधारोपण, स्वच्छता अभियान, जल संरक्षण, नशामुक्ति तथा टीबी मुक्त भारत के लिए जनजागरण जैसे कार्य किए जा रहे हैं। युवा विभिन्न क्षेत्रों में पहुंचकर लोगों को स्वच्छता और नशामुक्ति का संकल्प दिला रहे हैं तथा जनभागीदारी के माध्यम से सेवा का संदेश दे रहे हैं। सेवा यात्री उन परिवारों और बहनों से भी संवाद कर रहे हैं, जिनके जीवन में प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की गरीब कल्याण की योजनाओं तथा मध्यप्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं से सकारात्मक बदलाव आया है। उनके अनुभवों को जानकर सेवा यात्रियों का उद्देश्य सरकार की योजनाओं और उनके प्रभाव को समाज के सामने लाना भी है। ■

सेवा यात्रा से सेवा और राष्ट्र निर्माण का संदेश

भारतीय जनता युवा मोर्चा (BJYM) की सेवा संकल्प यात्रा मध्य प्रदेश, राजस्थान और उत्तर प्रदेश में जारी रही। इन तीनों राज्यों में 20 यात्राएं विभिन्न स्थानों पर सेवा कार्यों और जनसंवाद की गतिविधियों में जुटी रहीं। इनमें 13 यात्राएं

मध्य प्रदेश, 5 राजस्थान और 2 उत्तर प्रदेश में चल रही हैं। सेवा किसी विशेष अवसर तक सीमित गतिविधि नहीं है, बल्कि समाज और राष्ट्र के प्रति निरंतर प्रतिबद्धता का भाव है।

तीनों राज्यों में सेवा यात्रियों द्वारा जल संरक्षण, वृक्षारोपण, वृद्धाश्रमों में सेवा, गौ सेवा, स्वच्छता

अभियान, लाभार्थियों से संवाद और अंगदान के संकल्प सहित विभिन्न सेवा गतिविधियां आयोजित की गईं। इन गतिविधियों के साथ स्थानीय नागरिकों और विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभार्थियों के साथ सीधे संवाद को भी प्राथमिकता दी गई। ■



15 हजार बसों का होगा विस्तार - डॉ. मोहन यादव

- जनता की सेवा के संकल्प की पूर्ति में लिखा गया नया अध्याय।
- यात्रियों की सुविधा और सुरक्षा के लिए हैं विशेष व्यवस्था।
- प्रदेशवासियों की आशा और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए राज्य सरकार प्रतिबद्ध।
- सभी क्षेत्रों में युवाओं को रोजगार और नौकरी के उपलब्ध हैं अवसर।

प्रदेशवासियों को सुगम, सुरक्षित, आधुनिक और पर्यावरण अनुकूल परिवहन सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से परिवहन विभाग द्वारा मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा शुरू की जा रही है। इस सेवा से शहरी ग्रामीण क्षेत्रों में बस कनेक्टिविटी को मजबूत किया जाएगा। प्रदेश की 75 प्रतिशत ग्राम पंचायतों तक परिवहन सेवा का विस्तार होगा। इस इण्टरसिटी और इण्टर स्टेट बस सेवा के अंतर्गत अगले 5 वर्षों में 3500 से अधिक मार्गों पर 15 हजार से अधिक बसों का चरणबद्ध विस्तार होगा। पूरे प्रदेश में नगरों, छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों तक आम आदमी के लिए सफर आसान होगा। यह ऐसा एकीकृत परिवहन तंत्र है जो यात्रा के समय को कम करेगा और सफर को अधिक सुगम बनाएगा। पूरे प्रदेश में आधुनिक-सुविधाजनक बस स्टॉप, बस टर्मिनल और निजी बस ऑपरेटरों के लिए बस डिपो विकसित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा में ऑनलाइन टिकटिंग, ईवी और सीएनजी बसों को प्राथमिकता देते हुए पर्यावरण अनुकूल आधुनिक बसें, शामिल होंगी। यात्री फीडबैक के आधार पर शिकायतों और समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए 24 घंटे कस्टमर केयर सुविधा रहेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मोत्सव 17 सितंबर से 17 अक्टूबर के अवसर पर



मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा से आसान होगा सफर।

3500 से अधिक मार्गों पर 15 हजार से अधिक बसों का चरणबद्ध रूप से होगा विस्तार।

सेवा संकल्प माह और एकात्म मानववाद के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर 21 साल बाद मध्यप्रदेश में सार्वजनिक परिवहन बस सेवा पुनः शुरू हो रही है। जनता की सेवा के संकल्प की पूर्ति का नया अध्याय लिखा गया है। हमारी सड़क परिवहन सेवाओं का लाभ प्रदेश के दूर-दराज स्थित जनजातीय क्षेत्रों को भी मिलेगा। गरीब और जरूरतमंदों के लिए प्रदेश सरकार ने सेवा का संकल्प लिया है। केंद्रीय मंत्री श्री गडकरी के माध्यम से प्रदेश में सड़कों और हाईवे का जाल बिछ रहा है।

अब मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा और पीएम ई-बस सेवा के माध्यम से सार्वजनिक परिवहन के एक आधुनिक और यूनिक मॉडल की शुरुआत हो रही है। बसों में यात्रियों की

सुविधा और सुरक्षा के लिए सीसीटीवी, पैनिंग बटन, इमरजेंसी डोर, जीपीएस मॉनिटरिंग, ऑनलाइन टिकटिंग, शिकायतों के समाधान सहित कई प्रकार से मॉनिटरिंग की व्यवस्था की गई है। बस ड्राइवर्स की ट्रेनिंग और सुरक्षा के प्रबंधन भी किए गए हैं। वर्ष 2029 तक सभी रूटों पर भगवा रंग की बसें दौड़ती नजर आएंगी, जो प्रमुख शहरों के साथ देश के प्रमुख तीर्थस्थलों और महानगरों तक आवागमन को सुगम बनाएंगी। यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए बस स्टैंड, बस स्टॉप और चार्जिंग स्टेशनों के साथ सुव्यवस्थित नियंत्रण प्रणाली भी लागू की गई है।

नक्सलवाद से मुक्त हुए बालाघाट जिले को नई सौगात मिलने जा रही है। सरकार ने प्रदेश की सुरक्षा व्यवस्था और शांति के लिए चुनौती बने सभी संकटों को समाप्त किया है। सरकार ने भोपाल से यूनियन कार्बाइड के अपशिष्ट का समुचित प्रबंधन करते हुए निष्पादन किया है। प्रदेशवासियों की आशा और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए सभी मंत्रीगण संकल्प के साथ काम कर रहे हैं।

सरकार ने बिजली, पानी, सड़क और ग्रामीण इंफ्रास्ट्रक्चर को मजबूत किया है।

सरकार सेवा, सुशासन और गरीब कल्याण के लिए लगातार काम कर रही है। सभी क्षेत्रों में युवाओं को रोजगार और नौकरी के अवसर दिए गए हैं। पिछले एक साल में 85 हजार से अधिक शासकीय पदों पर भर्ती की गई है। खनिज विभाग के निरीक्षकों को नियुक्ति पत्र सौंपे गए। पुलिस विभाग में 18 हजार पद, शिक्षक भर्ती और असिस्टेंट प्रोफेसरों की भर्ती प्रक्रिया जारी है। प्रदेश सरकार मौजूदा वर्ष में एक लाख शासकीय पदों पर भर्ती करेगी। दूसरी ओर, किसान कल्याण वर्ष में प्रदेशवासियों को दो नदी जोड़ो अभियान केन-बेतवा और पार्वती-कालीसिंध-चंबल परियोजना की सौगात मिली है। प्रदेश में गरीब-जरूरतमंदों को एयर एंबुलेंस की सुविधा मिल रही है। गरीब से गरीब की जान बचाना सरकार का संकल्प है। ■



मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा होगी लाभप्रद - नितिन गडकरी

- मध्यप्रदेश सरकार ने नवाचार के साथ सार्वजनिक परिवहन को दोबारा किया शुरू।
- सिटी बसों को दिव्यांगजनों और बुजुर्गों की सुविधा को देखते किया गया डिजाइन।

पं. दीनदयाल उपाध्याय ने समाज के आखिरी पायदान पर खड़े व्यक्ति की सेवा का मार्ग दिखाया। मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा और पीएम ई-बस सेवा की शुरुआत का यह निर्णय मध्यप्रदेश की जनता के लिए आवागमन सुविधाओं को सुगम बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसका लाभ प्रदेश के गरीब-जरूरतमंदों को भी मिलेगा। प्रदेश में राज्य परिवहन सेवा का एक दौर ऐसा भी था, जब बसों में घंटी छोड़कर सब बजता था। मध्यप्रदेश सरकार ने नवाचारी विचार के साथ सार्वजनिक परिवहन को दोबारा शुरू किया है। मध्यप्रदेश को 972 पीएम-ई बसें मिली हैं। मध्यप्रदेश में 25 हजार इलेक्ट्रिक एसी बसें चलाने की आवश्यकता है। मध्यप्रदेश में अभी 8 व्हीकल स्कैपिंग सेंटर हैं, अभी 21 और शुरू करने की आवश्यकता है। प्रदेश में 6 और ऑपरेशनल टेस्टिंग सेंटर खोलने के लिए स्वीकृति दी गई है। प्रदेश में 29 ड्राइविंग ट्रेनिंग सेंटर स्वीकृत हैं। अब 61 सेंटर और दिए जा रहे हैं। कैब एग्रीगेटर्स के साथ जुड़कर रोजगार के अवसर बढ़ाने की बहुत अधिक संभावनाएं हैं। राज्य सरकारों को इस दिशा में कार्य करना होगा, मध्यप्रदेश में इस पहल से 40 से 50 लाख युवाओं को रोजगार मिलेगा।

अब बेहतर शासन संचालन का मूल्यांकन सुखांक की गणना के आधार पर हो रहा है। सरकार जनता को अच्छी सड़कें, पानी, भोजन, स्वास्थ्य की सुविधा के माध्यम से खुशी जीवन देने की दिशा में कार्य कर रही है। बेहतर सड़कों का निर्माण भी इसी दिशा में एक प्रयास है। इसी दिशा में हम प्रदूषण को कम करना चाहते हैं। देश में 22 लाख करोड़ रुपए



देश में 22 लाख करोड़ रुपए के पेट्रोल-डीजल और गैस आयात को कम करना मिशन।

इलेक्ट्रिक मोबिलिटी सहित अन्य वैकल्पिक ईंधन की व्यवस्था आवश्यक।

का पेट्रोल-डीजल और गैस आयात होता है। इसे कम करने को ही मैंने अपना मिशन बनाया है। मुझे देश में पहली इलेक्ट्रिक बस, कार, इलेक्ट्रिक स्कूटर और ऑटो को झंडी दिखाने का सौभाग्य मिला है। देश में फ्लेक्स इंजन के साथ वाहन तैयार किए जा रहे हैं। इनमें इथेनॉल को ईंधन के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। दुनिया के कई देशों में इथेनॉल मिश्रित ईंधन से गाड़ियां चलती हैं। भारत में वर्ष 2022 से पेट्रोल में इथेनॉल को मिलाकर फ्यूल डाला जा

रहा है। अभी देशभर में 4 करोड़ फोर व्हीलर और 20 करोड़ टू-व्हीलर में यह फ्यूल डाला जा रहा है। एक रिपोर्ट में सामने आया है कि इथेनॉल के इस्तेमाल से वाहन को नुकसान नहीं होता, बल्कि गाड़ी का एवरेज भी बढ़ा है। देश का किसान अब अन्नदाता से ऊर्जादाता भी बना है।

इलेक्ट्रिक मोबिलिटी से पेट्रोल-डीजल का खर्च बचता है। गरीबों को इलेक्ट्रिक एयरकंडीशन बसों की सुविधाएं मिलनी चाहिए। इन बसों का किराया डीजल बसों की तुलना में 30 प्रतिशत कम होना चाहिए, यह हमारा सपना है। देश में 10 रूट्स पर हाइड्रोजन से चलने वाली बसें चलाने की पहल की गई है। अब सभी ऑटोमोबाइल कंपनियां फ्लेक्स फ्यूल इंजन के साथ वाहन तैयार करेंगे, जिनमें 100 प्रतिशत इथेनॉल का इस्तेमाल किया जाएगा। अब देश को 22 लाख करोड़ का पेट्रोल-डीजल आयात नहीं करना पड़ेगा। देश के किसान मक्का से इथेनॉल तैयार करेंगे और प्रदूषण का स्तर घटेगा। उत्तर प्रदेश और बिहार में किसानों को मक्का का भाव 2600 रुपए मिल रहा है। वैकल्पिक ईंधन की व्यवस्था से ही देश में आर्थिक स्वावलंबन का मॉडल बनेगा।

तकनीक के जरिए हम वेस्ट को वेल्थ में बदल सकते हैं। ऑटोमोबाइल सेक्टर में हमने जापान को पीछे छोड़कर दुनिया में तीसरा स्थान हासिल किया है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश की अर्थव्यवस्था को अगले साल में तीसरे स्थान पर लेकर जाना है। इसमें ऑटोमोबाइल इंडस्ट्री की भूमिका सबसे अहम होगी। देश में ई-बसों के निर्माण के लिए वर्ल्ड क्लास बॉडी स्ट्रक्चर कोड लागू किया गया है। अब बसों का रजिस्ट्रेशन टेस्टिंग एजेंसी द्वारा जांच करने के बाद किया जाएगा। अब चेक लिस्ट के भौतिक और वीडियो सत्यापन के बाद ही बसों का रजिस्ट्रेशन किया जाएगा। आरटीओ ऑफिस की 17 सेवाओं को डिजिटल कर दिया गया है। सरकार ने सभी सिटी बसों को दिव्यांगजनों और बुजुर्गों की सुविधा को देखते हुए डिजाइन तैयार किए हैं। ■



परिवहन सेवा की शुरूआत ऐतिहासिक - हेमंत खण्डेलवाल



- मुख्यमंत्री ने परिवहन सेवा शुरू कर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपने को साकार किया है।
- परिवहन सेवा की शुरूआत ऐतिहासिक, इतिहास में याद रखा जाएगा।

एकात्म मानववाद के प्रणेता और अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति की चिंता करने वाले पंडित दीनदयाल उपाध्याय की जयंती पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के नेतृत्व वाली मध्यप्रदेश की सरकार से मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा की शुरूआत की है। यह ऐतिहासिक है और मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा की शुरूआत कर ऐतिहासिक कार्य किया है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सुगम परिवहन सेवा शुरू कर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के सपने को साकार किया है। पंडित दीनदयाल जी ने विकास से आम जनता को जोड़ने का जो सपना देखा था, यह परिवहन सेवा उसी परिकल्पना को साकार

कर रही है। मुख्यमंत्री सुगम परिवहन सेवा से गरीब, युवा, विद्यार्थी, मजदूर, किसान, महिलाएं सहित सभी समाज वर्ग के लोगों में एक नई खुशी लेकर आई है। अब बेरोकटोक गांवों तक सरकारी बस सेवा की पहुंच होगी। केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने मध्यप्रदेश में सड़कों का जाल बिछाने का कार्य किया है। इस परिवहन सेवा से हर गांव को शहर और प्रदेश के बड़े शहर सीधे बस सेवा से जुड़े जाएंगे, जिससे लोगों को रोजगार मिलेगा और कामकाज भी आसान होगा। आने वाले वर्षों में यह परिवहन सेवा इतिहास में अपना नाम दर्ज कराएगी। आम जनता इस निर्णय को जनकल्याण से जुड़े एक ऐतिहासिक निर्णय के रूप में देख रही है। अब सामान्य परिवारों, विद्यार्थियों, गरीबों सभी को आसानी से परिवहन सेवा उपलब्ध हो सकेगी। करीब 21 साल बाद मध्यप्रदेश में आम जनता की जरूरतों और हितों को ध्यान में रखते हुए मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने बड़ा कार्य किया है। मध्यप्रदेश की भाजपा सरकार ने प्राइवेट बस संचालकों को इस सेवा से जोड़कर इसे नया आयाम देने का कार्य किया है। ■



जीवन बीत चला

अटल बिहारी वाजपेयी

कल, कल करते, आज
हाथ से निकले सारे,
भूत भविष्य की चिंता में
वर्तमान की बाजी हारे,

पहरा कोई काम न आया
रसघट रीत चला।
जीवन बीत चला।

हानि-लाभ के पलड़ों में
तुलता जीवन व्यापार हो गया,
मोल लगा बिकने वाले का,
बिना बिका बेकार हो गया,

मुझे हाट में छोड़ अकेला
एक-एक कर मीत चला।
जीवन बीत चला।



विकास हेतु मुख्यमंत्री ने पेश की मिसाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने

महाकुम्भ-2028 के लिए उज्जैन के समग्र विकास और श्रद्धालुओं की सुविधाओं के विस्तार को सर्वोपरि रखते हुए अपने उस पैतृक निवास को भी विकास कार्य के लिए समर्पित कर दिया, जहां उनका जन्म हुआ, बचपन बीता और जहां वे खेले-कूदे। जिस घर में जन्म लेकर छोटे से बड़े हुए हों, जहां बचपन की यादें जुड़ी हों, उस घर को विकास के लिए पीछे करना पड़े तो मन पर प्रभाव होना स्वाभाविक है। लेकिन सिंहस्थ और उज्जैन के विकास के लिए यदि यह आवश्यक है, तो यह योगदान और बलिदान देना ही चाहिए। पूरा देश देख रहा है कि उज्जैन के लोग विकास और सिंहस्थ की व्यवस्थाओं के लिए अपने घरों को पीछे कर रहे हैं, ताकि लाखों श्रद्धालुओं को बेहतर सुविधाएं मिल सकें।

सार्वजनिक जीवन में हमें अपने आचरण और कार्यों से उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने भी व्यक्तिगत हितों से ऊपर उठकर नियम, कानून, सुशासन और राष्ट्रहित को प्राथमिकता देने का उदाहरण प्रस्तुत किया है। उनके सार्वजनिक जीवन से हम सभी को प्रेरणा मिलती है। उज्जैन के नागरिकों ने विकास के लिए अपने मकानों को पीछे किया है। सिंहस्थ के दौरान उज्जैन की करीब 8 लाख की आबादी पर देशभर से आने वाले करोड़ों श्रद्धालुओं की सुविधाओं का दायित्व रहता है। ऐसे में शहर के विकास के लिए नागरिकों ने जिस तरह अपना सहयोग दिया है, वह अपने आप में आदर्श उदाहरण है। सरकार ने भी बिना किसी भेदभाव के विकास कार्यों को आगे बढ़ाया है। हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और पारसी समाज



के लोगों ने भी अपने घरों और देवस्थलों को विकास कार्यों के लिए पीछे किया है। यह आपसी विश्वास और सहयोग की भावना को मजबूत करता है।

सिंहस्थ-2028 की तैयारियों के बीच मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का पैतृक मकान भी विकास परियोजना की निर्धारित सीमा में आ रहा है। सड़क चौड़ीकरण की प्रक्रिया में उनके परिवार की संपत्ति भी उसी प्रशासनिक प्रक्रिया का हिस्सा है, जो अन्य प्रभावित भवनों पर लागू है। दशकों पुरानी पारिवारिक यादों से जुड़े अपने घर को भी सार्वजनिक हित और उज्जैन के भविष्य के विकास के लिए समर्पित कर यह संदेश दिया कि विकास की योजनाओं में जनहित सर्वोपरि है। पैतृक मकान का प्रभावित होना उज्जैन में सिंहस्थ-2028 से पहले किए जा रहे व्यापक विकास कार्यों का हिस्सा है। इसके तहत पुराने शहर की सड़क, यातायात व्यवस्था और शहरी

अधोसंरचना को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप विकसित किया जा रहा है, ताकि सिंहस्थ के दौरान देश-विदेश से आने वाले श्रद्धालुओं को सुगम आवागमन और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध हो सकें।

उज्जैन में खजूर वाली मस्जिद से अब्दालपुरा, जीवाजीगंज थाना होते हुए गणेश चौक तक लगभग 730 मीटर लंबे मार्ग के चौड़ीकरण की कार्यवाही प्रारंभ की गई है। इस मार्ग को 15 मीटर चौड़ा किया जाएगा। मार्ग चौड़ीकरण एवं विकास कार्य के लिए राज्य शासन द्वारा लगभग 9.80 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। यह मार्ग शहर के महत्वपूर्ण एवं व्यस्त संपर्क मार्गों में शामिल है। सिंहस्थ महापर्व के दौरान श्रद्धालुओं और वाहनों की संख्या में संभावित वृद्धि को देखते हुए मार्ग का चौड़ीकरण यातायात व्यवस्था को अधिक सुगम, सुरक्षित और व्यवस्थित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। ■

मुख्यमंत्री ने की विकास की पहल- हेमंत खण्डेलवाल

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के

नेतृत्व में उज्जैन को आगामी सिंहस्थ के लिए तैयार किया जा रहा है। शहर में सड़क, यातायात और अन्य बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के लिए आवश्यक कार्य किए जा

रहे हैं। विकास कार्यों में सहयोग करते हुए कई नागरिक अपनी संपत्तियों से संबंधित आवश्यक हिस्सों को स्वयं पीछे कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भी विकास कार्यों के लिए अपनी पैतृक मकान में गैती चलाकर आवश्यक हिस्से को हटाने की पहल की है। उज्जैन में

आगामी सिंहस्थ में देशभर से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के आने की संभावना है। ऐसे में शहर को श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए तैयार करने, यातायात व्यवस्था सुचारु रखने और आवश्यक सुविधाओं के विस्तार की दिशा में किए जा रहे कार्य महत्वपूर्ण हैं। ■



भारत व फ्रांस संबंधों को नव ऊर्जा

फ्रांस की राजधानी पेरिस में भव्य स्वामीनारायण मंदिर का लोकार्पण भारत और फ्रांस के सांस्कृतिक संबंधों का नया युग स्तंभ है।

प्राचीन काल में भारत का जो सांस्कृतिक आध्यात्मिक वैभव था, परम पूज्य प्रमुख स्वामी जी महाराज ने उसके पुनर्जागरण का एक अभियान शुरू किया था। आज उसका प्रकाश यूरोप समेत पूरी दुनिया में फैल रहा है। 2024 में अबू धाबी में भव्य मंदिर का लोकार्पण हुआ था। आज वहां हजारों लोग दर्शन करने जाते हैं और अब यहां पेरिस में स्वामीनारायण मंदिर का निर्माण सृजन की यह निरंतरता, यह संतों की संकल्प शक्ति का ही प्रमाण है।

BAPS के माध्यम से जब अलग-अलग देश में मंदिरों की प्राण प्रतिष्ठा होती है, तो वहां भारत के प्राचीन विचार और मानवीय मूल्य भी साथ-साथ ही जाते हैं और भारत का विचार कहता है 'समानं मनः सह चित्तमेषाम्' अर्थात् हमारे मन समान हो, हमारे हृदय साथ जुड़े। इसलिए जब फ्रांस में इतना भव्य मंदिर बनकर तैयार हुआ है, यह फ्रांस की विविधता को तो समृद्ध करेगा ही, इससे भारत और फ्रांस के सांस्कृतिक संबंधों को भी ऊर्जा मिलेगी।

बीते वर्षों में भारत और फ्रांस के संबंध नई ऊंचाइयों तक पहुंचे हैं। प्रेसिडेंट मैक्रों के साथ मिलकर दोनों देश एक Special Global Strategic Partnership बना रहे हैं। Technology, AI और Defence से लेकर Space और Climate Action तक हम एक नई गति और नई ऊर्जा के साथ मिलकर के आगे बढ़ रहे हैं। हम 2026 को India-France Year of Innovation के रूप में भी सेलिब्रेट कर रहे हैं। भारत-फ्रांस की ये Strategic Partnership इसलिए भी खास है, क्योंकि ये हमारे पुराने सांस्कृतिक-राजनैतिक सम्बन्धों की मजबूत बुनियाद पर टिकी है। इतिहास गवाह है, फ्रांस में भारतीय सैनिकों के बलिदान का इतिहास आज भी मन-मंदिर में जीवित है। भाषा से जुड़े विषयों में रुचि रखने वाले लोग यह भी जानते हैं कि फ्रेंच स्कॉलर्स ने संस्कृत को लोकप्रिय बनाने में कितनी अहम भूमिका निभाई है। रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद पर रोमां रोलों



2024 में अबू धाबी में भव्य मंदिर का लोकार्पण हुआ था। आज वहां हजारों लोग दर्शन करने जाते हैं और अब यहां पेरिस में स्वामीनारायण मंदिर का निर्माण सृजन की यह निरंतरता, यह संतों की संकल्प शक्ति का ही प्रमाण है।

की लेखनी हमारी सोसाइटीज को और करीब लाई है। पेरिस से पुडुचेरी के अरबिंदो आश्रम तक 'The mother' की spiritual journey, उसने कितने ही भारतीय और फ्रेंच साधकों को inspire किया है।

दशकों पहले श्रील प्रभुपाद स्वामी भी फ्रांस आए थे। इस्कॉन के जरिए भारत फ्रांस के बीच आध्यात्मिक सम्बन्धों का नया अध्याय उन्होंने शुरू किया था। आज योग भी भारत-फ्रांस के people to people कनेक्ट का एक माध्यम बन चुका है। 'इंटरनेशनल योगा डे' पर एफिल टॉवर के सामने से आने वाली तस्वीरें फ्रांस में योग की लोकप्रियता का उदाहरण बनती हैं और अब BAPS के इस भव्य मंदिर के जरिए, हमारे उन सांस्कृतिक सम्बन्धों में एक नया अध्याय जुड़ रहा है।

भारत और फ्रांस में Joint Ventures की

संभावनाओं पर बातें होती हैं। स्वामीनारायण मंदिर ने इस संभावना में भी एक नया आयाम जोड़ा है। यह मंदिर 'मेड इन इंडिया' है और 'बिल्ट इन फ्रांस' है। इसके काफी पत्थरों को भारत में तराशा गया है। भारत की प्राचीन प्रतिभा यहाँ फ्रांस में आधुनिक इंजीनियरिंग से आकर जुड़ चुकी है। पेरिस में इस भव्य मंदिर ने आकार लिया है। इसलिए, मैं आशा करता हूँ, यह मंदिर सदियों तक भारत और फ्रांस के बीच सहयोग और संभावनाओं का भी प्रतीक बनकर उभरेगा।

स्वामीनारायण मंदिर हमेशा से भक्ति के साथ-साथ सेवा का माध्यम भी रहे हैं। यह मंदिर भी सेवा प्रकल्पों का वैसा ही केंद्र बनेगा। यहाँ से भारतीय संस्कृति के जो स्वर निकलेंगे, उनका लाभ पूरे यूरोप में लोगों को मिलेगा। ■



स्वदेशी का बीज आत्मनिर्भर भारत का वृक्ष बनेगा -डॉ. मोहन यादव

- पं. दीनदयाल जी का मूल मंत्र स्वावलंबन, स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत था।
- अंतिम व्यक्ति के कल्याण का मार्ग दिखाता है पं. दीनदयाल जी का एकात्म मानववाद।

श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का मूल मंत्र स्वावलंबन, स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत था। उन्होंने समाज की अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति के सुख, सम्मान और कल्याण की चिंता करते हुए एकात्म मानववाद का दर्शन दिया। उनका मानना था कि देश का विकास तभी सार्थक है,



जब विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे और प्रत्येक नागरिक आत्मनिर्भर एवं सम्मानजनक जीवन जी सके। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आज देश पंडित दीनदयाल जी के विचारों को आगे बढ़ाते हुए आत्मनिर्भर भारत के संकल्प के साथ तेजी से आगे बढ़ रहा है। स्वदेशी उत्पादन, स्थानीय उद्योग, किसान, युवा, महिला और छोटे उद्यमियों को प्रोत्साहित कर देश की सामर्थ्य को मजबूत किया जा रहा है। पंडित दीनदयाल जी ने स्वदेशी और स्वावलंबन का जो बीज बोया था, वह आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में आत्मनिर्भर भारत के विशाल वृक्ष का रूप ले रहा है। ■

पं. दीनदयाल जी महान राष्ट्रनायक - हेमंत खण्डेलवाल

- पं. दीनदयाल जी के विचारों को आगे बढ़ाना ही सच्ची श्रद्धांजलि।
- स्वावलंबन, स्वदेशी और अंत्योदय के विचारों को आगे बढ़ा रहा भाजपा संगठन।
- प्रदेश के सभी बूथों पर मनाई गई पं. दीनदयाल जी की जयंती।

श्रद्धेय पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ऐसे महान राष्ट्रनायक थे, जिन्होंने अपनी दूरदृष्टि और विचारों से भारतीय जनता पार्टी की विचारधारा को दिशा दी तथा अपना पूरा जीवन राष्ट्रसेवा और समाज के अंतिम व्यक्ति के कल्याण के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने एकात्म मानववाद के माध्यम से अंत्योदय का मार्ग दिखाया और यह संदेश दिया कि विकास का वास्तविक उद्देश्य समाज



के अंतिम पंक्ति के अंतिम व्यक्ति के जीवन में खुशहाली लाना है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में गरीब, वंचित और जरूरतमंद वर्गों के कल्याण के लिए किए जा रहे कार्यों में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के विचारों की स्पष्ट झलक दिखाई देती है। भाजपा का प्रत्येक कार्यकर्ता उनके बताए मार्ग पर चलते हुए सेवा, समर्पण और राष्ट्र निर्माण के कार्य में निरंतर जुटा

है। जीवन में कितनी भी चुनौतियां आएँ, हमें पंडित दीनदयाल जी के विचारों को आत्मसात करते हुए समाज के अंतिम व्यक्ति तक सेवा और विकास का लाभ पहुंचाने का संकल्प लेना चाहिए। उनके विचारों को जन-जन तक पहुंचाना और उनके बताए मार्ग पर चलते हुए राष्ट्रसेवा के कार्य को आगे बढ़ाना ही पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। ■

निःशुल्क पंजीकरण प्रक्रिया-नितिन नवीन

मध्य प्रदेश में स्वामित्व योजना के माध्यम से लोगों को लाभ पहुंचाने का प्रयास किया गया है। यह केवल कागज का एक टुकड़ा नहीं है और न ही केवल संपत्ति की रक्षा का विषय है, बल्कि यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में परिवारजनों को उनके सुनहरे भविष्य और स्वाभिमान के साथ जिंदगी जीने का रास्ता देने का प्रयास है। भाजपा सरकार और मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव ने बड़े प्रयास से कई आयामों पर काम करते हुए 55 जिलों के 41,568 गांवों में करीब 68,47,000 भूखंडों का सर्वे किया है। निःशुल्क रजिस्ट्री के माध्यम से 50 लाख लोगों को उनका अधिकार देने



की शुरुआत हो रही है, जो प्रशंसनीय और अभिनंदनीय है।

आज का दिन इसलिए भी विशेष है कि आज भगवान विश्वकर्मा की जयंती है। दुनिया भर में माना जाता है कि भारत के लोग मेहनती और हुनरमंद होते हैं। उन्होंने अपने हुनर और अपनी क्षमता से कई क्षेत्रों को आगे बढ़ाया है।

जिस प्रकार भगवान विश्वकर्मा ने कई चीजें हमारे अंदर आशीर्वाद के रूप में दी हैं, उसी प्रकार प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने भी भारत के निर्माण में, भारत के लोगों को विश्वास के साथ उनकी विरासत को आगे बढ़ाते हुए, 140 करोड़ लोगों को देश के विकास के साथ जोड़ने का काम किया है। ■

50 लाख से अधिक संपत्तियों की होगी निःशुल्क रजिस्ट्री - डॉ. मोहन यादव

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस एवं उनके सार्वजनिक जीवन के 25 वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर मध्यप्रदेश में शुरू हुए 'सेवा संकल्प अभियान' के अंतर्गत स्वामित्व अधिकार अभिलेख निष्पादन एवं पंजीयन योजना के माध्यम से प्रदेश की 50 लाख से अधिक ग्रामीण निजी संपत्तियों के अधिकार अभिलेखों का निःशुल्क पंजीयन किया जाएगा। यह केवल संपत्ति की रजिस्ट्री का अभियान नहीं, बल्कि वर्षों से अपनी जमीन और मकान में निवास कर रहे ग्रामीण परिवारों को उनकी संपत्ति का वैधानिक अधिकार और सुरक्षित भविष्य देने का महत्वपूर्ण कदम है। अब पात्र ग्रामीण परिवार अपनी संपत्ति के पंजीकृत दस्तावेज के आधार पर आर्थिक गतिविधियों और ऋण जैसी सुविधाओं के लिए अपनी संपत्ति का उपयोग अधिक सुगमता से कर सकेंगे। स्वामित्व योजना के अंतर्गत प्रदेश के 68 लाख अधिकार अभिलेख तैयार किए जा चुके हैं। इनमें से करीब 50 लाख निजी



संपत्तियों के निःशुल्क पंजीयन की प्रक्रिया शुरू की जा रही है। पात्र हितग्राहियों से स्टाम्प ड्यूटी एवं पंजीयन शुल्क नहीं लिया जाएगा और इसका खर्च राज्य सरकार वहन करेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस पर शुरू हो रहा 'सेवा संकल्प अभियान' 17 सितंबर से 17 अक्टूबर तक प्रदेश भर में सेवा, सुशासन, जनकल्याण और जनभागीदारी के विभिन्न कार्यक्रमों के साथ संचालित हो रहा है। सरकार का संकल्प है कि प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक योजनाओं का लाभ पहुंचे और समाज के अंतिम व्यक्ति को सम्मान एवं अधिकार के साथ

विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में शुरू की गई प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के माध्यम से पारंपरिक कारीगरों और छोटे कामगारों को प्रशिक्षण, सहायता और स्वावलंबन के अवसर उपलब्ध कराए जा रहे हैं। मध्यप्रदेश सरकार भी समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण और स्वावलंबन के लिए निरंतर कार्य कर रही है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में देश में विकास के साथ-साथ भारत की सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक विरासत को भी नई पहचान मिली है। मध्यप्रदेश में भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण सहित धार्मिक एवं ऐतिहासिक स्थलों के विकास और उन्हें तीर्थस्थल के रूप में विकसित करने का कार्य निरंतर जारी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के जन्मदिवस पर शुरू हुआ 'सेवा संकल्प अभियान' जनसेवा और जनभागीदारी की भावना को और मजबूत करेगा। ■

विपक्ष की हताशा उजागर -डॉ.मोहन यादव

- चुनाव आयोग को लेकर भ्रम फैलाने पर राहुल गांधी को माफी मांगकर इस्तीफा देना चाहिए।
- चुनाव आयोग के संयुक्त बयान से कांग्रेस के झूठ और भ्रम की राजनीति बेनकाब।
- बड़े राजनीतिक परिवार में जन्म लेना किसी के प्रति अपमानजनक भाषा के प्रयोग का अधिकार नहीं देता।
- कांग्रेस संवैधानिक संस्थाओं को नहीं मानती।
- निर्वाचन आयोग अपनी संवैधानिक भूमिका निभा रहा।
- कांग्रेस सत्ता से बाहर रहने के कारण बौखलाई हुई है, इसलिए वे लगातार निंदनीय कृत्य कर रही है।
- राहुल गांधी अपने बयान पर देश से माफी मांगे।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र और दुनिया का सबसे युवा देश है। लोकतंत्र को मजबूत बनाए रखना केवल सरकार की नहीं, बल्कि विपक्ष की भी समान जिम्मेदारी है। लेकिन जिस तरह नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी संवैधानिक संस्थाओं पर हमेशा प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं वह लगातार लोकतंत्र को कमजोर कर रहे हैं। राजनीतिक असहमति लोकतंत्र का स्वाभाविक हिस्सा है, लेकिन असहमति के नाम पर संवैधानिक संस्थाओं और सार्वजनिक जीवन से जुड़े व्यक्तियों के प्रति अमर्यादित भाषा का इस्तेमाल स्वीकार नहीं किया जा सकता। किसी बड़े राजनीतिक परिवार में जन्म लेना किसी को भी किसी के प्रति अपमानजनक भाषा के प्रयोग का अधिकार नहीं देता।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के फैसले के बाद पीएम इंदिरा गांधी द्वारा सीधे देश पर आपातकाल थोपा गया था, ये इस बात का प्रमाण है कि



कांग्रेस पार्टी संवैधानिक संस्थाओं को नहीं मानती थी और आज भी नहीं मानती है। राहुल गांधी ने सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल खड़ा किया, वहीं चौकीदार चोर कहकर अभद्र भाषा का इस्तेमाल किया। उन्होंने सारी सीमाओं को तोड़ने का काम किया है। लगातार इस तरह के बेबुनियाद आरोप लगाकर अंत में राहुल गांधी न्यायालय में माफी मांग लेते हैं।

एक ही प्रक्रिया को अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग नजरिए से देखने से कांग्रेस की मंशा पर प्रश्न खड़े होते हैं। कांग्रेस को केरल में सत्ता मिल गई तो एसआईआर सही थी, हिमाचल में सत्ता मिली तो सही थी, वहीं तमिलनाडु में 50 साल से सत्ता से बाहर है, वहां भाजपा नहीं डीएमके और एआईडीएमके वर्षों से है, वहीं बंगाल में वामपंथियों का कब्जा रहा, तब एसआईआर को लेकर राहुल गांधी मौन क्यों रहे। पात्र नागरिकों को मताधिकार सुनिश्चित करने तथा मतदाता सूची को अधिक व्यवस्थित और पारदर्शी बनाने की प्रक्रिया में निर्वाचन आयोग अपनी संवैधानिक भूमिका निभा रहा है। निर्वाचन आयोग के निर्णयों को लेकर यदि किसी राजनीतिक दल को आपत्ति है तो संवैधानिक और न्यायिक रास्ते खुले हैं। कांग्रेस लोकतांत्रिक संस्थाओं

के प्रति विश्वास बनाए रखे और राजनीतिक मतभेदों को संस्थाओं के विरोध में परिवर्तित न करे।

लोकतंत्र में जनता सबसे बड़ी निर्णायक शक्ति है। राजनीतिक दलों के आरोप-प्रत्यारोप के बीच जनता सभी घटनाक्रमों को नजदीक से देख रही है। विपक्ष की भूमिका सरकार से सवाल पूछने की है, लेकिन साथ ही लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा और संवैधानिक व्यवस्था को मजबूत बनाए रखने की जिम्मेदारी भी विपक्ष की है। भाजपा, जनसंघ से लेकर आज तक देश और जनहित में सदैव लड़ती रही। आपातकाल के खिलाफ भी भाजपा खड़ी रही। कांग्रेस सत्ता से बाहर रहने के कारण बौखलाई हुई है, इसलिए वे लगातार निंदनीय कृत्य कर रही है। जनता उनके झूठ को बहुत करीब से देख रही है, अब उनका झूठ फिर से बेनकाब हुआ है।

देश के पात्र नागरिकों को मताधिकार देने और लोकतंत्र की शक्ति के लिए हम सभी चुनाव आयोग के साथ हैं। अब तो अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रम्प भारत की चुनाव प्रणाली को अपनाने पर जोर दे रहे हैं। ऐसे में दुर्भाग्य की बात है कि राहुल गांधी ने ईवीएम को ब्लैक बॉक्स और ईडी को ठगबंधन करार दिया था।



इस तरह से उनके मजाक राहुल गांधी को भारी पड़ेगे, उन्हें इस तरह के बयान पर माफी मांगना चाहिए। एसआईआर को लेकर राहुल गांधी ने दो बार कोर्ट से मुंह की खाई है। जिस प्रकार

से मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और दोनों चुनाव आयुक्तों को लेकर राहुल गांधी ने जो भ्रम फैलाने का काम किया है, वह अक्षम्य है। एक तरफ एनडीए का गठबंधन है, वहीं

दूसरी ओर इंडी गठबंधन है, अखिलेश यादव रायबरेली जाते हैं, तो राहुल गांधी कहते हैं कि हम भी सेफर्ड जा सकते हैं। ऐसे में इनसे अपना कुनबा संभल नहीं रहा है। ■

संवैधानिक संस्थाओं का सम्मान आवश्यक -हेमंत खण्डेलवाल

- राहुल गांधी और कांग्रेस एंटी-बीजेपी नहीं, एंटी-नेशनल बातें करते हैं।
- कांग्रेस लोकतंत्र की मर्यादा को बार-बार लांघने का काम कर रही है।
- कांग्रेस को आत्ममंथन करना चाहिए कि जनता उसे लगातार क्यों नकार रही है।
- कांग्रेस बताए, क्या उसे सुप्रीम कोर्ट और चुनाव आयोग की विश्वसनीयता पर भरोसा नहीं?

कांग्रेस अपनी राजनीतिक असफलताओं से लोगों का ध्यान भटकाने के लिए जनता के मन में भ्रम और अविश्वास पैदा करने का प्रयास कर रही है। लेकिन अब चुनाव आयोग ने स्वयं इस पूरे मामले पर स्पष्ट स्थिति सामने रख दी है। 26 सितम्बर को चुनाव आयोग की बैठक हुई और यह स्पष्ट किया गया कि देश भर में चल रही एसआईआर किसी एक व्यक्ति का निर्णय नहीं, यह मुख्य चुनाव आयुक्त और दोनों चुनाव आयुक्तों द्वारा सर्वसम्मति से लिया गया निर्णय है, ऐसे में राहुल गांधी और कांग्रेस किस आधार पर इस मुद्दे को लेकर भ्रम फैला रहे हैं। यह पहली बार नहीं है कि जब कांग्रेस और राहुल गांधी द्वारा किसी संवैधानिक संस्था की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाये गये हों। राहुल गांधी ने 2024 में ईवीएम को ब्लेक बॉक्स बताकर लोकतांत्रिक प्रक्रिया पर सवाल उठाया, वहीं 2019 में न्यायपालिका पर और 2016-2022 में सर्जिकल स्ट्राइक पर सवाल उठाकर विदेशों में भारतीय लोकतंत्र को कठघरे में खड़े करने का काम किया।



तमिलनाडु में 1967 के बाद कांग्रेस सत्ता से बाहर है। पश्चिम बंगाल में 1977 के बाद से कांग्रेस सत्ता में नहीं रही, वहीं उत्तर प्रदेश में 1989 और बिहार में 1990 के बाद तीन दशकों से अधिक समय से जनता ने कांग्रेस को जनादेश से दूर रखा है। लोकतंत्र में सरकार या किसी संवैधानिक संस्था के निर्णय से असहमति रखने का अधिकार सभी को है, लेकिन असहमति व्यक्त करने और संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर सवाल खड़े करने के बीच अंतर को हमें समझने की आवश्यकता है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में प्रत्येक राजनीतिक दल और नेता से अपेक्षा रहती है कि वह अपने मतभेदों और आलोचनाओं को तथ्यों तथा

संवैधानिक प्रक्रियाओं के दायरे में रखे। कांग्रेस बार-बार लोकतंत्र की मर्यादाओं को लांघने का काम कर रही है और चुनाव आयोग तथा सुप्रीम कोर्ट जैसी संवैधानिक संस्थाओं की विश्वसनीयता पर सवाल उठा रही है। कांग्रेस को स्पष्ट करना चाहिए कि क्या उसे सुप्रीम कोर्ट और चुनाव आयोग जैसी संवैधानिक संस्थाओं पर भरोसा नहीं है? जब चुनाव आयोग ने अपने निर्णयों और प्रक्रियाओं को लेकर स्थिति स्पष्ट कर दी है, तब भी कांग्रेस द्वारा भ्रम फैलाने का प्रयास किया जा रहा है। कांग्रेस को यह आत्ममंथन करना चाहिए कि जनता उसे लगातार क्यों नकार रही है और इसके लिए उसे अपने नेतृत्व, संगठन तथा कार्यप्रणाली में क्या बदलाव करने की आवश्यकता है। ■



उत्पादन लागत पर डेढ़ गुना एमएसपी



हेमंत खाण्डेलवाल

- प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किसान कल्याण सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता।
- प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में रबी फसलों की एमएसपी में वृद्धि किसानों के हित में बढ़ा निर्णय है।
- केंद्र सरकार ने उत्पादन लागत पर डेढ़ गुना एमएसपी का संकल्प पूरा किया।
- गेहूं की खरीद 3715 लाख मीट्रिक टन तक पहुंची।
- दलहन और तिलहन को प्रोत्साहन से बढ़ेगा फसल विविधीकरण।
- प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में किसान कल्याण की दिशा में निरंतर निर्णय।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने एक बार फिर किसान हित में महत्वपूर्ण निर्णय लिया है। रबी फसलों की एमएसपी में की गई वृद्धि किसानों को उनकी उपज का लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करने के साथ उनकी मेहनत का सम्मान भी है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में किसान कल्याण केंद्र सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में रबी फसलों की एमएसपी में वृद्धि किसानों के हित में बढ़ा निर्णय है। केंद्र सरकार ने उत्पादन लागत पर डेढ़ गुना एमएसपी का संकल्प पूरा किया है। भाजपा जो कहती है, उसे पूरा करती है। केंद्र सरकार की किसान हितैषी नीतियों के कारण कृषि क्षेत्र में किसानों को बेहतर मूल्य, बाजार का भरोसा और फसल विविधीकरण के नए अवसर मिल रहे हैं।

विपणन सीजन वर्ष 2027-28 में कुसुम की एमएसपी में सर्वाधिक 675 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। रेपसीड एवं सरसों में 413 रुपये, मसूर में 390 रुपये, जौ में 136 रुपये, चना में 83 रुपये और गेहूं में 25 रुपये प्रति क्विंटल की वृद्धि की गई है। नई एमएसपी के अनुसार गेहूं 2,610 रुपये, जौ 2,286 रुपये, चना 5,958 रुपये, मसूर 7,390 रुपये, रेपसीड एवं सरसों 6,613 रुपये तथा कुसुम 7,215 रुपये प्रति क्विंटल होगी।

केंद्र सरकार ने वर्ष 2018-19 के केंद्रीय बजट में किए गए उस संकल्प के अनुरूप एमएसपी में वृद्धि की है, जिसके तहत किसानों को उनकी अखिल भारतीय औसत उत्पादन लागत पर कम से कम 50 प्रतिशत का लाभ सुनिश्चित करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्ष 2027-28 के लिए गेहूं में उत्पादन लागत पर 106 प्रतिशत, रेपसीड एवं सरसों में 96 प्रतिशत, मसूर में 92 प्रतिशत, चना में 59 प्रतिशत, जौ में 58 प्रतिशत और कुसुम में 50 प्रतिशत का अपेक्षित मार्जिन रखा गया है। उत्पादन लागत में किराए पर लिए गए मानव श्रम, बैल एवं मशीन श्रम, पट्टे पर ली गई भूमि का किराया, बीज, उर्वरक, खाद, सिंचाई शुल्क, कृषि उपकरण एवं भवनों का मूल्यह्रास, कार्यशील पूंजी पर ब्याज, डीजल एवं बिजली सहित विभिन्न खर्च तथा पारिवारिक श्रम का अनुमानित मूल्य शामिल किया जाता है। इस प्रकार एमएसपी निर्धारण में किसान की वास्तविक लागत को व्यापक रूप से ध्यान में रखा गया है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी की सरकार में किसानों से एमएसपी पर खरीद में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्ष 2014-15 से 2025-26 के दौरान गेहूं की खरीद 3715 लाख मीट्रिक टन हुई, जबकि वर्ष 2004-05 से 2013-14 के दौरान यह 2254 लाख मीट्रिक टन थी। इसी प्रकार छह प्रमुख रबी फसलों की खरीद 2014-15 से 2025-26 के दौरान बढ़कर 3921 लाख मीट्रिक टन हो गई, जबकि 2004-05 से 2013-14 के दौरान यह 2302 लाख मीट्रिक टन थी।

किसानों को एमएसपी के माध्यम से मिलने वाली राशि में भी बड़ा बदलाव आया है। वर्ष 2014-15 से 2025-26 के दौरान गेहूं उत्पादक किसानों को 7.31 लाख करोड़ रुपए का एमएसपी भुगतान किया गया, जबकि वर्ष 2004-05 से 2013-14 के दौरान यह राशि 2.56 लाख करोड़ रुपये थी। इसी अवधि में छह प्रमुख रबी फसलों के किसानों को किया गया एमएसपी भुगतान बढ़कर 8.36 लाख करोड़ रुपये हो गया, जो पूर्व अवधि में 2.65 लाख करोड़ रुपये था।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार लगातार गेहूं जैसे अनाज के साथ-साथ दलहन और तिलहन को भी प्रोत्साहित कर रही है। मसूर, चना, रेपसीड एवं सरसों तथा कुसुम की एमएसपी में की गई वृद्धि किसानों को इन फसलों की ओर आकर्षित करने और देश में फसल विविधीकरण को बढ़ावा देने की दिशा में महत्वपूर्ण है। सरकार की नीति का उद्देश्य किसानों को बेहतर मूल्य उपलब्ध कराने के साथ कृषि क्षेत्र को अधिक टिकाऊ और लाभकारी बनाना है।

सरकार द्वारा एमएसपी व्यवस्था में सुधार के साथ खरीद व्यवस्था को भी मजबूत किया गया है। सरकारी विवरण के अनुसार वर्ष 2014-26 के दौरान सभी 22 अधिदेशित एमएसपी फसलों की कुल खरीद 12,819 लाख मीट्रिक टन रही, जबकि वर्ष 2004-14 में यह 6,987 लाख मीट्रिक टन थी। इसी अवधि में किसानों को भुगतान की गई एमएसपी राशि 7.41 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 27.80 लाख करोड़ रुपये हुई।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में केंद्र सरकार किसानों की आय, सम्मान और समृद्धि के लिए निरंतर काम कर रही है। एमएसपी में वृद्धि, फसल विविधीकरण, दलहन-तिलहन को प्रोत्साहन, खरीद व्यवस्था में सुधार और किसानों को सीधे भुगतान जैसी व्यवस्थाएं किसान कल्याण के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता को दर्शाती हैं।

रबी फसलों की एमएसपी में यह वृद्धि देश के करोड़ों किसानों के लिए महत्वपूर्ण निर्णय है। ■



विकसित भारत में युवाओं की बड़ी भूमिका - नरेन्द्र मोदी



देश में त्योहारों का समय, खुशियों के बीच, हजारों परिवारों के जीवन में एक नई खुशी, 51 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी सेवा के लिए नियुक्ति पत्र मिले हैं।

51 हजार से अधिक युवा एक ऐसे समय में भारत सरकार से जुड़े हैं, जब देश एक बहुत बड़े लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है, और ये लक्ष्य है- 2047 तक विकसित भारत बनाने का। इसमें युवाओं की बहुत बड़ी भूमिका है। सरकार में रहते हुए युवाओं को हर वो निर्णय लेना है, जो विकसित भारत के अभियान को, आत्मनिर्भर भारत के अभियान को निरंतर सशक्त करें। युवा होने के नाते विशेष तौर पर अन्य युवाओं के प्रति चयनित युवाओं की विशेष जिम्मेदारी है। भारतीय युवाओं के टैलेंट और स्किल्स ने पूरी दुनिया का भरोसा जीता है। दुनिया को भारतीय innovators, भारतीय entrepreneurs और भारतीय युवा शक्ति से बहुत उम्मीदें हैं। ब्रिक्स समित

में भारत का प्रयास रहा है कि BRICS cooperation केवल सरकारों तक सीमित न रहे, भारतीय entrepreneurs, किसान, महिलाएं, युवा, हर कोई इस partnership का सक्रिय भागीदार बने। इसी सोच के साथ BRICS CONNECT और BRICS MSME Cooperation Portal की भी पहल की गई है।

भारत ने करीब 40 देशों के साथ फ्री ट्रेड एग्रीमेंट भी किए हैं। ये फ्री ट्रेड एग्रीमेंट्स, भारतीय युवाओं के लिए संभावनाओं के नए द्वार बना रहे हैं। इस तरह के ट्रेड एग्रीमेंट्स से भारतीय entrepreneurs के लिए नई partnerships के रास्ते खुलते हैं, नए markets के रास्ते खुलते हैं। और भारतीय युवाओं के लिए करियर में नई possibilities बनती हैं।

बीते वर्षों में भारत सरकार का निरंतर जोर युवाओं को भविष्य के लिए तैयार करने पर रहा है। National Education Policy,

Skill India Mission, प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना या अप्रेंटिसशिप को बढ़ावा देने के प्रयास। सरकार की कोशिश है कि युवाओं की पढ़ाई और उनकी skills, बदलती economy की जरूरतों के साथ चलें। जैसे एक उदाहरण है, PM-SETU। इस योजना के माध्यम से 60 हजार करोड़ रुपए के निवेश से एक हजार सरकारी ITIs को आधुनिक बनाया जा रहा है। इसमें इंडस्ट्री की सीधी भागीदारी सुनिश्चित की गई है।

भारत के युवाओं के सामर्थ्य की एक और तस्वीर startup ecosystem में दिखाई देती है। भारत आज दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा startup ecosystem है। और भारत की startup story अब केवल बड़े शहरों की कहानी नहीं है। आज करीब आधे recognised startups टियर-टू और टियर-थ्री शहरों में हैं। यानी गांव, कस्बे और छोटे शहर का युवा भी भारत की नई economy में अपनी भूमिका बड़ी बना रहा



है। छोटे शहरों के हमारे युवा अपने ideas पर काम कर रहे हैं, नई companies बना रहे हैं, और अपने साथ दूसरे युवाओं के लिए भी रोजगार के नए अवसर तैयार कर रहे हैं।

सरकार का प्रयास है कि private sector में भी रोजगार के नए अवसर तेजी से बढ़ें। इसी सोच के साथ प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना शुरू की गई है। इस योजना पर करीब एक लाख करोड़ रुपये खर्च किए जा रहे हैं। इस योजना की मदद से करीब दो करोड़ युवाओं को पहली बार workforce का हिस्सा बनने का मौका मिलेगा। सरकार द्वारा इस योजना के तहत पहली बार नौकरी पाने वाले युवाओं को 15 हजार रुपये तक का incentive भी दिया जा रहा है। नए रोजगार पैदा करने वाले employers को भी सरकार प्रोत्साहन दे रही है। यानी देश में रोजगार बढ़ाने के लिए सरकार हर मोर्चे पर काम कर रही है।

युवाओं के लिए नए अवसर तभी बनते हैं, जब देश की इकोनॉमी आगे बढ़ती है, जब investment बढ़ता है, नए उद्योग लगते हैं, और नए सेक्टरों का विस्तार होता है। आज भारत तेजी से ग्रो करने वाली बड़ी अर्थव्यवस्था है। इस financial year की पहली तिमाही में भारत की growth rate 7.8 प्रतिशत रही है। Investment में करीब 12 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। रेटिंग एजेंसियां, भारत की रेटिंग्स सुधार रही हैं। और ये प्रगति ऐसे समय में हो रही है, जब दुनिया अनेक अनिश्चितताओं से गुजर रही है। भारत की इस growth के पीछे बीते वर्षों के reforms का बड़ा योगदान है। आपको

अपने कार्यकाल में निरंतर reforms को और गति देनी है। Tax और compliance को सरल बनाना हो, ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ाना हो, एजुकेशन और स्किलिंग में reform हों, या नए सेक्टरों को इनोवेशन के लिए खोलना हो या ईज ऑफ लिविंग की बात हो, हर स्तर पर देश में Reform Express का लगातार फुल स्पीड में चलना जरूरी है।

**सूरज हमारा हो,
समंदर भी हमारा हो,
सूरज हमारा हो,
समंदर भी हमारा हो,
नाव हमारी हो,
नाव हमारी हो,
नाविक भी हमारा हो,
लहरों पर विजय लिखें,
लहरों पर विजय लिखें,
वो हौसला हमारा हो।**

आज भारत का युवा इसी हौसले के साथ आगे बढ़ रहा है। अब आप सभी की भारत सरकार में रहते हुए ये जिम्मेदारी है कि देश के युवाओं की आकांक्षाओं को समझते हुए आप अपने काम को बखूबी निभाएं। मेरा फिर आग्रह होगा, आपका हर निर्णय, हर फाइल पर किया गया सिग्नेचर, युवा Aspirations को आगे बढ़ाने वाला होना चाहिए। आपको अपने कार्यकाल में देखना होगा, युवाओं के रास्ते की बाधाएं हटें, उनके ideas को आगे बढ़ाने का अवसर मिले, innovation से investment बढ़े और investment से employment के नए अवसर बनें।

अब आप स्वयं सरकारी व्यवस्था का

हिस्सा बनने जा रहे हैं। इसलिए आपका प्रयास हो कि जिन परेशानियों से आप गुजरे हैं या जिन परेशानियों से आपके माता-पिता को गुजरना पड़ा है, उनसे दूसरे युवाओं को न गुजरना पड़े। जो तकलीफें आपके मां-बाप ने सही हैं, जो तकलीफें कभी आपको सहनी पड़ी हैं, वो अब हमारे देश के किसी नागरिक को सहनी ना पड़े, ये काम आपको सरकारी व्यवस्था में आते ही करना चाहिए।

आज देश में, हर क्षेत्र में तेजी से परिवर्तन हो रहा है। आप लगातार सीखते हुए, यहां तक पहुंचे हैं, अब यहां से निरंतर सीखते रहने की एक नई यात्रा शुरू हो रही है। आपको लगातार अपनी skills को बेहतर करना है। नई Technology और नए systems को समझना है। मिशन कर्मयोगी इसी उद्देश्य को पूरा करने में आपकी मदद करता है। iGOT Karmayogi Platform पर आज एक करोड़ 70 लाख से अधिक सरकारी कर्मचारी जुड़ चुके हैं। और आप जैसे नए साथियों के लिए कर्मयोगी प्रारंभ को विशेष रूप से तैयार किया गया है। आप जितना खुद को बेहतर बनाएं, उतना ही बेहतर देश के नागरिकों की सेवा कर पाएंगे।

आपको एक और बात हमेशा याद रखनी है। सरकार की असली ताकत देश के नागरिकों का विश्वास होता है। आप किसी भी मंत्रालय में हों, किसी भी विभाग में हों, आपका काम किसी न किसी रूप में देश के सामान्य नागरिक के जीवन को छुएगा। किसी बुजुर्ग की पेंशन आपके काम से आगे बढ़ेगी। किसी विद्यार्थी की स्कॉलरशिप आपकी जिम्मेदारी से जुड़ी होगी। किसी किसान को मिलने वाली सुविधा आपके डिपार्टमेंट में से हो जाती होगी। हो सकता है, किसी नागरिक के लिए आप ही सरकार का चेहरा हो। आपका व्यवहार, आपकी संवेदनशीलता, आपकी efficiency, आपकी ईमानदारी, इन सबसे तय होगा कि उस नागरिक का सरकार के साथ अनुभव कैसा रहता है।

सरकारी सेवा में हमारा मंत्र होना चाहिए- “नागरिक देवो भव, नागरिक देवो भव।” नागरिक की सेवा, राष्ट्र की सेवा है। आपकी सफलता तब और बड़ी होगी, जब आपके काम से किसी नागरिक का जीवन आसान होगा। मुझे विश्वास है, आप जहां भी रहेंगे, जिस भी विभाग में रहेंगे, कर्तव्य और सेवा भाव से अपने दायित्व को निभाते रहेंगे। ■



स्वच्छता - बापू के प्रति सुंदर श्रद्धांजलि

‘मन की बात’ में हम देशवासियों

के सकारात्मक प्रयासों को मंच देते हैं। देश की उपलब्धियों की बात करते हैं। भारत की ऐसी ही एक बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि को एक दिन बाद 10 साल होने जा रहे हैं। ये उपलब्धि है ‘Surgical Strike’ की। दस वर्ष पहले 28-29 सितंबर, 2016 को भारतीय सेना ने पाकिस्तान में आतंकी ठिकानों पर Surgical Strike की थी। LOC के उस पार जाकर हमारे वीर जवानों ने जिस तरह आतंकवाद के खिलाफ कार्रवाई की थी, वो देख दुनिया हैरान थी। Surgical Strike ने डंके की चोट पर पूरी दुनिया के सामने भारत की आतंकवाद विरोधी नीति का एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया था। आतंकवादी हमलों के कारण भारत ने लंबे समय तक, जो दर्द झेला था, ‘Surgical Strike’ उस कष्ट के खिलाफ हमारी निर्णायक प्रतिक्रिया थी। बीते एक दशक में, बालाकोट की Air Strike से लेकर ‘Operation सिंदूर’ तक भारत ने बार-बार ये स्पष्ट संदेश दिया है कि अगर आतंकवादी भारत पर आंख उठावेंगे, तो उसका करारा जवाब दिया जाएगा।

आतंकवादी हमलों ने भारत को लंबे समय तक चोट पहुंचाई है। एक समय था जब भारत में Serial Blast होना बहुत सामान्य बात हो गई थी। सितंबर के इस महीने में यानि 13 सितंबर, 2008 को दिल्ली में हुए Serial Blast में अनेक निर्दोष लोग मारे गए थे। इसके कुछ सप्ताह बाद ही मुंबई में 26/11 का बड़ा हमला हुआ था।

पहले भी हर आतंकी हमले के बाद पाकिस्तान पर कार्रवाई की मांग होती थी, लेकिन, उस पर उतना ध्यान नहीं दिया जाता था। समय बीतने का इंतजार किया जाता था। अब आज का भारत आतंकवाद के खिलाफ Zero-tolerance Policy लेकर चल रहा है, और हम, इसके नतीजे भी देख रहे हैं।

इस साल 9/11 के आतंकी हमले को भी 25 वर्ष हुए हैं। अमेरिका के World Trade Centre में जिन निर्दोष लोगों ने अपना जीवन खोया था, उनमें अमेरिका के बाद सबसे ज्यादा लोग भारत के थे। मुझे याद है, 2014 में PM बनने के बाद जब मैं अमेरिका गया था, तो



New York में, मैं इन निर्दोष नागरिकों को अपनी श्रद्धांजलि देने पहुंच गया था। और आज फिर एक बार मैं भारत के करोड़ों नागरिकों की ओर से पीड़ित परिवारों के प्रति अपनी संवेदना व्यक्त करता हूं।

इन दिनों देश की एक बहुत बड़ी तस्वीर तैयार हो रही है। इस तस्वीर में आप भी हैं, आपका परिवार भी है, आपके अड़ोस-पड़ोस के लोग भी हैं। मैं बात कर रहा हूं, भारत की जनगणना की। देश के सभी राज्यों और केंद्र-शासित प्रदेशों में इसका पहला चरण लगभग पूरा हो चुका है। 32 करोड़ से अधिक परिवारों की जानकारी दर्ज की जा चुकी है। इन दिनों लद्दाख, हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर और उत्तराखंड के दुर्गम और बर्फीले इलाकों में भी ये काम चल रहा है। वहां से कई प्रेरक अनुभव हमारे सामने आए हैं। उत्तराखंड में जनगणना की शुरुआत चमोली के माणा गाँव से हुई। माणा को देश का पहला गाँव कहा जाता है। माणा में सबसे पहले 83 साल की पूर्णिमा रावत जी से इसकी शुरुआत हुई। उत्तरकाशी के बगोरी गाँव में Homestay चलाने वाले हरदेव सिंह राणा जी ने Digital माध्यम से अपनी जानकारी स्वयं दर्ज की।

जनगणना हम सबका राष्ट्रीय दायित्व है। मैंने 15 अगस्त को भी देशवासियों से आग्रह किया था कि इसके लिए अपना समय जरूर निकालें। जनगणना के लिए अपनी जानकारी स्वयं दर्ज करने की ये सुविधा बहुत आसान है। आप अपने Mobile से ही अपनी और अपने परिवार की जानकारी दर्ज करा सकते हैं। ये सुविधा हिन्दी

सहित 16 भाषाओं में उपलब्ध है। इसके लिए आपको जनगणना के Online Portal पर जाना होता है। ये Portal है se.census.gov.in इस Portal पर जाकर आप अपने Mobile Number से Login कीजिए, अपना स्थान दर्ज कीजिए, अपने परिवार से जुड़ी जानकारी भरिए, और उसे Submit कर दीजिए। इस पूरी प्रक्रिया में करीब 15 से 20 मिनट का समय लगता है। इसके लिए आपको कोई Document भी Upload नहीं करना है। जानकारी Submit करने के बाद आपको एक विशेष ID मिलेगी। जब गणनाकर्मी आपके घर आएंगे, तो आप उन्हें ये ID बता सकते हैं। आपके द्वारा दी गई जानकारी की पुष्टि होने के बाद वो जनगणना का हिस्सा बन जाएगी।

अब तक Mobile से 2 करोड़ 60 लाख से ज्यादा लोग जनगणना पोर्टल पर अपनी जानकारी भर चुके हैं, स्व-गणना कर चुके हैं। आपका भी इसमें थोड़ा सा समय खर्च होगा, लेकिन देश के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि आपकी सही जानकारी, आपके परिवार की सही जानकारी, देश के भविष्य की सही तस्वीर तैयार करने में मदद करती है।

27 सितंबर की तारीख एक विशेष कारण से और भी विशेष हो गयी है। 27 सितंबर एक ऐसे महानुभाव की 100वीं जन्मजयंती है जिन्होंने संस्कृति, समाज और राष्ट्र के लिए अपना पूरा जीवन समर्पित कर दिया था। मैं बात कर रहा हूँ, ‘विश्व हिन्दू परिषद’ के पूर्व अंतरराष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष श्रद्धेय स्वर्गीय अशोक सिंहल जी की। 27 सितंबर 1926



के दिन आगरा में उनका जन्म हुआ था। उन्होंने समाज में रहकर तपस्वियों जैसा जीवन जिया। उन्होंने रामजन्मभूमि आंदोलन को जो दिशा दी, जो ऊर्जा दी, आज उसी का परिणाम है कि हम अयोध्या में भव्य मंदिर को साक्षात् देख रहे हैं। मेरा तो बहुत बड़ा सौभाग्य रहा है। मैंने, न केवल उनके उस जीवन को करीब से देखा, बल्कि, मुझे उनके साथ इस मिशन से जुड़ने का भी अवसर मिला। जब मैं राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के अनुष्ठान में शामिल हो रहा था तब भी मुझे बार-बार अशोक जी की याद आना बहुत स्वाभाविक था।

अशोक जी के बारे में ऐसी कितनी ही बातें हैं, जिनकी उतनी चर्चा नहीं होती। राम मंदिर आंदोलन के साथ ही उन्होंने सामाजिक भेदभाव और विषमता के खिलाफ भी एक बड़ी लड़ाई लड़ी थी। उनका जन्म एक बेहद समृद्ध परिवार में हुआ था। उनके पिता एक सिविल सेवा अधिकारी थे। उनके भाई-बहनों में भी अधिकांश लोग बड़े-बड़े पदों पर रहे। वे

को अमरता का आशीर्वाद दे रहा है। इसीलिए हमने पूरे गर्व के साथ इस साल 'सोमनाथ स्वाभिमान पर्व' मनाया।

ये चर्चा मैं 'मन की बात' में फिर से क्यों कर रहा हूँ - इसकी भी एक खास वजह है। 1026 ईसवी में जब गजनी द्वारा सोमनाथ विध्वंस हुआ था। उसी साल गुजरात के ही मोढेरा में प्रसिद्ध सूर्य मंदिर पर भी हमला हुआ था, उसे तोड़ा गया था। यानि मोढेरा मंदिर विध्वंस को भी इस साल एक हजार साल हुए हैं, जबकि उस समय, इस मंदिर को बने सिर्फ एक ही साल हुआ था। 1025 में इस मंदिर का निर्माण राजा भीमदेव ने कराया था।

आप उस कालखंड के बारे में सोचिए जब इतना बड़ा आक्रमण हुआ हो, सोमनाथ मंदिर जैसा आस्था का इतना बड़ा केंद्र खंडित किया गया हो और कई जगहों पर भी हमले हुए हों तो किसी भी समाज या शासन का मनोबल टूट सकता था। लेकिन, राजा भीमदेव प्रथम ने न केवल गजनी का मुकाबला किया था

और उसने देश के सामने sustainability का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। मोढेरा में पर्यटकों के लिए कई आकर्षण और सुविधाओं की शुरुआत भी हुई है। जनवरी में मकर संक्रांति के बाद वहां मोढेरा नृत्य महोत्सव का आयोजन भी होता है। इसमें भारत के सांस्कृतिक और शास्त्रीय नृत्यों की अद्भुत प्रस्तुति होती है। मैं चाहूंगा, आप सब भी एक बार मोढेरा अवश्य जाएं और भारत की इस गौरवशाली विरासत के दर्शन करें।

अतीत से हमारा जुड़ाव आज भी बहुत जीवंत है। इसके पीछे उन लोगों का समर्पण और परिश्रम है, जो इसे और गहरा बना रहे हैं। तमिलनाडु में तिरुचिरापल्ली के मनप्पारई में ऐसा ही एक अनूठा प्रयास हो रहा है। एक college में Department of Tamil Studies से जुड़े ए. सेल्वाराजु जी इसे आगे बढ़ा रहे हैं। एक lecture के दौरान उन्हें अपने एक student से कुछ प्राचीन प्रतिमाओं की जानकारी मिली थी। इस विषय पर चर्चा के बाद उन्होंने field visit का plan बनाया। इस visit के दौरान उन्हें अलग-अलग जगहों पर कई प्रतिमाएं मिलीं और प्राचीन मंदिर मिले। अतीत से जुड़ने का यह एक रोचक प्रयास है। इस प्रकार हम अपनी विरासत को और बेहतर तरीके से जान सकते हैं। देश के दूसरे हिस्सों में भी ऐसे प्रयास किए जा सकते हैं। ये हमें अपने इतिहास को करीब से देखने और समझने का अवसर देते हैं।

कुछ ही दिनों बाद 2 October है - पूज्य बापू की जयंती का दिन। बापू ने हमें जीवन के बहुत से मंत्र दिए हैं। स्वच्छता भी उनमें से एक है। हम अक्सर अपने आसपास स्वच्छता से जुड़े अनेक प्रयासों को देखते हैं। ये प्रयास बहुत प्रेरक और उत्साह बढ़ाने वाले हैं। Social Media पर भी ऐसी तस्वीरें, ऐसे वीडियो, ऐसी reels बार-बार हमारा ध्यान खींचती हैं। हाल के दिनों में मैंने ऐसे कई प्रयास देखे हैं। कहीं मध्य प्रदेश में कुछ नौजवान नदी की सफाई का काम कर रहे हैं। उनके छोटे से प्रयास में पूरा समाज जुड़ रहा है। ऐसे ही, आंध्र प्रदेश में, युवा, पुरानी बावड़ियों और कुओं की सफाई कर रहे हैं। इससे हमारी पुरानी धरोहरों, उसे फिर से सँवारने का काम हो रहा है। मुंबई में कुछ युवा समुद्र तटों को साफ रखने की पहल कर रहे हैं। हर हफ्ते किसी-न-किसी beach पर सैकड़ों युवा-साथी इकट्ठा हो रहे हैं, स्वच्छता से सेवा कर रहे हैं। यहां दिल्ली में बच्चे और



खुद भी IIT BHU से ग्रेजुएट थे। लेकिन, इस सबके बावजूद उन्होंने समाज और संस्कृति के लिए अपना जीवन समर्पित किया यही महान लोगों की पहचान होती है। उनकी जन्म शताब्दी के अवसर पर उनके करोड़ों प्रशंसकों की ओर से उन्हें नमन करता हूँ। मेरी तरफ से भावपूर्ण श्रद्धांजलि देता हूँ।

इस साल की शुरुआत हमने स्वाभिमान के एक महापर्व के साथ की थी। ये पर्व था "सोमनाथ स्वाभिमान पर्व"।

एक हजार साल पहले, 1026 में मोहम्मद गजनी ने पहली बार सोमनाथ मंदिर को विध्वंस किया था। लेकिन, जो लोग सोमनाथ को तोड़कर भारत की पहचान मिटाने आए थे, आज, उनका कोई वजूद भी नहीं है, और सोमनाथ मंदिर, पूरी भव्यता के साथ विशाल समुद्र के किनारे भारत

बल्कि, कुछ ही समय में मोढेरा सूर्यमंदिर का पुनर्निर्माण भी करवा दिया। इसी जीवन्तता के कारण सोमनाथ मंदिर का भी बार-बार विध्वंस के बावजूद पुनर्निर्माण होता रहा।

मोढेरा सूर्य मंदिर पर भी बाद के कालखंड में हमले रुके नहीं। बाद में अलाउद्दीन खिलजी ने एक बार फिर वास्तुकला के इस भव्य मंदिर को तोड़ दिया था, लेकिन, हम भारत के लोग सूर्य की उपासना केवल वास्तु और मंदिरों के जरिए ही नहीं करते, हमारी सूर्य उपासना, उसका एक अर्थ ये भी होता है प्रकाश, ऊर्जा, विज्ञान और निरंतरता की प्रेरणा। इसीलिए, मोढेरा भी आज ना केवल सूर्य मंदिर के लिए जाना जाता है, बल्कि गुजरात का ये गांव देश का प्रथम सूर्य ग्राम, solar village विलेज बन चुका है, मोढेरा आज पूरी तरह सौर ऊर्जा से चलता है,



युवा, लोगों को कचरा अलग-अलग रखने और अपने आसपास सफाई रखने के लिए जागरूक कर रहे हैं। पश्चिम बंगाल में युवा छात्रों और स्थानीय लोगों के साथ मिलकर picnic स्थलों पर बाजारों की सफाई कर रहे हैं।

इन सभी प्रयासों में एक बात बहुत सहजता से दिखाई देती है। कहीं शुरुआत एक व्यक्ति ने की, फिर उसके साथ कुछ और लोग आ गए, कारवां बढ़ता गया-यही तो जनभागीदारी है। बापू के प्रति हमारी सबसे सुंदर श्रद्धांजलि भी स्वच्छता ही है।

हम पर्यावरण की रक्षा करते हैं, तो हम केवल पेड़-पौधों या जीव-जंतुओं को ही नहीं बचाते, हम उस पूरी जीवन-व्यवस्था को मजबूत करते हैं। देश के अलग-अलग हिस्सों में हो रहे कुछ प्रयास इस भावना को बहुत सुंदर तरीके से सामने ला रहे हैं।

असम में सोनाई रुपाई Wildlife Sanctuary है। एक समय था जब यहां हाथियों का बसेरा हुआ करता था, लेकिन, धीरे-धीरे जंगल की जमीन पर इंसानी दखल बढ़ता गया, जिससे, हाथियों ने इस इलाके से दूरी बना ली। तीन साल पहले इस जमीन को अतिक्रमण से मुक्त कराया गया, और अब, इसके अद्भुत परिणाम सामने आए हैं। हाथी यहाँ फिर लौट आए हैं। जिस इलाके में बरसों से उनकी चहल-पहल नहीं थी, आज वहाँ फिर हाथियों के झुंड दिखाई दे रहे हैं।

असम में ही एक और सुंदर प्रयास हुआ है। ये प्रयास एक बहुत छोटे से जीव, Pygmy Hog को बचाने का है। एक समय इसके अस्तित्व पर संकट मंडराने लगा था, तब, केवल 6 Pygmy Hog के साथ एक Conservation Program शुरू किया गया, उन्हें, फिर, जंगलों में बसाया गया। उनके रहने के लिए Grasslands को भी संवारा गया। आज इस Program की वजह से Pygmy Hog की संख्या 190 से ज्यादा हो चुकी है।

प्रकृति के साथ हमारा रिश्ता सिर्फ उसे सहेजने तक सीमित नहीं है। कई बार हम प्रकृति को संभालते हैं, तो वही प्रकृति, हमारे जीवन का सहारा बन जाती है। पश्चिम बंगाल के सुंदरबन में कुछ महिलाएं इसी रिश्ते की प्रेरक मिसाल पेश कर रही हैं। झारखाली की ये महिलाएं Mangrove के जंगल तैयार कर रही हैं। इनमें से ज्यादातर वो महिलाएं हैं, जिनके पति की टाइगर Attack में जान चली गई थी।



पति को खोने के बाद उन्हें सुंदरबन से ही आजीविका का सहारा मिला। उनके द्वारा लगाए गए Mangrove आज गाँवों के लिए एक प्राकृतिक सुरक्षा-कवच बन रहे हैं, और इन्हें लगाकर, इन महिलाओं की कमाई भी हो रही है। हम पर्यावरण को सहेजें, प्रकृति के संतुलन का सम्मान करें, और उसकी विविधता को सुरक्षित रखें। हमारा हर ऐसा प्रयास भविष्य की पीढ़ियों के प्रति हमारी जिम्मेदारी है।

हाल ही में देश के लाखों युवाओं ने नशे के विरुद्ध, drugs के खिलाफ, एक बहुत महत्वपूर्ण संकल्प लिया है। युवाओं ने खुद भी नशे से दूर रहने की प्रतिज्ञा ली है, और इस संदेश को दूसरों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी भी ली है-ये सब हो रहा है 'नशा मुक्त युवा अभियान' के तहत। ये अभियान 100 सप्ताह तक चलेगा। इसमें MY Bharat के Volunteers शामिल हैं। NSS से जुड़े हमारे युवा भी इसका हिस्सा हैं, School-College और विश्वविद्यालय भी साथ आए हैं, और अनेक सामाजिक और आध्यात्मिक संस्थाएं भी इससे जुड़ी हैं। पिछले कुछ दिनों में ही देशभर में हजारों संकल्प समारोह और जागरूकता के कार्यक्रम हुए हैं।

इस अभियान में एक बात मुझे विशेष रूप से अच्छी लगी 'नशा मुक्ति का संदेश'। हमारे युवा खुद अपनी भाषा में, अपने तरीके से इस संदेश को आगे बढ़ा रहे हैं। मैंने 'मन की बात' में भी युवा साथियों से आग्रह किया था कि वे अपनी Creativity के माध्यम से इस अभियान से जुड़ें, और मुझे खुशी है कि हजारों युवा इस आवाहन पर आगे आए हैं। MY Bharat पर Anthem, Slogan Writing और नुक्कड़ नाटक जैसी अलग-

अलग प्रतियोगिताएँ हुई हैं। इसी तरह, Social Media पर हमारे युवा '# नशा मुक्त युवा' के साथ अपना Creative Content साझा कर रहे हैं, यानि, संदेश भी युवाओं का है, माध्यम भी युवाओं का है और इसे आगे ले जाने की ऊर्जा भी युवाओं की ही है। आने वाले दिनों में इस अभियान के तहत Health Check-Up और ध्यान शिविर जैसी गतिविधियाँ भी होंगी।

जल्द ही, हमारे अनेक पर्व और त्योहार भी आने वाले हैं। इस बार त्योहारों की खुशियों के बीच हम अपने आसपास भी नजर डालें। अगर कोई युवा किसी गलत आदत की ओर बढ़ रहा है, तो उससे बात करें। अगर कोई नशे से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा है, तो उसका साथ दें। नशा मुक्त युवा विकसित भारत के इस संकल्प को हम सब मिलकर आगे बढ़ाएं।

लाल किले से मैंने इस बार sports के लिए talent hunt अभियान का ऐलान किया है। भारत लगातार बेहतरीन प्रदर्शन करता रहे, इसके लिए गाँव और कस्बों तक पहुँचकर sporting talent को खोजना जरूरी है। वहीं, कई ऐसे लोग भी हैं, जिन्होंने इसी काम के लिए खुद को समर्पित कर दिया है। उनका एक ही passion होता है talent को खोजना और उन्हें तराशना। हमारे पंजाब में यही काम राजिंदर सिंह जी कर रहे हैं। राजिंदर सिंह जी ऐसे एक व्यक्ति हैं जिनके नाम में Senior भी जुड़ा हुआ है। वे 1980 के Olympic में hockey में Gold Medal जीतने वाली team का हिस्सा थे। 1982 के World Cup में छाप रहे थे। 2001 में भारत ने पहली बार Men's Junior World Cup का खिताब जीता था। वहीं, 2003 में देश ने Senior Asia Cup title पर कब्जा किया था। इन दोनों ही

tournament में वे coach की भूमिका में थे। अब वे Round Glass Hockey Academy के जरिए अपने passion को आगे ले जा रहे हैं। उनके प्रयासों से गाँवों में नई hockey astro-turf बिछाई जा रही है। राजिंदर जी का focus एकदम clear है। ऐसे गाँवों में बच्चों की पहचान करना, जहाँ बेहतरीन coaching की सुविधाएं कम हैं। ऐसे प्रयासों से कई खिलाड़ी भारत के junior और senior level पर अपनी जगह बना रहे हैं। राजिंदर सिंह जी के इस समर्पण की जितनी भी सराहना की जाए वो कम है।

आंवला हम सभी के लिए बहुत जाना-पहचाना है। ज्यादातर घरों में इससे बने आचार और मुख्बे का प्रयोग होता है। बहुत से लोग आंवले का juice पसंद करते हैं और सर्दियों में च्यवनप्राश हमारी दिनचर्या का अहम हिस्सा बन जाता है। हमारे बड़े-बुजुर्ग तो पीढ़ियों से आंवले के गुणों के बारे में बताते आए हैं।

यही आंवला आज उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में नई संभावनाओं का माध्यम बन रहा है। प्रतापगढ़ और आंवले का रिश्ता बहुत पुराना है। पीढ़ियों से यहां के किसान आंवले की खेती कर रहे हैं। आंवले ने प्रतापगढ़ को एक मजबूत पहचान दी है और अब यही पुरानी पहचान यहां के किसानों और महिलाओं के लिए नए अवसर लेकर आ रही है। One District One Product यानी ODOP के माध्यम से यहां आंवले से जुड़े स्थानीय उद्यमों को बढ़ावा मिला है। आज प्रतापगढ़ में आंवला processing से जुड़ी करीब 100 unit काम कर रही हैं, और इसमें self help groups से जुड़ी महिलाएं भी बड़ी भूमिका निभा रही हैं। ऐसा ही एक समूह है - देवगढ़ कमासी गांव का। सावित्री फुले self help group इससे जुड़ी महिलाएं आंवले से candy, मुख्बा और juice बना रही हैं। ODOP के तहत नए बाजारों तक पहुँच बढ़ने से उनकी आय में भी बढ़ोत्तरी हुई है। इसी तरह एक गांव में विन्ध्यवासिनी Self Help Group है। इस group की महिलाएं आंवले का आचार, digestive powder ऐसी कई चीजें तैयार कर रही हैं। इन महिलाओं को processing के लिए machinery मिली, loan की सुविधा मिली। स्थानीय व्यापार मेले से जुड़ने का अवसर भी मिला और देखते-ही-देखते उनकी आय काफी बढ़ गई।

हमारे देश के हर क्षेत्र में ऐसी कोई-ना-कोई

विशेषता जरूर है। कहीं कोई खास फल है, कहीं कोई पारंपरिक कला है, तो कहीं कोई अनोखा हुनर है। One District One Product इन्हीं विशेषताओं को आगे बढ़ाने का अभियान है। हमारा प्रयास यही होना चाहिए कि हमारे गाँव और छोटे शहरों की ये पहचान सिर्फ स्थानीय बाजार तक सीमित ना रहे। वे देश और दूसरे हिस्सों तक पहुँचे और दुनिया के बाजारों तक भी बल मिलता है। ये देश को आत्मनिर्भर बनाने की भी प्रेरणा देता है। आने वाले त्योहारों में भी हमें Vocal for Local वाले मंत्र को तो कभी भी भूलना नहीं है।

सितंबर का ये महीना कुपोषण से लड़ाई को समर्पित है। पोषण माह में अलग-अलग क्षेत्रों से जुड़े लोग और संस्थाएँ इस नेक कार्य के लिए एक साथ आती हैं। कुपोषण से मुकाबला करने के लिए इस साल कई सराहनीय पहल की गई हैं। छत्तीसगढ़ ने 'हर घर मुनगा-घर-घर मुनगा' यह अभियान शुरू किया है। इसमें लोगों को पौष्टिक मुनगा यानि मोरिंगा को अपने खान-पान में शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। गुजरात ने भी वांगी स्पर्धा यानि millets से बने व्यंजनों का competition शुरू किया है। इस पहल के जरिए सस्ते और पौष्टिक स्थानीय खान-पान को बढ़ावा दिया जा रहा है। अब तक दो लाख से ज्यादा लोग इस प्रतियोगिता में हिस्सा ले चुके हैं। महाराष्ट्र भी इस दिशा में सराहनीय प्रयास कर रहा है। वहाँ teachers, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता और बच्चों के माता-पिता जागरूकता अभियान से जुड़ रहे हैं। मिजोरम में भी, इस साल लोगों ने साथ मिलकर पोषण वाटिकाओं की देखभाल के लिए एक अभियान शुरू किया है। यह मिजो समाज के 'तलो-मड़-यना' की परंपरा के अनुरूप है। इसका अर्थ है 'निस्वार्थ सेवा और दूसरों की मदद में हमेशा आगे रहना'। ऐसे प्रयास बेहद सराहनीय हैं। मुझे आंगनवाड़ी केंद्रों से जुड़े उन सभी लोगों पर भी गर्व है जो इस तरह की पहल का हिस्सा रहे हैं। ये आंगनवाड़ी केंद्र अब 'पोषण tracker' से digitally जुड़ गए हैं। करीब 9 करोड़ लाभार्थी इसमें registered हो चुके हैं। इससे बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं की बेहतर देखभाल संभव हुई है। हमें कुपोषण के खिलाफ इस लड़ाई को इसी तरह आगे लेकर जाना है। हमें हमारे समाज को कुपोषण से पूरी तरह मुक्त करना है।

हम सबने इस महीने पूरी श्रद्धा और उत्साह के साथ गणेश उत्सव मनाया है। देशभर में पूरे भक्तिभाव से गणपति बप्पा का स्वागत किया गया। यह पावन अवसर पूरे वातावरण को उमंग और उल्लास से भर देता है।

विघ्नहर्ता भगवान श्री गणेश ज्ञान, बुद्धि और शुभ कार्यों के आरंभ के प्रतीक हैं। उनके प्रति अगाध श्रद्धा सिर्फ भारत में ही नहीं है, जैसे, श्रीमान पंथोन थीरखानोन जी, उन्हीं की बात ले लीजिए, वे वैसे तो Thailand के हैं। यहाँ भगवान श्री गणेश की पूजा 'फ्राफिकानेत' के रूप में की जाती है। और जब वे 19 वर्ष के थे, तब उनके पिता ने उन्हें भगवान श्री गणेश की एक फोटो भेंट की थी। यहीं से उनमें अद्भुत भक्ति जागृत हुई। वे भगवान श्री गणेश से जुड़ी परंपराओं के अध्ययन में चार दशक से भी अधिक समय बिता चुके हैं। उन्होंने भारत और नेपाल सहित एशिया के कई देशों की यात्रा की है। महाराष्ट्र से उनका विशेष लगाव रहा है। अष्टविनायक परंपरा के बारे में जानने के बाद वे कई बार यहाँ आ चुके हैं। उनके प्रयासों से Thailand के श्रद्धालुओं के बीच भी अष्टविनायक यात्रा लोकप्रिय हो चुकी है। वर्ष 2002 में उन्होंने उत्तरी Thailand के चियांग माई में गणेश हिमाल म्यूजियम की स्थापना की। आज इसमें 10 हजार से अधिक गणेश प्रतिमाएँ हैं। म्यूजियम में उन भक्तों के लिए अष्टविनायक की प्रतिमाएँ भी मौजूद हैं, जो भारत नहीं आ सकते। यहाँ हर रविवार सुबह करीब 10 बजे गणेश जी की पूजा-अर्चना की जाती है। गणपति से जुड़े विशेष अवसरों पर भी अनुष्ठान होते हैं। यह बताता है कि भारत की आस्था, कला और सांस्कृतिक परम्पराएँ दूसरे देशों में भी कैसे लोकप्रिय हो रही हैं। मेरी कामना है, गणपति बप्पा का आशीर्वाद सभी पर हमेशा बना रहे।

'मन की बात' के हर episode के बाद मुझे अनेक विषयों पर आपके संदेश मिलते रहते हैं। आप इसी तरह, प्रेरणा से भरी गाथाएँ भेजते रहिए। जब आप अपने आस-पास हो रहे ऐसे प्रयासों की सराहना करते हैं, तो उनका उत्साह और बढ़ जाता है। 'मन की बात' के माध्यम से उनके मन में बारीक जान कर देश के दूसरे हिस्सों के लोग भी प्रेरित होते हैं। ये यात्रा इसी तरह आपके सहयोग से निरंतर आगे बढ़ती रहे। आने वाले त्योहारों को, आप, अपने परिजनों और दोस्तों के साथ पूरे आनंद और उल्लास से मनाएं। ■



जनप्रयासों को मिला राष्ट्रीय मंच - डॉ. मोहन यादव

- 'मन की बात' जनभागीदारी और राष्ट्र निर्माण को नई ऊर्जा देने वाला सशक्त माध्यम।
- यह कार्यक्रम सेवा, सहभागिता और संकल्प की भावना को नई ऊर्जा देता है।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'मन की बात' के माध्यम से स्वच्छता के प्रति जनभागीदारी के उल्लेखनीय प्रयासों का उल्लेख करते हुए मध्यप्रदेश के युवाओं द्वारा नदी स्वच्छता के लिए किए जा रहे प्रयासों को विशेष रूप से साझा किया। प्रधानमंत्री जी ने नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, पोषण, खेल प्रतिभाओं को अवसर देने तथा सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी प्रेरणादायी विचार



साझा किए। 'मन की बात' देश के कोने-कोने में हो रहे जनप्रयासों और सकारात्मक बदलावों को राष्ट्रीय मंच प्रदान करने का सशक्त माध्यम है।

यह कार्यक्रम सेवा, सहभागिता और संकल्प की भावना को नई ऊर्जा देता है तथा नागरिकों को राष्ट्र निर्माण के लिए प्रेरित करता है। ■

युवा पीढ़ी में जागरूकता बढ़ी - हेमंत खण्डेलवाल

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी 'मन की बात' के माध्यम से देश के अलग-अलग हिस्सों में नागरिकों द्वारा किए जा रहे उल्लेखनीय कार्यों और छोटे-छोटे जनप्रयासों को देश के सामने रखते हैं। इससे समाज के अन्य लोगों को भी प्रेरणा मिलती है और सकारात्मक कार्यों को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है। प्रधानमंत्री जी ने कार्यक्रम में स्वच्छता, नशामुक्ति, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य, रोजगार, पोषण और भारतीय संस्कृति एवं सांस्कृतिक विरासत से जुड़े विषयों पर चर्चा की। प्रधानमंत्री जी ने गणेश उत्सव और अनंत चतुर्दशी के संदर्भ में भारतीय संस्कृति के वैश्विक प्रभाव का भी उल्लेख किया। दुनिया के विभिन्न देशों में भगवान गणेश के प्रति आस्था और सम्मान भारतीय संस्कृति की व्यापक स्वीकार्यता



को दर्शाता है। 'मन की बात' के माध्यम से प्रधानमंत्री जी देश की युवा पीढ़ी को अपनी विरासत से जोड़ने के साथ-साथ वर्तमान चुनौतियों और भविष्य की दिशा के प्रति भी जागरूक करते हैं। देश के दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों के छोटे-छोटे प्रयासों को राष्ट्रीय मंच प्रदान कर प्रधानमंत्री जी उन्हें देश

के सामने लाते हैं। प्रधानमंत्री जी के 'मन की बात' कार्यक्रम ने देश के विभिन्न हिस्सों में हो रहे जनकल्याण और जनभागीदारी के कार्यों को एक राष्ट्रीय मंच प्रदान किया है। यह कार्यक्रम नागरिकों को सेवा, सहभागिता और राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए निरंतर प्रेरित कर रहा है। ■



त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति

राजमाता विजया राजे सिंधिया



राजमाता विजया राजे सिंधिया का जन्म 12 अक्टूबर, 1919 में सागर, मध्य प्रदेश के राणा परिवार में हुआ था। श्रीमती विजया राजे सिंधिया के पिता श्री महेन्द्रसिंह ठाकुर जालौन जिला के डिप्टी कलेक्टर थे और उनकी माता श्रीमती विंदेश्वरी देवी थीं। श्रीमती विजया राजे सिंधिया का विवाह के पूर्व का नाम लेखा दिव्येश्वरी था। राजमाता सिंधिया के पुत्र श्री माधवराव सिंधिया, पुत्री श्रीमती वसुंधरा राजे सिंधिया और श्रीमती यशोधरा राजे सिंधिया हैं।

श्रीमती विजया राजे सिंधिया को ग्वालियर की राजमाता के रूप में जाना जाता था। भारत के विशालतम और संपन्नतम राजे-रजवाड़ों में से ग्वालियर एक था। उस रियासत के महाराजा के साथ उनका विवाह हुआ था। 1957 में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस से चुनाव लड़ा और वे विजयी हुईं। अपने पति के स्वर्गवास के बाद सन् 1962 में कांग्रेस के टिकट पर वे संसद सदस्य बनीं। पांच साल के बाद अपने सैद्धान्तिक मूल्यों के कारण वे कांग्रेस छोड़कर जनसंघ में शामिल हो गईं। एक राज परिवार से रहते हुए भी वे अपनी ईमानदारी, सादगी और प्रतिबद्धता के कारण पार्टी में सर्वप्रिय बन गईं। शीघ्र ही वे पार्टी में शक्ति स्तंभ के रूप में सामने आईं।

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख

राजमाता विजया राजे सिंधिया भारतीय जनता पार्टी के संस्थापकों में से एक थीं। राजमाता ने जनसंघ और भाजपा के कई प्रमुख नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया।

नेताओं जैसे- श्री अटल बिहारी वाजपेयी और श्री लालकृष्ण आडवाणी के साथ काम किया। यही नहीं, मध्य प्रदेश की राजनीति में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है।

1967 में मध्य प्रदेश में सरकार गठन में उन्होंने बेहद महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। हालांकि, श्रीमती विजया राजे सिंधिया का सार्वजनिक जीवन प्रभावशाली और आकर्षक था, लेकिन उन्होंने अपने व्यक्तिगत जीवन में मुश्किलों का सामना किया। सन् 1989 के आम चुनाव में राजमाता विजया राजे सिंधिया ने एक बार फिर गुना से भाजपा प्रत्याशी के रूप में जीत दर्ज की। इससे पहले 22 साल पूर्व सन् 1967 में राजमाता यहां से जीती थीं। 1991 के चुनाव में श्रीमती विजया राजे सिंधिया ने कांग्रेस प्रत्याशी को पराजित किया। राजमाता सिंधिया सिद्धांतों के प्रति समर्पित सांस्कृतिक राष्ट्रवाद से ओतप्रोत विदुषी जननायक थीं। उन्होंने महलों के वैभव को छोड़कर जनता के न्याय के लिए संघर्ष का मार्ग स्वीकार किया और सड़कों पर उतरकर राजमाता से लोकमाता बन गईं। उन्होंने समर्पित

जीवन जिया। सेवा की उनमें ललक थी। सादगी और सरलता उनका स्वभाव था। राजमाता का मानना था की अपनों की जड़ खोदकर कभी कोई दूसरों का चेहेता नहीं बना है। राजमाता सिंधिया लंबे समय तक महिलाओं से जुड़ी रहीं और उन्हें सदैव प्रेरित करती थीं।

वे हमेशा सेवा के लिए समर्पित रहीं। उन्हें पद और सत्ता ने कभी आकर्षित नहीं किया। उन्होंने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के लिए खुद को पूरी तरह समर्पित कर दिया। राजमाता त्याग एवं समर्पण की प्रतिमूर्ति थीं। राजमाता विजया राजे सिंधिया ने लोगों के दिलों पर बरसों राज किया।

सत्ता के शिखर पर रहने के बाद भी उन्होंने जनसेवा से कभी अपना मुख नहीं मोड़ा। राजमाता का सपना था कि जब देश में कमल खिलेगा तभी अंतिम सांस लेंगी। यह स्वप्न पूरा भी हुआ और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में केंद्र में सरकार बनी। सन् 1998 से राजमाता का स्वास्थ्य खराब रहने लगा और 25 जनवरी, 2001 में राजमाता विजया राजे सिंधिया का स्वर्गवास हो गया। ■



संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है



प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया।

इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एक सूत्र में बांधने की जो शत संस्कृति में है, वह शत समाप्त हो जाती है।



पं. दीनदयाल उपाध्याय

आम लोगों ने संघ कार्य के अनेक रूपों का विचार किया होगा। एक प्रश्न हमारे सामने यह भी आता है कि समय-समय

पर हम कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक अधिष्ठान पर खड़ा है। इस दृष्टि से यह जिज्ञासा होना स्वाभाविक ही है कि वह संस्कृति क्या है? संघ की प्रतिज्ञा में भी हम ऐसा कहते हैं, 'हिंदू धर्म, हिंदू संस्कृति की रक्षा कर हिंदू समाज की सर्वांगीण उन्नति करने के लिए हम संघ के घटक बने हैं।' बिना संस्कृति संरक्षण के राष्ट्र की उन्नति नहीं हो सकती, यह भी हम स्वीकारते हैं। आखिर संस्कृति है क्या? हम यह भी देखते

हैं कि संस्कृति के नाम पर आज देश में बहुत से कार्य प्रारंभ हो गए हैं। हर कहीं हम Cultural progress का नाम सुनते हैं। हमारे कलाकार सांस्कृतिक शिष्टमंडलों के रूप में विदेश जाते हैं, अन्य देशों से हम संस्कृति का संबंध जोड़ते हैं आदि। कहने का तात्पर्य यह कि हम नाच-गान को ही संस्कृति मान बैठते हैं।

भारत के विचारकों के समक्ष यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या गाना, नाचना, नाटक खेलना मात्र ही संस्कृति है। यदि यही संस्कृति की परिभाषा है तो इसका प्रचार हमारे पूर्वज ऋषियों, विद्वानों, स्वामी विवेकानंद जैसे लोगों द्वारा न होकर फिल्म अभिनेता तथा अभिनेत्रियों द्वारा ही होगा।

संस्कृति शब्द को आज गलत अर्थ ही दिया गया है। यह अज्ञानवश हो सकता है और जानबूझकर भी। जानबूझकर इसलिए कि अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए वे संस्कृति शब्द का उपयोग उन लोगों में गलत धारणा पैदा करके अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। जैसे डालडा को घी की संज्ञा देने से यह बात स्पष्ट है। घी शब्द के बारे में लोगों की धारणा अच्छी है। इसलिए डालडा के साथ साफ किया हुआ तेल-ऐसा न जोड़कर घी शब्द जोड़ दिया गया है। कुछ समय उपरांत लोग इस डालडा को ही वास्तविक घी समझकर इसका उपयोग करने में लज्जा महसूस नहीं करेंगे। ठीक यही बात संस्कृति के संबंध में है। संस्कृति के प्रति जिनकी श्रद्धा है, उन्हें गलत रास्ते पर डालने के लिए इस नवीन संस्कृति का प्रचार किया जा रहा है। राष्ट्रीयता के संबंध में भी यही बात हुई। हमें Indian Nationalism की भ्रांत धारणा दी गई और कहा गया कि मुसलमान, ईसाई सभी यहां के राष्ट्रीय हैं। सिक्खों को यह गलत धारणा दी गई कि वे हिंदू नहीं हैं आदि।

आज सांस्कृतिक कार्यक्रमों के बारे में इसी कारण लोगों की कल्पना नाचने-गाने की ही हो गई है। एक व्यक्ति ने पूछा कि आप कहते हैं कि हमारा कार्य सांस्कृतिक है, परंतु हमें तो ऐसा दिखाई नहीं देता, क्योंकि वहां तो नाच-गाना होता नहीं। फिर मैंने व्यंग्य कसते हुए कहा कि जिस प्रकार नाचने-गाने में वे स्वर-ताल का ध्यान रखते हैं, इसी प्रकार संघ के कार्यक्रमों में एक कहने पर बायां पैर और दो कहने पर दायां पैर निकलता है और एक ताल के अनुसार कार्य होता है, इसलिए यह भी सांस्कृतिक हुआ।

संस्कृति के पीछे क्या भाव है, यह समझना कुछ कठिन है। संस्कृति शब्द का प्रयोग वेदों को छोड़कर अन्य प्राचीन वाङ्मय में नहीं हुआ। संस्कृति को धर्म के अंतर्गत ही मान लिया गया था, परंतु आज संस्कृति शब्द का व्यापक प्रचार



होने के कारण लोग इस शब्द को सुनकर चौंकते नहीं। कुछ लोगों ने इसे Culture के अनुवाद के रूप में स्वीकार किया है। यह भी संभावना हो सकती है कि यह शब्द स्वतंत्र रूप से विकसित हुआ हो। संस्कृति से मिलता-जुलता संस्कार शब्द हमारा पूर्व परिचित शब्द है। हमारे यहां सोलह संस्कार होते हैं, संस्कारों से मनुष्य बनता है, बिना संस्कार के वह पशु समान है-ऐसा बराबर सुनने में आता है। साधारणतया हम कह सकते हैं कि जो बाह्य वातावरण है, उसका मनुष्य पर जो परिणाम होता है, उसे हम संस्कार (Impression) कह सकते हैं।

परंतु संस्कार अच्छे और बुरे दोनों हो सकते हैं। किसी को चोरी की आदत लग जाए तो हम कहेंगे, उस पर बुरे संस्कार पड़े हैं। परंतु जब हम संस्कार कहते हैं तो उससे हमारा अभिप्राय अच्छे संस्कार से ही होता है। बुरे संस्कारों के लिए हम कुसंस्कार शब्द का प्रयोग करेंगे। जैसे चरित्रवान कहने से हमारा आशय अच्छे चरित्र वाले व्यक्ति से होता है, जबकि बुरे चरित्र वाले व्यक्ति के लिए हम चरित्रहीन शब्द का प्रयोग करते हैं।

अतः संस्कृति का अर्थ हुआ, अच्छे संस्कारों का परिणाम (प्रभाव)। मलयालम भाषा में हिंदू संस्कृति के लिए हिंदू संस्कार शब्द का प्रयोग होता है। स्वाभाविक प्रश्न उठता है कि किन संस्कारों को हम अच्छा कहेंगे और किनको बुरा। इसकी व्याख्या करना सरल नहीं। पर एक छोटी सी कसौटी तो है। वह यह कि समाज के ध्येय के लिए जो पोषक है, वह अच्छा और जो बाधक है, वह बुरा। जैसे यदि हमारा लक्ष्य दिल्ली जाना है, तो जो रेलगाड़ी या मोटरगाड़ी

उधर ले जाने में सहायक हो, वह अच्छी और जो विपरीत दिशा में ले जाने वाली है, वह बुरी।

परंतु दूसरा प्रश्न उत्पन्न होता है कि ध्येय क्या है? इस संबंध में हम इतना जानते हैं कि हमारी जो एकात्मकता है, एकीकरण है, इसकी अनुभूति ही हमारा ध्येय है। जब सब लोग एकता का अनुभव करें, तभी समाज अथवा राष्ट्र बनता है। यदि हम राष्ट्र के नाते जीवित रहना चाहते हैं तो एकात्मकता की अनुभूति जिससे होगी, वही हमारा ध्येय होगा।

यदि पांव में कांटा चुभ जाए और पता न लगे कि कहां चुभा है तो चिंता होने लगती है। शरीर के कण-कण की जब तक ठीक अनुभूति रहती है, तब तक ठीक है, परंतु जब बेहोशी आदि में शरीर का ज्ञान नहीं रहता, क्रियाओं, चेष्टाओं का ज्ञान नहीं रहता तो वह स्थिति चिंताजनक होती है और सारा शरीर गया, ऐसा लगने लगता है। जैसे लकवे में, हाथ होते हुए भी हाथ की क्रिया रुक जाती है, हाथ की अनुभूति नहीं होती। जब तक शरीर में चेतना है, अंगों का संबंध बराबर बना रहता है।

तभी तक हममें सामर्थ्य है, जीवन है। इसी प्रकार राष्ट्र रूपी शरीर में चेतना बनाए रखना आवश्यक है। अतः जिन कारणों से राष्ट्र में चेतना का निर्माण होता है, वे अच्छे और दूसरे बुरे।

प्रत्येक राष्ट्र में राष्ट्रीयता की भावना जिससे बनी रहे, वही संस्कृति का आधार माना जाता है। संस्कृति राष्ट्र की आत्मा है। आत्मा निकल जाने के पश्चात जैसे सब अंग-प्रत्यंग निश्चेष्ट हो जाते हैं। उसी प्रकार की अवस्था संस्कृति का लोप हो जाने से राष्ट्र की होती है। जैसे

यूनान और मिस्र का प्राचीन राज्य समाप्त हो गया। इसका यह अर्थ तो नहीं कि वहां की भूमि, नदियां, पर्वत, व्यक्ति आदि नष्ट हो गए। ये वस्तुएं तो ज्यों-की-त्यों बनी रहती हैं, परंतु व्यक्ति को एकसूत्र में बांधने की जो शक्ति संस्कृति में है, वह शक्ति समाप्त हो जाती है। लकड़ियों को सूत के धागे से बांधा जा सकता है परंतु व्यक्ति-व्यक्ति को बांधने वाला सूत्र संस्कृति ही है। यह सूत्र वर्तमान प्राणियों के अतिरिक्त हमारा संबंध हमारे पूर्वजों अर्थात् राम, कृष्ण, शिवा, प्रताप, गोविंद सिंह आदि से तथा आगे जन्म लेने वालों से भी जोड़ देता है। इसी के बूते पर राष्ट्र टिक सकता है। अतः राष्ट्र रूप में जीवित रहने के लिए यही संस्कृति प्राप्तव्य है। अतः सिद्ध हुआ कि सारे समाज को आपस में जोड़ने वाला नाता संस्कृति है। जिन कार्यक्रमों से यह नाता जुड़ता है, वह संस्कार तथा जिन कार्यों से यह नाता टूटने लगता है, वे कु-संस्कार।

डाकुओं में जो स्वार्थ के कारण एकता है, क्या उसे भी संस्कृति मानें? उत्तर मिलेगा- 'नहीं।' कुछ देशों की संस्कृति का आधार यद्यपि यह भी है। जैसे अरब में मुसलमानों का संगठन लूट-खसोट के आधार पर ही किया इसी प्रकार इंग्लैंड भी सामूहिक स्वार्थ के नाम पर ही खड़ा हुआ।

परंतु हमने स्वार्थ के आधार पर एकता खड़ी नहीं की। यही हमारी और दूसरों की संस्कृति में अंतर है। जैसे मां से प्रेम करने के भिन्न-भिन्न आधार हो सकते हैं। इसी प्रकार विवाह के भी भिन्न आधार हो सकते हैं। एक यह कि विवाह दो प्राणियों का एकात्मकता के नाते आगे बढ़ना इसलिए है कि घर की देखभाल के लिए पत्नी मिल जाएगी। इसी प्रकार परिवार में हमारे माता-पिता भी शामिल होंगे। परंतु यूरोप में परिवार में मां-बाप नहीं होते।

जीवन में सभी चीजों की ओर देखने की हमारी दृष्टि कुछ भिन्न है। कुछ राष्ट्रों में ईमानदारी को व्यापार के लिए सर्वोत्तम नीति माना जाता है, परंतु हम इसे व्यापार की नीति के रूप में नहीं अपितु जीवन की नीति के रूप में अपनाना चाहते हैं।

प्रत्येक व्यक्ति की अलग-अलग रुचि होती है। यह रुचि भिन्नता मूलतः सब प्राणियों में विद्यमान है। इसी प्रकार राष्ट्रों में भी रुचि भिन्नता है, अपनी-अपनी विशेषता है। सबके आधार भिन्न-भिन्न रहते हैं। इसके कारण हमारे देश में भी कुछ चीजें हमें रंजित करती हैं और कुछ नहीं। हमारी विशेष प्रवृत्ति है, जिसके आधार पर हम संगठन करते हैं। वह प्रवृत्ति स्वार्थ की नहीं, निःस्वार्थ भाव की है।

(राष्ट्र जीवन की दिशा से साभार)



- भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन जी ने इंदौर में “स्वामित्व योजना” के तहत राज्यव्यापी पंजीकरण की शुरुआत की।



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, भाजपा अध्यक्ष श्री नितिन नवीन एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने श्री महाकालेश्वर मंदिर, इतिहार के पृष्ठों से पुस्तक का विमोचन किया।



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रिंगल क्लिक से लाइली बहना योजना की राशि हितग्राही बहनों के खातों में अंतरित की।



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दुबई के मध्यप्रदेश पेवेलियन में निवेशकों से वन-टू-वन चर्चा की।



- प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने गणेश चतुर्थी पर प्रदेश कार्यालय में भगवान श्री गणेश जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा-अर्चना की।



- राष्ट्रीय संगठन महामंत्री श्री बी.एल. संतोष जी से प्रदेश अध्यक्ष श्री हेमंत खण्डेलवाल ने संगठनात्मक विषयों पर चर्चा की।



- मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने दुबई में इंटरैक्टिव सेशन ऑन इन्वेस्ट इन मध्यप्रदेश को संबोधित किया।



- राष्ट्रीय महामंत्री, प्रदेश प्रभारी श्री विप्लव कुमार देव ने भाजपा के वरिष्ठ नेता व पूर्व राज्यपाल प्रो. कप्तान सिंह सोलंकी से भेंट की।



वहां जीवन में विविधता और बहुलता है लेकिन हमने हमेशा
इसके पीछे की एकता को खोजने का प्रयास किया है

पं. दीनदयाल उपाध्याय